

आध्यात्म और हूँम विशेषांक

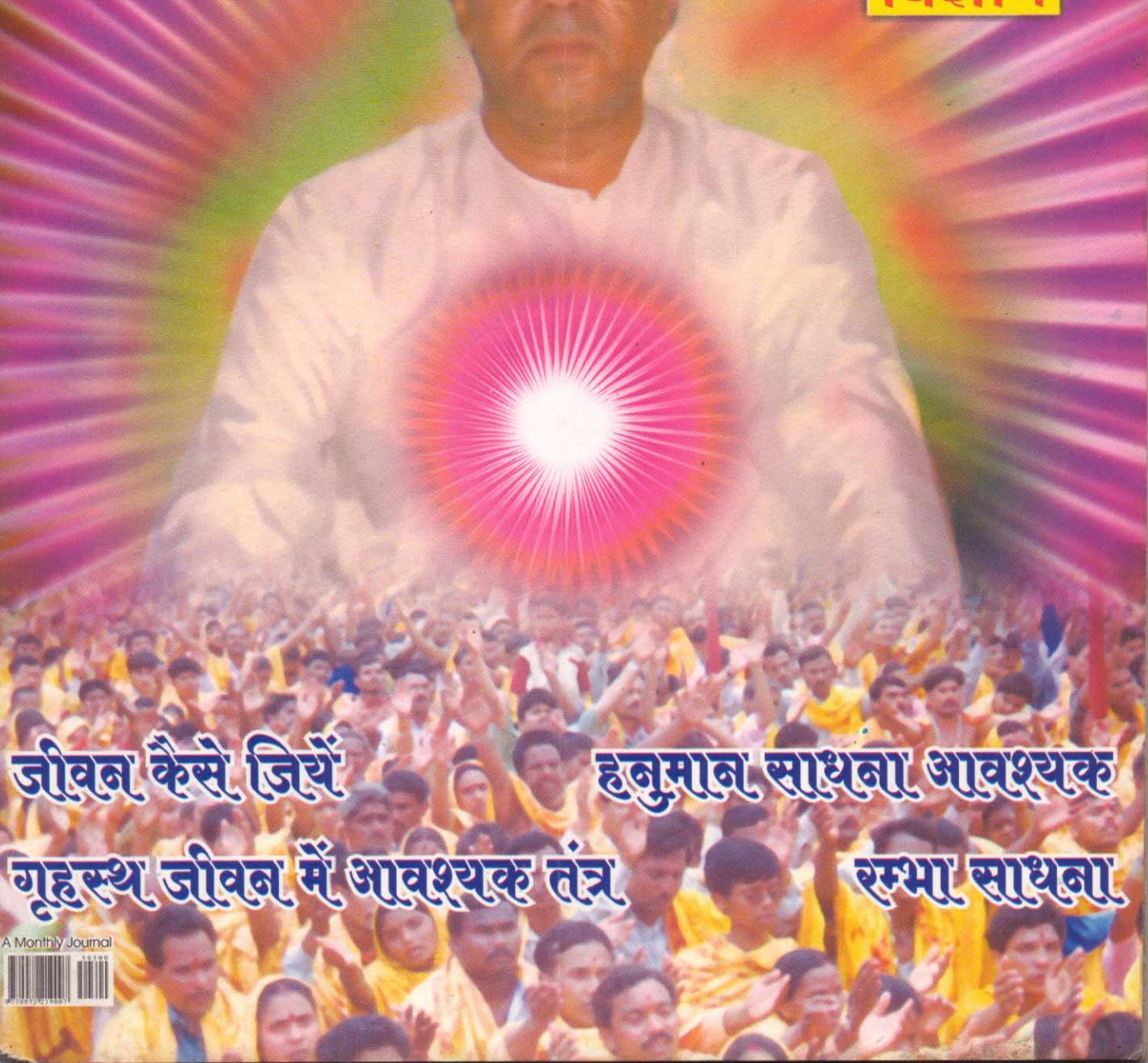
नवम्बर 2007

मूल्य : 13/-

NOT FOR SALE

हूँम-तंत्र-योग

विज्ञान



जीवन कैसे जियें

हनुमान साधना आवश्यक

गृहस्थ जीवन में आवश्यक तंत्र

रमा साधना

A Monthly Journal





COLLECTION OF VARIOUS

- > HINDUISM SCRIPTURES
- > HINDU COMICS
- > AYURVEDA
- > MAGZINES

FIND ALL AT [HTTPS://DSC.GG/DHARMA](https://dsc.gg/dharma)

Made with



By

Avinash/Shashi

[creator of
hinduism
server]

ज्ञान और चेतना की अनमोल कृतियाँ

पूज्य गुरुदेव ‘डॉ. नारायण दत श्रीमाली जी’

द्वारा रचित ज्ञान की गरिमा से युक्त
सम्पूर्ण जीवन को जगमगाने वाली
अन्तमोल कृतियाँ

मूलाधार के सहस्राव तक	150/-
फिर दूर अहीं पायल खेनकी	150/-
गुरु गीता	150/-
ज्योतिष और आल निर्णय	150/-
हक्कतकेबा विज्ञान और पंचागुली ज्ञान	120/-
निर्खिलेश्वरवानन्द शतवन	120/-
विश्व और श्रेष्ठ दीक्षाएं	96/-
द्यान धारणा और क्षमाधि	96/-
निर्खिलेश्वरवानन्द भहस्त्रनाम	96/-
विश्व और औरिजन ज्ञान	96/-
श्री निर्खिलेश्वर शतभम्	75/-
लक्ष्मी प्राप्ति	60/-
आमृत षुड़	60/-
निर्खिलेश्वरवानन्द चिन्तन	40/-
निर्खिलेश्वरवानन्द कहक्य	40/-
किञ्चाश्रम औ योगी	40/-
प्रत्यक्ष हनुमान किञ्चि	40/-
मातंगी ज्ञान	40/-
भैक्य ज्ञान	40/-
श्वर्णिम ज्ञान भूत्र	40/-

→ → → → → सम्पर्क :- ← ← ← ← ← मंत्र-यंत्र-तंत्र विज्ञान, डॉ. श्रीमाली मार्ग, हाईकोर्ट कॉलोनी, जोधपुर (राज.)

फोन : 0291-2432209, 2433623, फैक्स : 0291-2432010

आनो भ्रदा: क्रतवो यन्तु विश्वतः
मानव जीवन की सर्वतोन्मुखी उच्चति, प्रगति और भारतीय गृह विद्याओं से समन्वित मासिक पत्रिका

श्री आद्य-प्रकाश

॥ अ॒ ष्ठ॑ वसुम् ब्रह्मवाय वाय्याय वाय्याय गुरुभ्यो नदः ॥



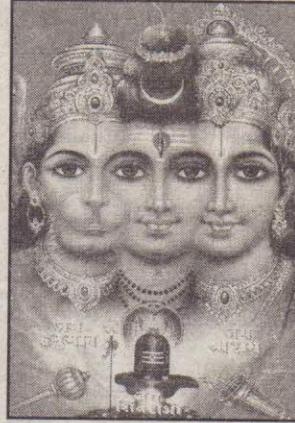
सद्गुरुदेव

सद्गुरु प्रवचन

स्तम्भ	
शिष्य धर्म	43
गुरुवाणी	44
मैं समय हूँ	61
नक्षत्रों की वाणी	62
जीवन सरिता	64
वाराहमिहिर	66
इस मास जोधपुर में	80
एक दृष्टि में	85
वर्ष 27 अंक 11 नवम्बर 2007 पृष्ठ 88	

साधना

भैरुण्डा तंत्र	31
अष्ट सिद्धियां प्राप्ति हेतु	
आठ यंत्र	38
रम्भा अप्सरा साधना	49
अष्ट यक्षिणी साधना	55
अन्नपूर्णा लक्ष्मी साधना	58



प्रेरक संस्थापक

डॉ. नारायणदत्त श्रीमाली
(परमहंस स्वामी निखिलेश्वरानंद जी)

प्रधान सम्पादक

श्री नन्द किशोर श्रीमाली

कार्यवाहक सम्पादक

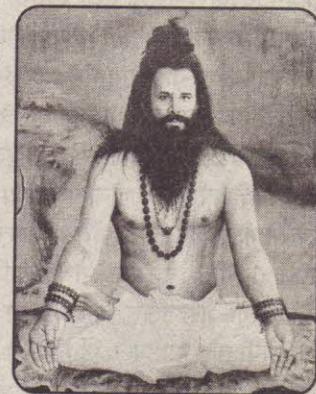
श्री कैलाशचन्द्र श्रीमाली

संयोजक व्यवस्थापक

श्री अरविन्द श्रीमाली

कवच

अमोघ सदाशिव कवच 76



दीक्षा

शक्तिपात युक्त
दस महाविद्या दीक्षा 71



प्रकाशक एवं स्वामित्व

मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान

द्वारा

सुदर्शन प्रिन्टर्स

487/505, पीरागढ़ी,

रोहतक रोड, नई दिल्ली-८७

से मुद्रित तथा

मंत्र तंत्र यंत्र विज्ञान हार्डकोर्ट

कॉलोनी जोधपुर से प्रकाशित

मूल्य (भारत में)

एक प्रति: 18/-

वार्षिक: 195/-

॥ सम्पर्क ॥

सिद्धाश्रम, 306 कोहाट एन्कलेच, पीतमपुरा, दिल्ली-110034, फोन: 011-27352248, टेली फैक्स: 011-27356700
मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान, डॉ. श्रीमाली मार्ग, हार्डकोर्ट कॉलोनी, जोधपुर - 342001 (राज.) फोन: 0291-2432209, टेली फैक्स: 0291-2432010
WWW address - <http://www.siddhashram.org> E-mail add. - mtyv@siddhashram.org

नियम

पत्रिका में प्रकाशित सभी रचनाओं का अधिकार पत्रिका का है। इस 'मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान' पत्रिका में प्रकाशित लेखों से सम्पादक का सहमत होना अनिवार्य नहीं है। तर्क-कुतर्क करने वाले पाठक पत्रिका में प्रकाशित पूरी सामग्री को गत्य समझें। किसी नाम, स्थान या घटना का किसी से कोई सम्बन्ध नहीं है, यदि कोई घटना, नाम या तथ्य मिल जाय, तो उसे मात्र संयोग समझें। पत्रिका के लेखक घुमकड़ साधु-संत होते हैं, अतः उनके पते के बारे में कुछ भी अन्य जानकारी देना सम्भव नहीं होगा। पत्रिका में प्रकाशित किसी भी लेख या सामग्री के बारे में वाद-विवाद या तर्क मान्य नहीं होगा और न ही इसके लिए लेखक, प्रकाशक, मुद्रक या सम्पादक जिम्मेवार होंगे। किसी भी सम्पादक को किसी भी प्रकार का पारिश्रमिक नहीं दिया जाता। किसी भी प्रकार के वाद-विवाद में जोधपुर-न्यायालय ही मान्य होगा। पत्रिका में प्रकाशित किसी भी सामग्री को साधक या पाठक कहीं से भी प्राप्त कर सकते हैं। पत्रिका कार्यालय से मंगवाने पर हम अपनी तरफ से प्रामाणिक और सही सामग्री अथवा यंत्र भेजते हैं, पर फिर भी उसके बाद में, असली या नकली के बारे में अथवा प्रभाव होने या न होने के बारे में हमारी जिम्मेवारी नहीं होगी। पाठक अपने विश्वास पर ही ऐसी सामग्री पत्रिका कार्यालय से मंगवायें। सामग्री के मूल्य पर तर्क या वाद-विवाद मान्य नहीं होगा। पत्रिका का वार्षिक शुल्क वर्तमान में 195/- है, पर यदि किसी विशेष एवं अपरिहार्य कारणों से पत्रिका को त्रैमासिक या बंद करना पड़े, तो जितने भी अंक आपको प्राप्त हो चुके हैं, उसी में वार्षिक सदस्यता अथवा दो वर्ष, तीन वर्ष या पंचवर्षीय सदस्यता को पूर्ण समझें, इसमें किसी भी प्रकार की आपत्ति या आलोचना किसी भी रूप में स्वीकार नहीं होगी। पत्रिका में प्रकाशित किसी भी साधना में सफलता-असफलता, हानि-लाभ की जिम्मेवारी साधक की स्वयं की होगी तथा साधक कोई भी ऐसी उपासना, जप या मंत्र प्रयोग न करें, जो नैतिक, सामाजिक एवं कानूनी नियमों के विपरीत हो। पत्रिका में प्रकाशित लेखों के लेखक योगी या संन्यासी लेखकों के विचार मात्र होते हैं, उन पर भाषा का आवरण पत्रिका के कर्मचारियों की तरफ से होता है। पाठकों की मांग पर इस अंक में पत्रिका के पिछले लेखों का भी ज्यों का त्यों समावेश किया गया है, जिससे कि नवीन पाठक लाभ उठा सकें। साधक या लेखक अपने प्रामाणिक अनुबंधों के आधार पर जो मंत्र, तंत्र या यंत्र (जिन्हें ही वे शास्त्रीय व्याख्या के इतर हों) बताते हैं, वे ही दे देते हैं, अतः इस सम्बन्ध में आलोचना करना वर्यथ है। आवरण पृष्ठ पर या अन्दर जो भी फोटो प्रकाशित होते हैं, इस सम्बन्ध में सारी जिम्मेवारी फोटो भेजने वाले फोटोग्राफर अथवा आर्टिस्ट की होगी। दीक्षा प्राप्त करने का तात्पर्य यह नहीं है, कि साधक उससे सम्बन्धित लाभ तुरन्त प्राप्त कर सकें, यह तो धीमी और सतत प्रक्रिया है, अतः पूर्ण श्रद्धा और विश्वास के साथ ही दीक्षा प्राप्त करें। इस सम्बन्ध में किसी प्रकार की कोई भी आपत्ति या आलोचना स्वीकार्य नहीं होगी। गुरुदेव या पत्रिका परिवार इस सम्बन्ध में किसी भी प्रकार की जिम्मेवारी वहन नहीं करेंगे।

★ प्रार्थना ★

वस्याज्ञाया जगत्सृष्टा विरचिः पात्लकरे हरिः

संहर्ता कात्लद्रास्त्वयो तस्मै श्री गुरवे नमः

जिसकी आज्ञा से ब्रह्मा सृष्टि की रचना करता है, विष्णु इसका पालन करने में समर्थ होता है और महाकाल रुद्र संहार करता है उस पर परम सत्ता का नाम गुरु तत्व है, उस सर्वोच्च सत्ता को मैं बारम्बार नमन करता हूँ।

★ अहंकार ★

किसी प्रान्त के एक महाराज ने वृद्ध होने पर संन्यास लेने का निर्णय लिया। उसके कोई पुत्र नहीं था, जिसे राजगद्धी सौंप कर वह राजकार्य से निवृत हो जाता, अतः उसने मंत्रियों को बुलाकर कहा, कि कल प्रातः नगर में जो सबसे पहला व्यक्ति प्रवेश करेगा, उसे यहां का राजा नियुक्त किया जाएगा। अगले दिन महाराजा के सैनिक फटेहाल कपड़ों में एक युवक को ले आए और उसका राज्याभिषेक किया गया। उधर महाराज अपनी पुत्री का विवाह उस युवक के साथ करके राज्य की जिम्मेदारी उसे सौंप कर वन को प्रस्थान कर गए।

शनैः-शनैः युवक ने राज्य की बागडोर-सम्हाल ली। उसके महल में एक छोटी सी कोठरी भी थी, जिसकी चाबी वह सदैव अपनी कमर में लटकाए रखता था। समाह में एक बार राजा उस कोठरी में जाता, आधा-एक घण्टे अन्दर रहता और बाहर निकल जाता, एक बड़ा ताला लगाता और पुनः अन्य कार्य करने लग जाता। सेनापति ने सोचा, कि राज्य का सारा खजाना तो खजांची के पास है, सारे रन्न मणिक्य वहां हैं, सेना के शस्त्रागार की चाबी मेरे पास है, अन्य बहुमूल्य कागजातों की चाबियां मंत्री के पास हैं, फिर इस छोटे से कमरे में ऐसा क्या है, कि राजा हर समाह अन्दर जाता है, और थोड़ी देर बाद बाहर निकल आता है!

सेनापति से रहा न गया, उसने हिम्मत कर राजा से पूछा - 'राजन! यदि आप क्षमा करें, तो यह बताएं कि उस कमरे में ऐसी कौन सी वस्तु है, जिसकी सुरक्षा की आपको इतनी फिक्र है?'

राजा क्रोध में बोले - 'सेनापति! यह तुम्हारे सोचने का विषय नहीं है, यह प्रश्न दुबारा कभी मत करना।' अब तो सेनापति का कौतूहल और भी बढ़ गया। मंत्री और अन्य सभासदों ने भी येन-केन-प्रकारेण राजा से पूछने का प्रयास किया परन्तु राजा ने किसी को भी उस कमरे का रहस्य नहीं बताया। बात महारानी तक पहुंची, और स्त्री हठ तो प्रसिद्ध है। खाना-पीना छोड़ कर बैठ गई। अंखिर उसके आगे राजा को विश्व होना पड़ा और सेनापति व अन्य सभासदों को लेकर गए, कमरे का ताला खोला तो अन्दर कुछ भी न था। मंत्री ने पूछा - 'महाराज, यहां तो कुछ भी नहीं है!'

कमरे में एक खूंटी लगी थी, जिस पर गंडे, फटे-पुराने धोती कुर्ते की जोड़ी टंगी थी। राजा ने उस ओर इशारा करते हुए कहा - 'जब-जब भी मुझे थोड़ा सा अहंकार आ जाता है, तो मैं यहां आकर इसके दर्शन कर लिया करता हूँ। मुझे स्मरण आ जाता है, कि एक दिन मैं किस जगह खड़ा था, और मेरा मन एकदम से शांत हो जाता है और घमण्ड समाप्त हो जाता है, तब मैं वापस बाहर आ जाता हूँ।'

वस्तुतः साधनात्मक जगत में भी अहंकार का समाप्त होना अत्यन्त आवश्यक है। गुरु जब तक शिष्य को अनेकानेक विधियों से चोट देते रहते हैं, तो नाना प्रकार से शिष्य की परीक्षा लेते रहते हैं, वे देरखते रहते हैं कि क्या शिष्य अपने अहम् को अभी तक समाप्त कर पाया है अथवा नहीं। लेश मात्र भी अहंकार रह जाने से गुरु की दी हुई शक्ति का, सिद्धि का दुरुपयोग हो जाता है। अहं का त्याग ही साधनाओं में सफलता का मूल मंत्र भी है।

गुरु से मिलन

छैत से अद्वैत की महावाचा





भ्रमजाल में, संसार के विषयों में आसक्त व्यक्ति किस प्रकार साधक, शिष्य बनकर गुरुमय होकर परमानन्द की प्राप्ति कर सकता है? कैसे गुरु और शिष्य एकाकार हो सकते हैं? उन्हीं संशयों का निवारण करता हुआ परमपूज्य सद्गुरुदेव का यह ओजस्वी प्रवचन -

यज्ञोग्रत्तो दूरमूदैति देवं तदु सुप्रस्य
तथैवैति ।

दंरुगमं ज्योतिषां ज्योतिरेकं तन्मे
मनः शिवसंकल्पमस्तु ॥

दूरच्च कमानाय प्रतिप्राणायाक्षये ।
अस्मा अशृष्टव्यशा कामेना
जनयत्स्वः ॥

हे परमेश्वर स्वरूप सद्गुरु! दिव्य शक्तिमय, मेरा मन; जो जागते हुए भी भटकता रहता है, संचारी भावों से ही युक्त रहता है, संकल्प विकल्प से युक्त रहता है, सुषुप्तावस्था में भी मन की कृति भटकती ही रहती है, मेरा मन दिव्य ज्योतियों से जाग्रत होकर सदा ही शुभ संकल्प से युक्त हो जाए।

मुझे बार-बार कामना करते हुए, इस ईश्वरीय हृदय में प्रतिपालन के लिए आशाओं को सुनकर सद्गुरु प्राप्त हो गये और संकल्प द्वारा उस अनन्त सुख, आनन्द को अपने भीतर उत्पन्न कर दिया है।

यजुर्वेद और अथर्ववेद के इन श्लोकों से आज का प्रवचन प्रारम्भ करते हुए अपने शिष्यों और जगत के कल्याण की ही इच्छा रखता हूँ-

प्रश्न यह है कि यदि शिष्य दोष करे, यदि शिष्य गलती करे या गुरु की आज्ञा का पूरी तरह से पालन नहीं करे तो गुरु का क्या दोष होता है? शिष्य को क्या दोष लगता है और उसका परिमार्जन कैसे हो? एक ही प्रश्न के

दो पहलू हैं, और दूसरा प्रश्न है कि द्वैत और अद्वैत की स्थिति में कौन सी स्थिति ज्यादा श्रेयस्कर है; और कैसे? यह द्वैत और अद्वैत की स्थिति वैदिक काल से है, वैदिक काल में भी एक मंत्र है यजुर्वेद का -

द्वा सो पवदन्त यज्ञोवासे वः सतं दाह वैदो सतं

क्या हम जो कुछ देखते हैं वह बिल्कुल एक अलग है
 और जो कुछ हम लोग हैं वह बिल्कुल अलग
 है, और दोनों अलग-अलग हैं तो यह अद्वैत
 है, और यदि दोनों अलग-अलग नहीं हैं तो
 ऐसा डिफरेन्स महसूस होता है, ऐसा
 अलगाव महसूस होता है, और आगे की
 मीमांसा, आगे के उपनिषद्कारों ने जो इस प्रश्न
 को लेकर के बहुत जूझे और यह द्वैत के बाद अद्वैत
 का विचार, मन में द्वैत और अद्वैत की लडाई वैदिक काल
 से लगाकर आज तक भी चलती आई है। कुछ लोग कहते
 हैं कि इस संसार में द्वैत है क्योंकि माया अलग चीज है, ब्रह्म
 अलग चीज है, तीसरी कोई चीज संसार में है ही नहीं। जो कुछ है, वह पूरा
 संसार और जिस संसार के हम भी एक प्राणी हैं, एक सदस्य, एक पदार्थ हैं,
 हम अपने आप में कोई नवीन वस्तु नहीं हैं। जैसे पथर एक पदार्थ है, जैसे
 रुई एक पदार्थ है, जैसे हवा एक पदार्थ है, उसी प्रकार से हम भी एक पदार्थ हैं
 और वैज्ञानिक भाषा में एक पदार्थ में भार होना चाहिए। पदार्थ उसको कहते हैं जो
 जगह धेरता हो, पदार्थ उसको कहते हैं जिसमें घनत्व होता है और मनुष्य में घनत्व भी
 है, मनुष्य जगह धेरता है और मनुष्य में भार है इसीलिए मनुष्य भी पदार्थ की श्रेणी में
 आता है; और दूसरी ओर यह माया, जब हम और जब उपनिषद्कार या वैदिककार
 जब यह कहते हैं -

'अहं ब्रह्मस्मि द्वितीयो नास्ति'

मैं ब्रह्म हूं और साथ-साथ एक बात और कह रहा है, द्वितीय यहां दूसरा कोई हैं
 ही नहीं। जब मैं ब्रह्म हूं तो फिर यह पत्नी क्या है; और मैं ब्रह्म हूं तो यह पुत्र क्या
 है; और मैं ब्रह्म हूं तो फिर यह पंखा, यह लाईट, यह रोशनी, यह सुख, ये
 सामग्री की वस्तुएं, यह विलास का यह ऐश आराम, भोग-विलास, यह सब

क्या है?

क्योंकि शास्त्र तो इरुठ है नहीं, और शास्त्र में यह कहा है 'अहं ब्रह्मास्मि'; क्योंकि संसार में केवल मैं हूँ 'अहं', और अहं शब्द बना है पूरी संस्कृत की वर्णमाला का सारगर्भित स्वरूप, क्योंकि वर्णमाला का प्रथम अक्षर 'अ' से शुरू होता है और अंतिम अक्षर 'ह' है। अ आ इ ई से शुरू करते हैं ग घ और य र ल व श स ष से लगाकर ह तक जितने वर्ण हैं उसके बीच में जितने नाम आते हैं, पशु-पक्षी, कीट-पतंग, आदमी, वे सब कुछ मैं हूँ।



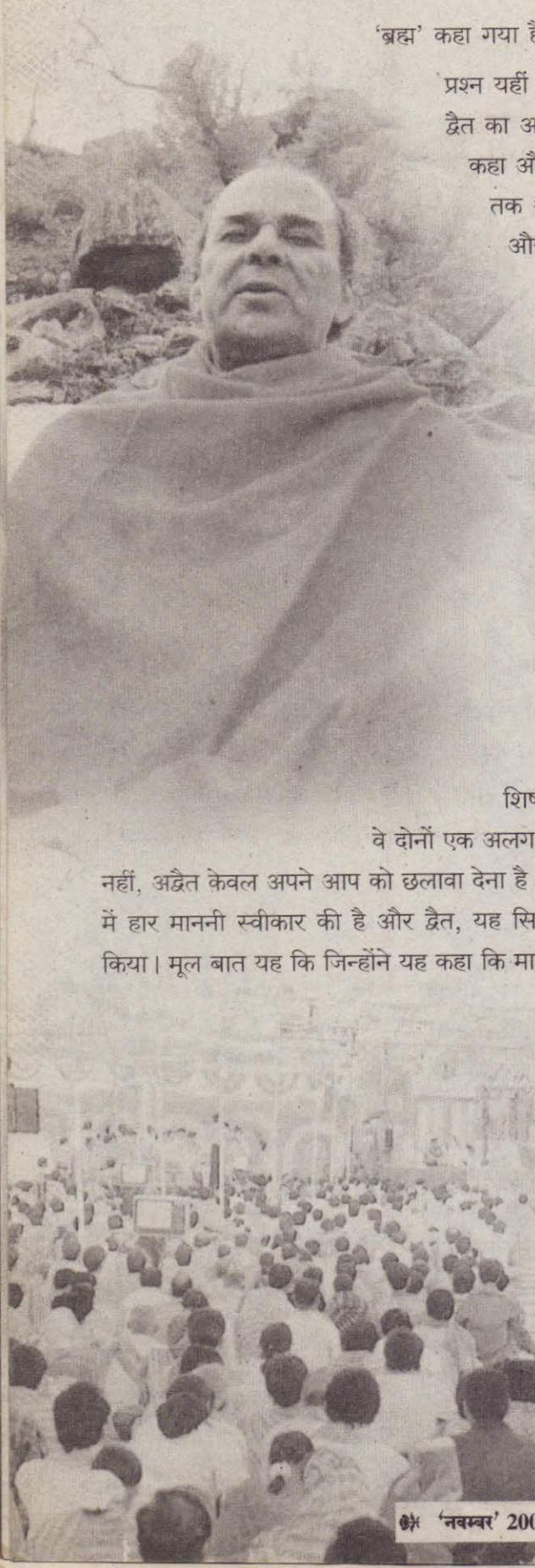
इसीलिए उसने शास्त्र में कहा 'अहं', उसने मनुष्य के लिए अहं नहीं कहा वह सब कुछ मैं ही हूँ; और श्रीकृष्ण ने भी गीता में यही बात कही, जो 'अहं ब्रह्मास्मि' में शब्द आया, उसी 'अहं' की व्याख्या गीता में हुई और गीता के दसवें अध्याय को हम पढ़ें तो कृष्ण अर्जुन से कह रहे हैं कि मैं वृक्षों में पीपल का पेड़ हूँ, ऐसा नहीं कि मैं कृष्ण हूँ, वे कह रहे हैं कि मैं नदियों में गंगा नदी हूँ, मैं पहाड़ों में हिमालय हूँ, मैं धातुओं में स्वर्ण हूँ इसका मतलब कहने का यह है कि 'अहं ब्रह्मास्मि', मैं ब्रह्म हूँ और यह अलग बात है कि तुम मुझको पता समझ सकते हो, पेड़ समझ सकते हो, मुझे नदियां समझ सकते हो, मुझे धातु समझ सकते हो, वह जो कुछ भी समझ सकते हो, वह मैं स्वयं ही हूँ।

यह तो उन लोगों की विचारधारा है जो अद्वैत मानते हैं। यह अद्वैत मानने वाले लोगों का चिन्तन है, एक विचार है एक धारणा है और उस विचार को भी हम बिल्कुल नैग्लेक्ट नहीं कर सकते हैं, मना नहीं कर सकते हैं अद्वैत, क्योंकि वह स्वयं कह रहे हैं कि मेरे अलावा संसार में जो कुछ है, वह है ही नहीं। द्वैत को मानने वाले भी विचारक हैं; और वे कहते हैं कि 'अहं' मैं तो हूँ इसको हम मना नहीं कर रहे, मगर मेरे अलावा भी कोई दूसरी चीजें हैं जो मेरे ऊपर प्रभाव डाल रही हैं। जो मेरे ऊपर प्रभाव डाल सकती हैं तो दूसरी कोई चीज जरूर है। वह यह नहीं कह रहे कि तुम पीपल के पेड़ नहीं हो, इसको हम भी मानते हैं और तुम नदी हो यह भी हम मान लेते हैं, और तुम हिमालय हो यह भी हम मान लेते हैं मगर तुम पर अलग दूसरी चीज का प्रभाव पड़ता है तो फिर दूसरी

चीज जरूर हैं जो प्रभाव पड़ता है, और हम पर प्रभाव पड़ता है
सर्दी का, गर्मी का, परिस्थितियों का, गाली का, प्रसन्नता का,
सम्मान का, असम्मान का, बीमारियों का, रोग का, सुख का
और दुःख का।

इसका मतलब ये चीजें कुछ और चीज हैं जो हम पर
प्रभाव डालती हैं, और प्रभाव कोई दूसरी चीज डाल
सकती है क्योंकि अगर तुम खुद प्रभाव ही हो तो फिर
ये कभी गर्मी कभी सर्दी क्यों हमेशा व्याप्त होती है?
अगर कोई दूसरी चीज है नहीं व्याप्त करने वाली,
कोई चीज है ही नहीं, तो कभी तुम रोते हो, कभी
तुम प्रसन्न होते हो; ऐसा क्यों होता है? इसीलिए
लोग कह रहे हैं कि नहीं, एक ही चीज तब तक
नहीं है, द्वैत है, दो चीज अलग-अलग हैं एक
चीज 'ब्रह्म' है और दूसरी वे सारी चीजें हैं जो
इस ब्रह्म पर प्रभाव डालती हैं जिनको 'माया'
कहा गया है इसीलिए इन दोनों की अलग-
अलग विद्वानों ने अलग-अलग तरह से व्याख्या
की है और कोई भी शास्त्र, कोई भी चिंतन तभी
आगे बढ़ सकता है क्योंकि मैं एक ही लाइन की
व्याख्या अपने ढंग से करूँगा तो दूसरा व्यक्ति अगले
ढंग से करेगा।

कानून, जो भारतीय कानून बनाये गये हैं
उसकी पुस्तक प्रकाशित है और दोनों वकील
उस पुस्तक में एक लाइन के दो अलग-
अलग अर्थ निकालते हैं। एक कहता
है 'नहीं', इस कानून का यह अर्थ है,
दूसरा वकील कहता है, 'यह अर्थ
है', लाइन एक ही लिखी है, दोनों
के लिए कानून की पुस्तक अलग-
अलग नहीं है, दोनों में उसके अर्थ
अलग-अलग निकाले गये हैं।
ठीक उसी प्रकार से द्वैत और
अद्वैत मूल वस्तु स्थिति आत्म
है प्राणश्चेतना और इस
प्राणश्चेतना के उन लोगों ने
दो अर्थ निकाले हैं जिसको



‘ब्रह्म’ कहा गया है, जिसको ‘माया’ कहा गया है।

प्रश्न यहीं नहीं समाप्त होता है। यहां तो मैंने तुम्हें यह समझाया है कि द्वैत का अर्थ क्या है, अद्वैत का अर्थ क्या है, और विद्वानों ने द्वैत क्यों कहा और विद्वानों ने अद्वैत क्यों कहा, और प्रारम्भ से लगाकर आज तक अद्वैत को भी मानने वाले सैकड़ों ऋषि, संन्यासी, विद्वान हुए और द्वैत को मानने वाले भी सैकड़ों ऋषि, संन्यासी, विद्वान हुए।

अब प्रश्न यह उठता है कि क्या गुरु और शिष्य अद्वैत हैं या द्वैत हैं? यह प्रश्न जरूरी है और इसका उत्तर शंकराचार्य ने अत्यन्त ही प्रामाणिक ढंग से दिया है और मैं ‘शंकर’ का या शंकराचार्य का उदाहरण इसीलिए देता हूं कि वे साक्षात् शिव के स्वरूपमय हैं और शिव अपने आप में पूर्णतः देव हैं जिनको कि देवता ही नहीं महादेव कहा गया है और उन्होंने जो कुछ व्याख्याएं कीं, जो कुछ चिंतन किया, जो कुछ तर्क दिया, जो कुछ बात कही, वह अपने आप में अत्यन्त सारगमित और महत्वपूर्ण है और जहां ‘गुरु और शिष्य’ प्रसंग आया वहां पर शंकराचार्य ने स्पष्ट रूप से कहा -

**पूर्ण सदैव पूर्ण मदैव रूपं गुरुवै वाताम पूर्ण मदैव
शिष्यं**

शिष्य गुरु से अलग है, शिष्य गुरु नहीं है और गुरु शिष्य नहीं है, वे दोनों एक अलग-अलग हैं, इसीलिए अलग अलग हैं कि जीवन में अद्वैत है ही नहीं, अद्वैत केवल अपने आप को छलावा देना है और सही अर्थों में देखा जाय तो अद्वैत के मीमांसकारों ने अंत में हार माननी स्वीकार की है और द्वैत, यह सिद्धांत मानने वालों ने अपने आप को सही ढंग से प्रतिपादित किया। मूल बात यह कि जिन्होंने यह कहा कि माया और ब्रह्म अलग-अलग हैं, इस बात को अधिकतर विद्वानों

ने स्वीकार किया और प्रतिशत के हिसाब से कहें तो
यह प्रतिशत ६० प्रतिशत, और १० प्रतिशत
विद्वानों ने कहा कि अलग-अलग नहीं है।
६० प्रतिशत विद्वानों ने वेद से लगाकर
अनवरत इस बात को कहा कि माया
अलग है, ब्रह्म अलग है; और माया
व्याप होती है ब्रह्म पर भी, क्योंकि
ब्रह्म किसी शरीर में स्थित है, ब्रह्म
अलग खड़ा नहीं हो सकता। वह
ब्रह्म जब शरीर में स्थित है तो
वह शरीर उस माया से व्याप
होता है। जब मैं सुख अनुभव
करता हूं तो ब्रह्म अनुभव नहीं कर
रहा, मैं अनुभव कर रहा हूं मैं, जो

कि मेरा शरीर है, मैं गर्मी महसूस कर

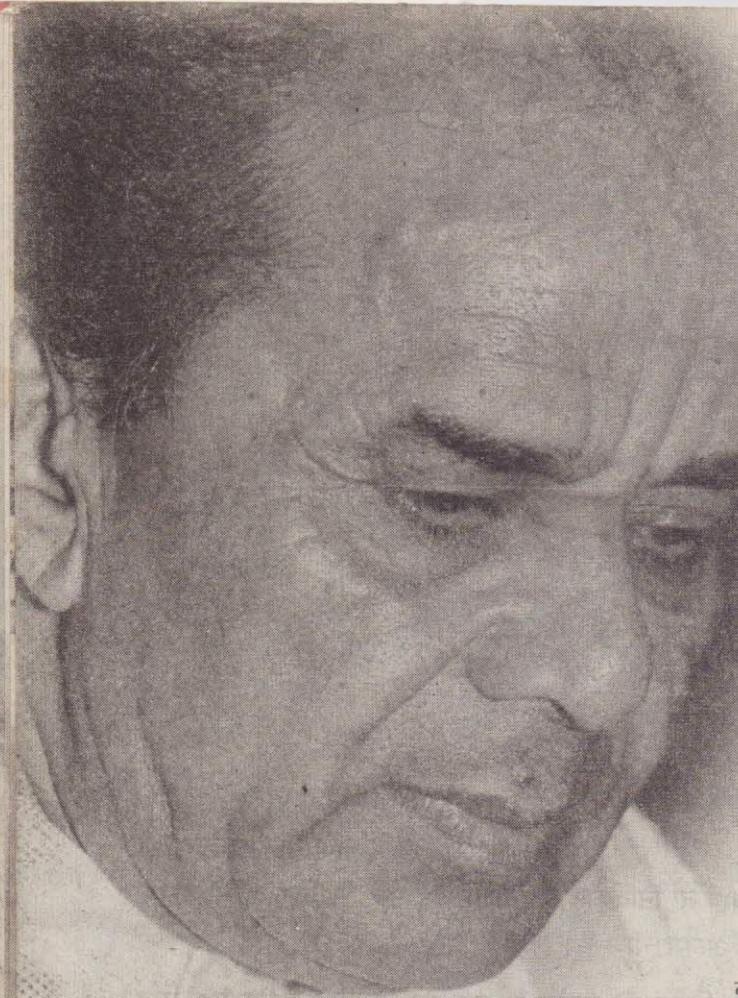
हूं, मैं प्रसन्न हो रहा हूं, मैं उदास हो रहा हूं। क्योंकि ब्रह्म तो निर्विकार है, निर्लिपि है; और निर्विकार है तो उसके

ऊपर नहीं किसी प्रकार का प्रभाव पड़ता है, वह एक अलग चीज है।

इसलिए गुरु और शिष्य भी अपने आप में छैत हैं। शिष्य की मर्यादा है, गुरु की मर्यादा है। गुरु एक तत्व बोध है, शिष्य भी एक तत्व बोध है; या यों कहा जाय कि गुरु का एक अंश बोध स्वरूप है। जो गुरु अपने आप में पूर्ण है उसका एक घटक, एक कण, एक चिंतन शिष्य है, मगर शिष्य अपनी क्रियाओं के माध्यम से, अपने चिंतन के माध्यम से, अपने विचारों के माध्यम से गुरु की ओर बराबर बढ़ता हुआ उसमें पूर्णतः लीन हो सकता है और लीन होकर के अद्वैत बन सकता है।

रहा हूं, मैं सर्दी महसूस कर रहा





क्योंकि शिष्य की अपनी एक स्थिति है, क्योंकि जीवन का जो आनन्द शिष्य में है, गुरु में नहीं है; जो चिंतन शिष्य कर सकता है, गुरु नहीं कर सकता। गुरु एक मर्यादा में बंधा हुआ है। उस मर्यादा के बाहर गुरु नहीं जा सकता, मगर शिष्य के सामने दोनों रास्ते खुले हैं क्योंकि, उसको चलने का एक रास्ता है। गुरु एक स्थिर है, एक जगह खड़ा हो गया है, और गुरु खड़ा हो गया है उस ब्रह्म को पूर्णतः आत्मसात् करके, क्योंकि वह स्वयं ब्रह्म स्वरूप है, गुरु नहीं रहा, गुरु स्वयं ब्रह्म बन गया है। जब ब्रह्म बन गया तो तब उसके लिए शरीर माया मोह, ऐश आराम, भोग, विलास एक अन्य साधन उस पर व्याप नहीं होते, प्रभाव नहीं डालते हैं। वह दुःख आने पर भी दुखी नहीं होता, सरल भाव से लेता है, प्रसन्नता आने पर भी खिलखिलाता नहीं है, एकदम से उछलता नहीं है सहज भाव से लेता है, दुःख आ गया तो ठीक है, सुख आ गया तो ठीक है, अगर शाम को हलवा मिठाई मिल गई तो भी ठीक है, सूखे टुकड़े मिल गए तो ठीक है। अगर ऐसा चिंतन उसके मानस में सहज रूप में है तो वह गुरु है।

गुरु की लिमिटेशन है, क्योंकि गुरु अपने ज्ञान के माध्यम से बढ़ता बढ़ता उस ब्रह्म तक पहुंच गया है, जहां निर्विकार है, किसी प्रकार का विकार नहीं है; और संसार में शास्त्रों ने ३६ विकार बतलायें ३७ वां कोई विकार नहीं। ३६ विकारों में - काम, क्रोध, मोह, लोभ, लालच, स्वार्थ, ऐश, आराम, चिंतन, निद्रा, झूठ, छल, कपट, व्यभिचार, ममता, अटेचमेंट, स्नेह, हर्ष, शोक। ये सब संचारी भाव



हैं, और संचारी भाव आते हैं; और चले जाते हैं। संचार का मतलब है गतिशील, एक ही भाव स्थिर नहीं रहता। जिनमें एक ही भाव स्थिर नहीं रहता उनको शिष्य कहते हैं और जो एक ही भाव से स्थिर रह जाते हैं उनको गुरु कहते हैं इसीलिए गुरु अपने आप में अद्वैत है।

शिष्य अपने आप में द्वैत है। शिष्य धीरे-धीरे अद्वैत की स्टेज में आ सकता है, वह पहुंच सकता है अपने आप में गुरु को स्थापित करके, और अपने आप में गुरु को स्थापन करने की क्रिया का प्रारम्भ होता है उसकी प्रारम्भिक स्थिति जो है दीक्षा; और अंतिम स्थिति बनती है तब जब वह पूर्ण रूप से गुरुमय हो जाता है उसके सामने 'गुरु' चिंतन ही दिखाई देता है। वह अगर राम की प्रशंसा करता है तो ऐसा लगता है कि मेरे सामने मेरे गुरु खड़े हैं। आज गुरुदेव ने धनुष बाण हाथ में ले लिया है, क्या बात है! यह चिंतन जब उसके शरीर में, समाहित चिंतन में विचारधारा में समाहित हो जाता है तो संचारी भाव खत्म हो जाते हैं क्योंकि जब तुलसीदास वृन्दावन गए और वृन्दावन में जाकर के उन्होंने कृष्ण के दर्शन किए तो उन्होंने कहा कि -

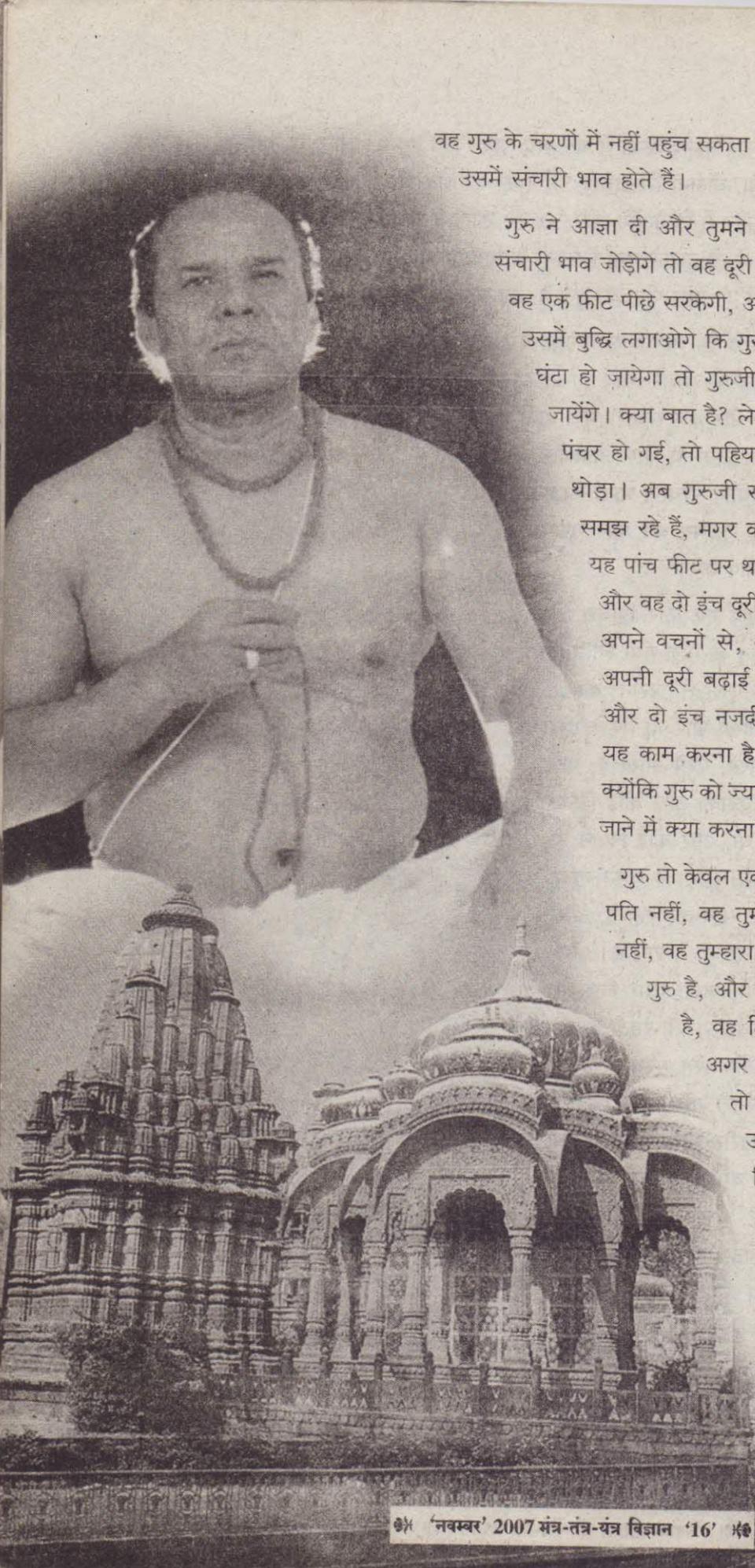
तुलसी मस्तक पद्म मैं धनुष बाण लियौ हाथ

मैं आपको प्रणाम तो करता हूं मगर मुझे कुछ सान्निध्यता अनुभूत नहीं होती, मैं तब तक नमस्कार कर सकता हूं जब तक तुम्हारे हाथ में धनुष बाण हों, क्योंकि वे पूर्ण राममय हो गए थे। बांसुरी हाथ में लिए हुए व्यक्ति को वह पहचान ही नहीं पा रहा था उसको बड़ा अटपटा लग रहा था कि ये ऐसे कैसे हैं? और वह साफ कह रहा है कि तुलसी मस्तक पर पद्म में धनुष बाण लियो हाथ और ठीक यही स्टेज, जो तुलसी की राम के प्रति बनी, वह स्टेज शिष्य की गुरु के प्रति बनती है क्योंकि जब वह उस राम की मूर्ति के दर्शन करता है तब भी उसको वही गुरु का चेहरा दिखाई देता

है तो साठ साल में से तुम्हारे १६ वर्ष बाल्यावस्था में चले गये, उतने दिन पहनना आता ही नहीं था, तुम्हें खाना नहीं आता था, तुम्हें पीना सिखाया, बोलना सिखाया। १६ साल की अवस्था तुम्हारी वह चली गई, पीछे रहे तुम्हारे ४४ साल में से २२ साल नींद में बिताओंगे और उन २२ साल में भी तुम २० साल इन संचारी भावों में व्यतीत कर दोगे तो गुरु के हिस्से में तो तुम्हारे कुल जिन्दगी के मात्र दो वर्ष ही रहे इसीलिए पूरी जिन्दगी बीतने पर भी गुरु और शिष्य के बीच में जो पांच फीट की दूरी है; वह बनी रहती है।

इसलिए जहां उसने प्रश्न किया है कि जहां शिष्य गलती करे तो, और गलती वह तब ही करता है जब उसमें संचारी भाव जाग्रत होते हैं या उसके ऊपर संचारी भाव होते हैं और जब संचारी भाव हावी होते हैं, जितने संचारी भाव हावी होंगे उतना ही शिष्य कमज़ोर होगा उतना ही शिष्यत्व से दूर होगा, क्योंकि संचारी भावों को हटाने के लिए एक ही क्रिया है कि वह गुरुमय बने और गुरुमय बनने के लिए निरन्तर गुरुमंत्र जाप करे।

यदि आपने देखा होगा तो पूर्ण एकाकार त्रिविध भाव प्रधान व्यक्ति ऐसे ही होते हैं। मजनूँ को पूछा गया कि 'तुमने खुदा देखा?', राजा ने बुलाकर पूछा तो उसने कहा - 'बिल्कुल देखा', 'तुमने खुदा तो देखा और जी भर के देखा है, कैसा है?' 'ठीक लैला की तरह, ऐसी आंख है, ऐसी नाक है, ऐसा कान', ऐसा खुद उसका और कोई चिंतन नहीं, वह पूर्ण लैलामय हो गया था, और कोई चिंतन ही नहीं था। जब राजा जैसा आदमी पूछता है तुमने खुदा देखा? तो हां देखा है, वह दम के साथ कह रहा है, और जो विवरण दे रहा है, अपनी लैला का दे रहा है। और आप किसी प्रेमी को शुरु-शुरु में, कच्चा प्यार जिसको कहते हैं उसकी आंख में एक तस्वीर गूँजती रहती है वह ऐसी है, उसका चेहरा गुलाब की तरह मुस्कुराता है, आंखें हिरण्णी की तरह हैं; वह सारी गाय, भेंस, बकरी सारी उसमें जोड़ देता है, नारी शरीर रहता ही नहीं उस नारी शरीर में फूल पौधे, गुलाब, चमेली, पत्तियां, केवड़ा, मोगरा और सांप की तरह लट और खजूर की तरह आंखें और फलदार की तरह हौंठ, वह सब पेड़ पंछी पशु बना कर खड़ा कर देता है। वह नारी शरीर कहां चला गया, वह उसके मानस में कुछ नहीं क्योंकि वह संचारी भाव जाग्रत हो गया और शिष्य में जब संचारी भाव होगा, जितना भाव है उतना गुरुत्व कम रहेगा इसलिए मैंने कहा कि पूरे जीवनभर भी वह पांच फुट की दूरी बनी रह सकती है, और यदि चाहें तो भी



वह गुरु के चरणों में नहीं पहुंच सकता है। इसलिए गलती तब होती है जब उसमें संचारी भाव होते हैं।

गुरु ने आज्ञा दी और तुमने पूरा किया, परन्तु अब तुम उसमें संचारी भाव जोड़ेगे तो वह दरी पांच से साढ़े छह फीट बन जायेगी।

वह एक फीट पीछे सरकेगी, आगे की ओर नहीं बढ़ेगी क्योंकि तुम उसमें बुद्धि लगाओगे कि गुरु ने एक घंटे में आने को कहा, डेढ़ घंटा हो जायेगा तो गुरुजी कौन सी फांसी दे देंगे, और चले जायेंगे। क्या बात है? लेट कैसे आए? गुरुजी, मार्ग में गाड़ी पंचर हो गई, तो पहिया उतर गया था, पहिया ठीक किया थोड़ा। अब गुरुजी समझ रहे हैं, गुरु हैं तो बिल्कुल समझ रहे हैं, मगर वह यह समझ नहीं रहा है कि अभी यह पांच फीट पर था अब यह पांच फीट दो इंच पर है, और वह दो इंच दूरी तुमने ही बनाई, गुरु ने नहीं। तुमने अपने वचनों से, अपने लक्षणों से, अपनी बुद्धि से अपनी दूरी बढ़ाई जबकि तुम्हारी इयूटी थी गुरु के और दो इंच नजदीक जाना और अगर तुमको कहा, यह काम करना है, तो वह काम तुमको करना ही है क्योंकि गुरु को ज्यादा मालूम है कि तुम्हें उनके नजदीक जाने में क्या करना है।

गुरु तो केवल एक कर्तव्य है वह गुरु है, वह तुम्हारा पति नहीं, वह तुम्हारी पत्नी नहीं वह तुम्हारा भाई नहीं, वह तुम्हारा सम्बन्धी नहीं है वरन् वह तुम्हारा गुरु है, और गुरु की तो केवल एक ही कल्पना है, वह शिष्य को अपने में समाहित करें।

अगर पति हूँ मैं, जिस क्षण मैं पति बनूँगा
तो मैं पत्नी से उस ढंग से बात करूँगा,
उस समय मैं गुरु नहीं हूँ जब मैं
पिता बनूँगा तो मैं अपने पुत्र से उस
ढंग से बात करूँगा, वहां मेरी यह
नहीं किया होगी कि पुत्र मुझ में
लीन हो, मगर जहां मैं गुरु बनूँगा,
और जहां शिष्य है, वहां पर उस
गुरु का केवल एक ही धर्म,

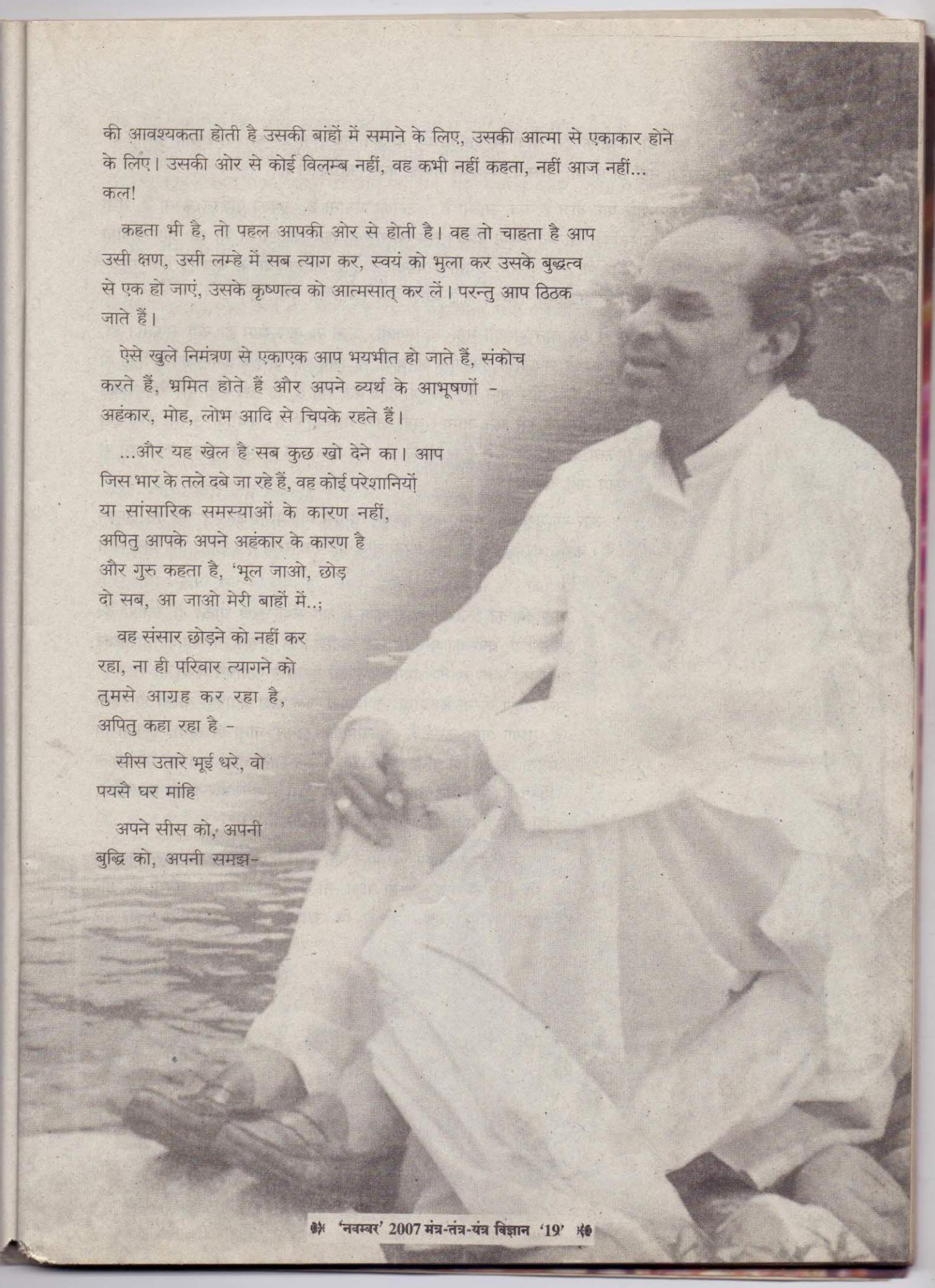
ली और घुटने टेक कर अकबर नमाज पढ़ने करने लगा तथा अल्ला के ध्यान में लीन होने लगा और ठीक एक बजे एक प्रेमी ने प्रेमिका को मिलने का टाइम दिया था, 'ठीक एक बजे आएगी तो ही मैं मिलूँगा उसके बाद नहीं मिलूँगा' सुनकर प्रेमिका एक दम से हड्डबड़ाती हुई घर से निकली कि मां-बाप देखें नहीं, पांच मिनट का टाइम है, फिर वह चला जायेगा। दौड़ती हुई जा रही थी, अकबर नमाज पढ़ रहा था चादर के ऊपर पांव रखती हुई चली गई। राजा पूरे भारत वर्ष का, बहुत गुस्सा आया, यह औरत है कि क्या है? मैं खुदा की इबादत कर रहा हूँ, यह क्या कर रही है? खैर फिर नमाज-इबादत अकबर करने लगा। वह वापस प्रेमी से मिलकर, जो कुछ बातचीत करनी थी, करके आई। वापस आई, उस चादर पर पांव रखने से बचते हुए जाने लगी तो अकबर ने हाथ पकड़ा, बोला, मूर्ख! तुम्हें शर्म नहीं आती? मैं खुदा की इबादत कर रहा था, तुम चादर पर पांव रखकर चली गई? लड़की ने कहा - खुदा की इबादत कर रहे थे, तुम्हें कैसे मालूम पड़ा कि मैं आई और मैंने चादर पर पांव रखा? तुम्हें कैसे मालूम पड़ा कि मैं गई? मुझे तुम दिखाई दी नहीं दिए मुझे तो न चादर दिखाई दी और न आप। मुझे तो प्रेमी दिखाई दे रहा था, और कुछ दिखाई नहीं दे रहा था। तुम्हें अल्ला दिखाई दे रहे थे या मैं दिखाई दे रही थी, या चादर?

क्योंकि वह तो प्रेमीमय हो गई थी, वह गुरुमय हो गई थी इसीलिए न उसको अकबर दिखाई दिया न चादर दिखाई दी। उसकी आंख के सामने प्रेमी था और जाना था। ...और जब तुम गुरुमय हो जाओगे तो न तुम्हें गाने सुनाई देंगे, न फिल्मी गीत सुनाई देंगे, न ही आसपास का वातावरण और संचारी भाव दिखाई देगा। तुम गुरुमय बन जाओगे, यह संचारी भाव दिखाई देगा नहीं, तब तुम गुरुमय बन जाओगे। यह संचारी भाव अपनी जगह चलेंगे, तुम अपनी जगह चलोगे और फिर वह दो इंच का और सरकना हुआ गुरु के पास, और मैं आशीर्वाद देता हूँ कि तुम गुरुमय बन सको, तुम गुरु में लीन हो सको।

आप एक विशाल सागर के समीप खड़े हैं, विस्तार अनन्त है इस सागर का; और अनन्त ही रहस्य छिपे हैं, इसकी अतल गहराइयों में। पहुंच तो आप गए हैं... और यह पहुंचना आवश्यक है।

आवश्यक इसलिए, क्योंकि हर नदी बहती है केवल और केवल सागर में विलीन होने के लिए और सागर मतभेद नहीं करता, उसका विस्तार सभी के लिए सदा निमंत्रण संप्रेषित करता रहता है परन्तु तट पर पहुंच कर वहां खड़े रहने से कुछ नहीं होगा, आगे बढ़कर समाना होगा उसमें।

गुरु भी खुली बाहों से सदा खड़ा रहता है। निमंत्रण उसका हर क्षण बना रहता है; और केवल एक क्षण



की आवश्यकता होती है उसकी बाहों में समाने के लिए, उसकी आत्मा से एकाकार होने के लिए। उसकी ओर से कोई विलम्ब नहीं, वह कभी नहीं कहता, नहीं आज नहीं...
कल!

कहता भी है, तो पहल आपकी ओर से होती है। वह तो चाहता है आप उसी क्षण, उसी लम्हे में सब त्याग कर, स्वयं को भुला कर उसके बुद्धत्व से एक हो जाएं, उसके कृष्णत्व को आत्मसात् कर लें। परन्तु आप ठिक जाते हैं।

ऐसे खुले निमंत्रण से एकाएक आप भयभीत हो जाते हैं, संकोच करते हैं, भ्रमित होते हैं और अपने व्यर्थ के आभूषणों - अहंकार, मोह, लोभ आदि से चिपके रहते हैं।

...और यह खेल है सब कुछ खो देने का। आप जिस भार के तले दबे जा रहे हैं, वह कोई परेशानियों या सांसारिक समस्याओं के कारण नहीं, अपितु आपके अपने अहंकार के कारण है और गुरु कहता है, 'भूल जाओ, छोड़ दो सब, आ जाओ मेरी बाहों में...;

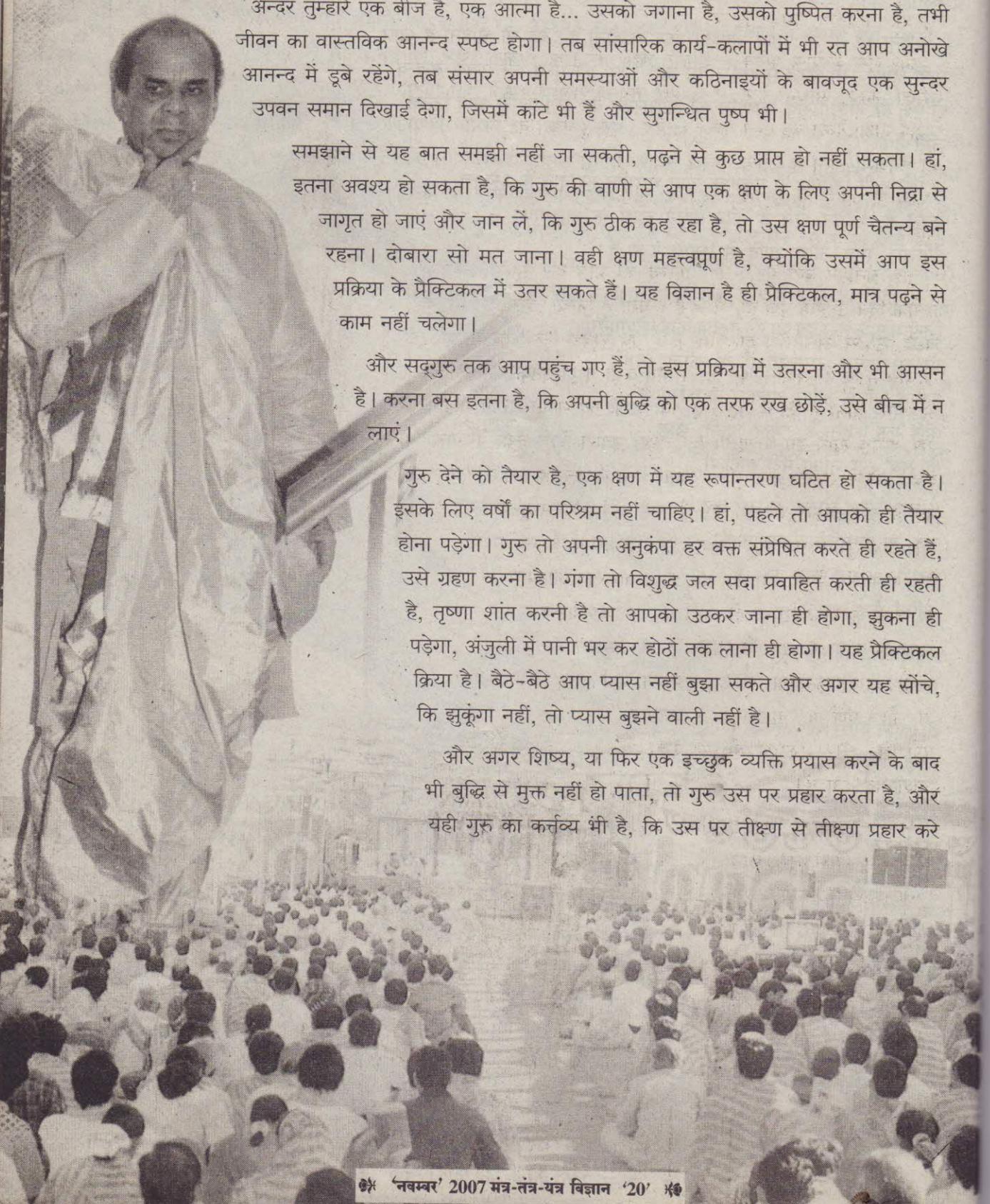
वह संसार छोड़ने को नहीं कर रहा, ना ही परिवार त्यागने को तुमसे आग्रह कर रहा है, अपितु कहा रहा है -

सीस उतारे भूई धरे, वो पयसे घर मांहि

अपने सीस को, अपनी बुद्धि को, अपनी समझ-

बुद्धा को एक तरफ रख दो, क्योंकि इस यात्रा में यह बाधक ही है। जब तक इसका त्याग नहीं होगा, वह अपेक्षित रूपान्तरण नहीं हो पाएगा, जिसका समस्त मानव जगत् अधिकारी है।

अन्दर तुम्हारे एक बीज है, एक आत्मा है... उसको जगाना है, उसको पुष्टि करना है, तभी जीवन का वास्तविक आनन्द स्पष्ट होगा। तब सांसारिक कार्य-कलापों में भी रत आप अनोखे आनन्द में छूटे रहेंगे, तब संसार अपनी समस्याओं और कठिनाइयों के बावजूद एक सुन्दर उपवन समान दिखाई देगा, जिसमें काटे भी हैं और सुगन्धित पुष्प भी।



समझाने से यह बात समझी नहीं जा सकती, पढ़ने से कुछ प्राप्त हो नहीं सकता। हाँ, इतना अवश्य हो सकता है, कि गुरु की वाणी से आप एक क्षण के लिए अपनी निद्रा से जागृत हो जाएं और जान लें, कि गुरु ठीक कह रहा है, तो उस क्षण पूर्ण चैतन्य बने रहना। दोबारा सो मत जाना। वही क्षण महत्वपूर्ण है, क्योंकि उसमें आप इस प्रक्रिया के प्रैक्टिकल में उत्तर सकते हैं। यह विज्ञान है ही प्रैक्टिकल, मात्र पढ़ने से काम नहीं चलेगा।

और सद्गुरु तक आप पहुंच गए हैं, तो इस प्रक्रिया में उत्तरना और भी आसन है। करना बस इतना है, कि अपनी बुद्धि को एक तरफ रख छोड़ें, उसे बीच में न लाएं।

गुरु देने को तैयार है, एक क्षण में यह रूपान्तरण घटित हो सकता है। इसके लिए वर्षों का परिश्रम नहीं चाहिए। हाँ, पहले तो आपको ही तैयार होना पड़ेगा। गुरु तो अपनी अनुकंपा हर वक्त संप्रेषित करते ही रहते हैं, उसे ग्रहण करना है। गंगा तो विशुद्ध जल सदा प्रवाहित करती ही रहती है, तृष्णा शांत करनी है तो आपको उठकर जाना ही होगा, झुकना ही पड़ेगा, अंजुली में पानी भर कर होठों तक लाना ही होगा। यह प्रैक्टिकल क्रिया है। बैठे-बैठे आप प्यास नहीं बुझा सकते और अगर यह सोंचे, कि झुकंगा नहीं, तो प्यास बुझने वाली नहीं है।

और अगर शिष्य, या फिर एक इच्छुक व्यक्ति प्रयास करने के बाद भी बुद्धि से मुक्त नहीं हो पाता, तो गुरु उस पर प्रहार करता है, और यहीं गुरु का कर्तव्य भी है, कि उस पर तीक्ष्ण से तीक्ष्ण प्रहार करे

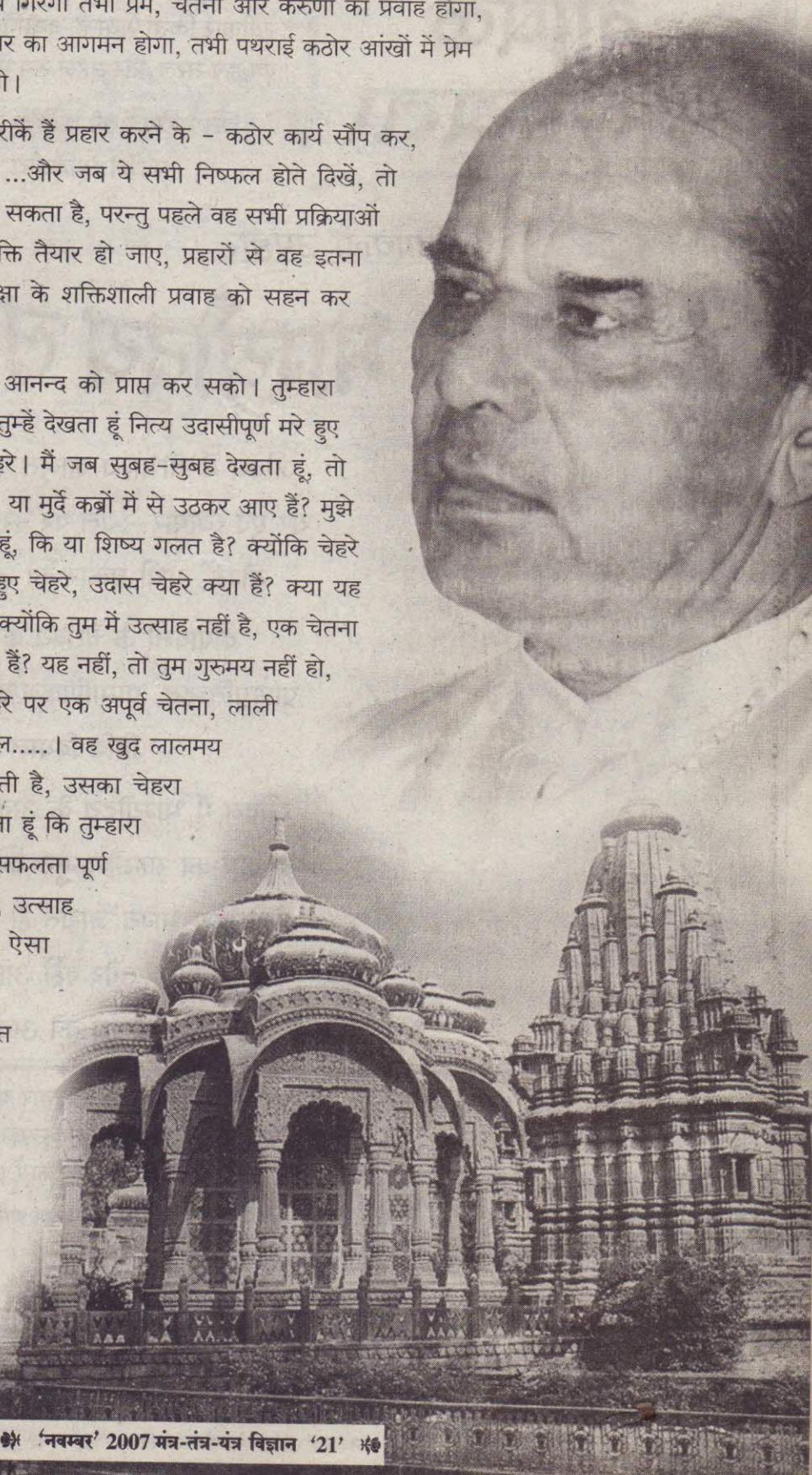
तब तक, जब तक कि उसके अहंकार का किला ढह न जाए क्योंकि भीतर कैद है आत्मा और विशुद्ध प्रेम। जब यह बांध गिरेगा तभी प्रेम, चेतना और करुणा का प्रवाह होगा, तभी सूख चुके हृदय में नई बहार का आगमन होगा, तभी पथराई कठोर आँखों में प्रेम की यह अद्वितीय चमक उभरेगी।

और गुरु के पास अनेकों तरीके हैं प्रहार करने के - कठोर कार्य सौंप कर, परीक्षा लेकर, साधना कराकर ... और जब ये सभी निष्फल होते दिखें, तो विशेष दीक्षा देकर वह ऐसा कर सकता है, परन्तु पहले वह सभी प्रक्रियाओं को आजमा लेता है ताकि व्यक्ति तैयार हो जाए, प्रहारों से वह इतना सक्षम हो जाए, कि विशेष दीक्षा के शक्तिशाली प्रवाह को सहन कर सके।

कुछ बनो न बनो पर, उस आनन्द को प्राप्त कर सको। तुम्हारा प्रत्येक दिन उत्साह पूर्ण हो, मैं तुम्हें देखता हूं नित्य उदासीपूर्ण मरे हुए चेहरे, उदास और रोते हुए चेहरे। मैं जब सुबह-सुबह देखता हूं, तो सोचता हूं कि ये सभी शिष्य हैं, या मुर्दे कब्रों में से उठकर आए हैं? मुझे अफसोस होता है कि मैं गलत हूं, कि या शिष्य गलत है? क्योंकि चेहरे ऐसे थप्पड़ खाये हुए, मुरझाये हुए चेहरे, उदास चेहरे क्या हैं? क्या यह कब्र में से तो उठकर आए नहीं! क्योंकि तुम मैं उत्साह नहीं है, एक चेतना नहीं है, एक जाग्रत अवस्था नहीं है? यह नहीं, तो तुम गुरुमय नहीं हो, और जब गुरुमय बनोगे तो चेहरे पर एक अपूर्व चेतना, लाली मेरे लाल की, मैं भी हो गई लाल.....। वह खुद लालमय हो जाती है ललायीयुक्त हो जाती है, उसका चेहरा लाल हो जाता है; और मैं चाहता हूं कि तुम्हारा प्रत्येक क्षण प्रफुल्लता पूर्ण हो, सफलता पूर्ण हो, ओज पूर्ण हो, जोश पूर्ण हो, उत्साह पूर्ण हो, और गुरुपूर्ण हो, मैं ऐसा आशीर्वाद देता हूं।

तुम्हारा अपना नारायण दत्त श्रीमाली, जिसे तुम चाहो तो निखिलेश्वरानन्द कहो या सद्गुरु कहो, हूं मैं तुम्हारा अपना ही-

- सद्गुरुदेव परमहंस
स्वामी निखिलेश्वरानन्द
जी।



वार्षिक सदस्यता

मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान पत्रिका आपके परिवार का अभिन्न अंग है।

इसके साधनात्मक सत्य को समाज के सभी स्तरों में समान रूप से स्वीकार किया गया है, क्योंकि इसमें प्रत्येक वर्ग की समस्याओं का हल सरल और सहज रूप में समाहित है।

इस पत्रिका की वार्षिक सदस्यता को प्राप्त कर आप पार्देंगे अद्वितीय और विदिष्ट उपहार

दीपावली उपहार



भाग्योदय लक्ष्मी यंत्र

जीवन में रौभाग्य जागृत करने का निश्चित उपाय,
घर एवं व्यापार-स्थल पर बरसों बरस रथापित करने
योग्य, सभी प्रकार की उन्नति में सहायक ...

दीपावली के चैतन्य काल में मंत्र सिद्ध एवं
ग्राणप्रतिष्ठत, ग्रामाणिक एवं पूर्ण रूप से शास्त्रोक्त
विधि विधान युक्त ...

जीवन में भाग्योदय के अवसर कम ही आते हैं, जब
कर्म का सहयोग गुरु की कृपा से होता है तो
अनायास भाग्य जागृत हो जाता है। जहां भाग्य है
वहां लक्ष्मी है और वहीं आनन्द का वातावरण है।
आप इस यंत्र को अवश्य रथापित करें।

यह दुर्लभ उपहार तो आप पत्रिका का वार्षिक सदस्य अपने किसी मित्र, रिश्तेदार या स्वजन को बनाकर ही प्राप्त कर सकते हैं। यदि आप पत्रिका सदस्य नहीं हैं, तो आप स्वयं भी सदस्य बनकर यह उपहार प्राप्त कर सकते हैं। आप पत्रिका में प्रकाशित पोस्टकार्ड नं. 4 स्पष्ट अक्षरों में भरकर हमारे पास भेज दें, शेष कार्य हम स्वयं करेंगे।

वार्षिक सदस्यता शुल्क - 195/- डाक खर्च अतिरिक्त - 45/- Annual Subscription 195/- + 45/- postage
Fill up and send post card no. 4 to us at :

-: सम्पर्क :-

मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान, डॉ. श्रीमाली मार्ग, हाईकोर्ट कॉलोनी, जोधपुर 342001, (राजस्थान)

Mantra-Tantra-Yantra Vigyan, Dr. Shrimali Marg, High Court Colony, Jodhpur-342001, (Raj.), India

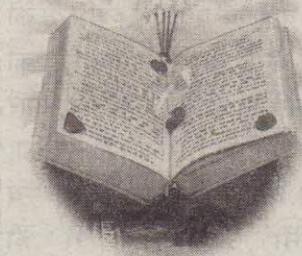
फोन (Phone) 0291-2432209, 2433623 टेलीफैक्स (Telefax) 0291-2432010

हम कैसे जीवन जीवा चाहते हैं ?

★ इसका निर्णय हमें ही करना है

अध्यात्म से

आद्यात्मिक
वर्ग विवरण



“अध्यात्म” का अर्थ यदि सरल शब्दों में लिया जाय, तो स्वयं (आत्मा) का या निज स्वरूप का अध्ययन है, अर्थात् उसे पहचानने कि किया है, और जब व्यक्ति अपने-आप को पहचानने के लिए अपने ही अन्दर उत्तरता है ध्यान, धारण के द्वारा, तब उसे एक असीम आनन्द की प्राप्ति होती है, जहाँ केवल आनन्द ही आनन्द है, दुःख का चिन्ह दूर-दूर तक दिखाई नहीं देता, और यहीं विचार शून्य मस्तिष्क होने की भावभूमि है।

☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆

मानव में ही एक खोजी प्रवृत्ति रही है, और वह प्राकृतिक आपदाओं से बचने के आरम्भ से ही कुछ न कुछ नवीन तथ्यों की खोज में रहा है लिए, एक स्थान से दूसरे स्थान तक जाने के लिए उसे अत्यधिक प्राचीन काल से मानव प्रायः नग्न, मूक पशुओं की भंति ही रहा कठिनाइयों का सामना करना पड़ता था, इसके समाधान के रूप करता था। उसमें और पशुओं में कोई विशेष अंतर नहीं था। में उसने एक पत्थर के पहिये का अविष्कार किया। इस प्रकार पशुओं के समान ही उदर पोषण करना, पशुओं के समान ही निरन्तर भौतिकता में वृद्धि होती गई, और वह निरन्तर अपने संतान उत्पन्न करना, दुर्गन्ध युक्त जीवन जीते-जीते समाप्त हो शरीर को सुख देने वाले साधनों के विकास में, उनके अविष्कार जाना। में जुट गया।

इसके अलावा मानव की कुछ विशेषताएं भी थीं, जो उसे पशुओं से निरन्तर भिन्नता प्रदान करती गई। मानव एक सामाजिक प्राणी है, वह आरम्भ से ही समाज में रहना अधिक रुचिकर समझता है, और समाज में वास करने के कारण ही उसके जीवन में कई प्रकार की समस्याओं का आवागमन लगा रहता है, जैसे-

भरण-पोषण की समस्या, आवास की समस्या, मान-सम्मान की समस्या आदि अनेक समस्याओं के फलस्वरूप उसमें खोजी प्रवृत्ति का विकास हुआ। प्रारम्भ में उसने गुफाओं में रहना आरम्भ किया और फिर धीरे-धीरे वे गुफायें ही भवन-निर्माण की कला के रूप में परिवर्तित हुईं।

वहीं उससे होने वाली बीमारियों, मृत्यु जैसी दुःखद स्थितियों एवं आने वाले आकस्मिक संकटों ने मनुष्य को स्वयं के बारे में सोचने के लिए विवश कर दिया, तब यहीं से अध्यात्म का जन्म हुआ, और जब मानव ने अध्यात्म को लेकर खोज की, तो प्रकृति ने उसे भरपूर सहयोग प्रदान किया। मनुष्य में छिपी एक अन्यतम शक्ति जिसे श्रद्धा और विश्वास कहा जाता है, उसकी पहचान हुई।

इसी श्रद्धा और विश्वास के बल पर उसने बड़ी-बड़ी समस्याओं को देखते-देखते ही हल करना सीख लिया, और इसे ही आत्मशक्ति अथवा मनःशक्ति के रूप में जाना गया।

निरन्तर मिलती सफलताओं ने मानव को इस अध्यात्म के विषय में और गहराई में जाने के लिए मजबूर कर दिया, और उसने समाधि अवस्था को प्राप्त किया, वहीं ईश्वर से साक्षात्कार हुआ, वहीं उसे ब्रह्म का दर्शन हुआ, ज्ञान-विज्ञान की खोज हुई और मानव ने प्रकृति से एकरस होना सीख लिया। यहां उसके जीवन में दो पक्ष रहे, पहला भौतिकता का और दूसरा अध्यात्म का। मनुष्य ने अनुभव किया कि भौतिकता में सुख तो है, मगर आनन्द नहीं है, और सुख कभी स्थाई नहीं होता, क्योंकि किसी व्यक्ति को यदि बलिष्ठ शरीर बनाने में सुख अनुभव होता है, तो वहीं उसे निरन्तर भय भी बना रहता है, कि कहीं कोई मुझसे भी अधिक बलशाली व्यक्ति आकर मेरा अपमान न कर



दे। यदि किसी को धन एकत्र करने में सुख अनुभव होता है, तो उसे इस बात की चिंता रहती है, कि कोई उसके धन को नष्ट न कर दे और वह निरन्तर इसी चिंता में घुलता रहता है, अर्थात् प्रत्येक सुख के पीछे एक दुःख अवश्यम्भावी होता ही है, और प्रायः व्यक्ति इसी सुख-दुःख के पालने में झूलता हुआ, अपने जीवन की इतिहासी कर लेता है।

वहीं एक पक्ष ऐसे व्यक्तियों का भी बना, जो इन समस्याओं का समाधान ढूँढ़ने में लगे रहे, और उन क्रषियों ने मंत्र का, तंत्र का, यंत्र का अविष्कार किया एवं अपनी आत्मशक्ति से ही समस्याओं का समाधान किया। वेदों की रचना हुई, उपनिषद् बने। इस प्रकार अध्यात्म भी भौतिकता के साथ-साथ निरन्तर चलता ही रहा, और मानव के जीवन का एक आवश्यक अंग बन गया।

“अध्यात्म” का अर्थ यदि सरल शब्दों में लिया

जाय, तो स्वयं (आत्मा) का या निज स्वरूप का अध्ययन है, अर्थात् उसे पहचानने की क्रिया है, और जब व्यक्ति अपने-आप को पहचानने के लिए अपने ही अन्दर उतरता है ध्यान, धारण के द्वारा, तब उसे एक असीम आनन्द की प्राप्ति होती है, जहां केवल आनन्द ही आनन्द है, दुःख का चिन्ह दूर-दूर तक दिखाई नहीं देता, और यहीं विचार शून्य मस्तिष्क होने की सूचना है।

हमारे स्वयं के सम्बन्ध, अपना-पराया, हमारा-तुम्हारा ये सब तो मात्र विचार हैं, सत्य स्वरूप तो अपना कुछ है ही नहीं। एक चोर का मनोभाव क्या होता है? जब उसके मस्तिष्क में विचार उठता है, कि यह घड़ी मेरी है, और वह उसे चुरा कर अपनी बना लेता है, यदि उसके मस्तिष्क में यह विचार ही न आये, तो वह घड़ी कभी भी उसकी नहीं हो सकती। यहीं हमारे सम्बन्धों की सत्यता है, ये विचार हमारे सुख-दुःख, राग-द्रेष, क्षोभ-पीड़ा, अतृप्ति का कारण बनते हैं।

यदि मानव अपने विचारों को, अर्थात् अपने मस्तिष्क को ही नियंत्रण में ले, तो इन सभी समस्याओं से छुटकारा पाया जा सकता है, और यह नियंत्रण में लेने की अवस्था ही ‘समाधि

साधक

- ⇒ साधक ... ऐसी नदी है जो ...
- ⇒ बेताब है सागर की गोद में समाने के लिए, पूर्ण सागर के लिए
- ⇒ कौन रोक सकता है उसे?
- ⇒ राह में पड़ने वाली समाज सूफी चट्टानें ...
- ⇒ बांध! बन!! पहाड़!!!
- ⇒ सम्भव है कुछ शिथिलता आ जाय, लेकिन
- ⇒ कोई परवाह नहीं, मैंघ सूफी गुरु जो साथ हैं
- ⇒ हो हमेशा तत्पर हैं, बरस कर नदी का उत्साह, उमंग और वेग बढ़ाने के लिए
- ⇒ नदी शिथिल होती है तो मैंघ बरसता ही है और ...
- ⇒ नदी उफनती हुई तोड़ देती है बांध, लांध जाती है सभी बन्धनों को और
- ⇒ जो मिलती है सागर में
- ⇒ यहीं तो है गुरु और शिष्य का मिलन ...

अवस्था” कहलाती है।

जब एक व्यक्ति समाधि अवस्था को प्राप्त कर लेता है, तब उसे एक असीम आनन्द की प्राप्ति होती है, एक ऐसा आनन्द, जो अवर्णनीय है, जो कहने या लिखने का नहीं वरन् अनुभव करने का पक्ष है। व्यक्ति उस बिन्दु पर आकर रुकता है, जहां न राग है, न द्वेष है, न छल है, न कपट है, न व्यभिचार है, यदि है तो एक शांति और हमारा पूर्ण हंसता-खेलता संसार, और यहां आकर एक सामान्य सा मानव “महामानव” बन जाता है, एक सामान्य सा पुरुष “पुरुषोत्तम” बन जाता है।

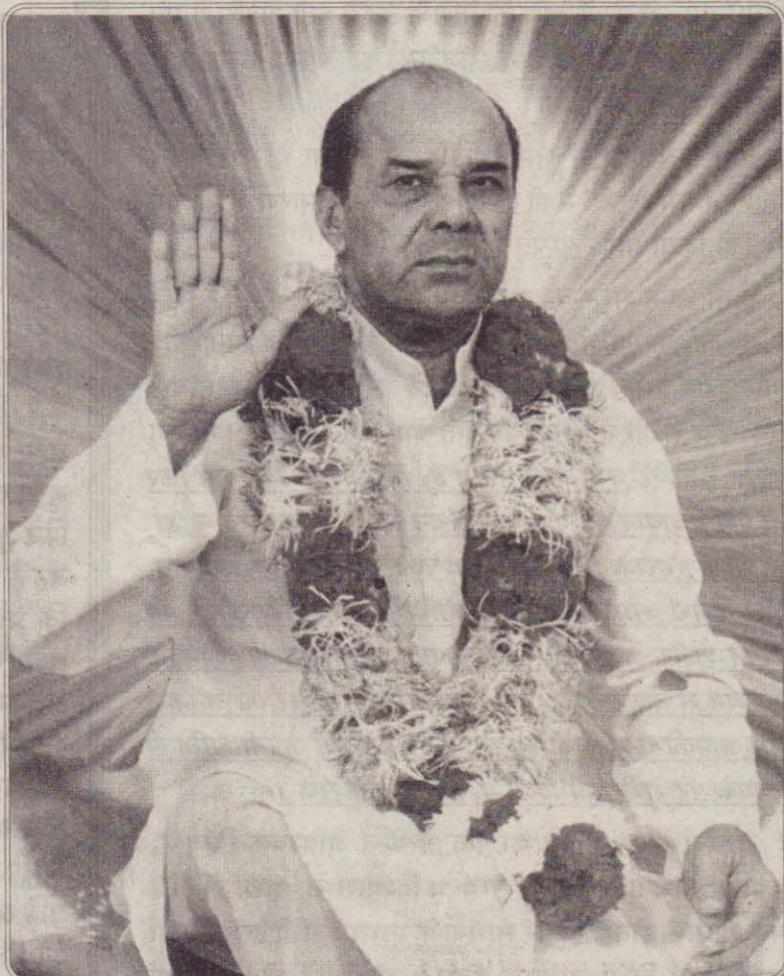
समाधि अवस्था प्राप्त करने का अर्थ है, दस कलाओं में पूर्णता प्राप्त करना। जिस प्रकार भगवान श्री राम बारह कला पूर्ण थे और भगवान श्रीकृष्ण सोलह कला पूर्ण थे, उसी प्रकार आप भी इन कलाओं को प्राप्त कर सकते हैं।

अध्यात्म का विकास प्रायः यहां पर आकर ही समाप्त नहीं हो जाता, इसके आगे तो अनन्त सम्भावनाओं के द्वार खुलते हैं।

एक सामान्य मानव के जीवन का प्रमुख लक्ष्य होता है, कुण्डलिनी जागरण कर पूर्ण ब्रह्म से साक्षात्कार करना। एक मनुष्य के शरीर में सात चक्र होते हैं, जिन्हें हम मूलाधार, स्वाधिष्ठान, मणिपुर, अनाहत, विशुद्ध, आज्ञा चक्र एवं सहस्रार के नाम से जानते हैं, इन सबको मिलाकर के पूर्ण कुण्डलिनी का स्वरूप निर्मित होता है। जैसे-जैसे व्यक्ति अपने इन सुप्रेरणाओं को किसी योग या साधना के माध्यम से जाग्रत करता है, उसमें एक विचित्र सी शक्ति का विस्फोट होता जाता है, और वह सामान्य सा दिखाई देने वाला व्यक्ति अपने-आप में एक चलता-फिरता पॉवर हाउस बन जाता है। वह व्यक्ति ऐसे-ऐसे कार्य करने लग जाता है, जिसकी उसने जीवन में कभी कल्पना भी नहीं की थी।

एक विचित्र सा साहस, कार्य करने की अद्भुत क्षमता तथा पारलौकिक शक्तियों का स्वामी बन जाता है। ब्रह्माण्ड को अपनी उंगली के इशारे पर चलाने की, उसे गतिशील करने की क्षमता प्राप्त कर लेता है, और वह प्रकृति से, ईश्वर से एकरस होकर स्वयं ईश्वर तुल्य हो जाता है।

प्रायः मानव के शरीर में जब इन्द्रियों की बात होती है, तो दस इन्द्रियों की गणना होती है, जिसमें पांच ज्ञानेन्द्रियां तथा पांच कर्मेन्द्रियां बताई जाती हैं। यह बात पूर्णरूप से सत्य नहीं है, यह



तो उनके विचार हैं, जिनको पूर्ण जानकारी नहीं है। सत्य तो यह है कि एक मानव अपने पूरे शरीर में दृश्य-अदृश्य कुल १०८ इन्द्रियों का स्वामी है, जिसमें से हम केवल दस इन्द्रियों का प्रयोग करना ही जानते हैं।

हमारे पूर्वज, जिनका सम्पूर्ण शरीर ही चैतन्य था, वे सभी इन्द्रियों का पूर्णता के साथ प्रयोग करते थे। उनके पास ऐसी क्षमताएं थीं, वे किसी का भी भूत, भविष्य बता देते थे और एक स्थान पर बैठे-बैठे कहीं भी घट रही घटनाओं की पूर्ण जानकारी रखते थे तथा अपने स्थान पर बैठे-बैठे ही उस घटना में हस्तक्षेप कर दिया करते थे, वे त्रिकालदर्शी, सर्वव्यापी कहलाते थे।

लेकिन आज मानव ने उन इन्द्रियों का प्रयोग करना ही छोड़ दिया, जिससे वे इन्द्रियां धीरे-धीरे मृतप्राय हो गईं। यदि आपने कभी देखा हो, जब एक गाय के शरीर पर कहीं मक्खी या कोई अन्य जीव बैठता है, तो वह अपने चमड़े को उसी स्थान पर हिलाकर उस जीव को हटा देती है, क्या आप ऐसा कर सकते हैं? नहीं, क्योंकि आपके वे तन्तु नष्ट हो चुके हैं। यदि किसी व्यक्ति का हाथ दस साल के लिए प्लास्टर के द्वारा स्थिर कर

दिया जाय, तो उसके हाथ की पेशियां इतनी बड़ी अवधि में मृत हो जायेंगी, वह हाथ नाकारा (यूजलैस) हो जाएगा, उसमें कोई गति, स्पन्दन नहीं रहेगा।

क्या इन्हें फिर से जाग्रत किया जा सकता है? तो जवाब निश्चित रूप से 'हां' में ही होगा। कुण्डलिनी जागरण के माध्यम से यही क्रिया प्रायः सम्भव होती है।

हमने अपने शरीर का प्रयोग करना धीरे-धीरे बन्द कर दिया है, इसका कारण भौतिक सुख-सुविधाओं में वृद्धि होना था। हम आराम पसन्द होते गए और अपने शरीर को नष्ट करते चले गए। इस शरीरिक क्षमता को पुनः प्राप्त करने के लिए हमें क्या करना चाहिए? क्या कोई उपाय है, कि जिसके द्वारा हम फिर से पूर्ण प्रज्ञावान एवं पूर्ण चैतन्य बन सकें? इसका जवाब 'हां' ही होगा। इसके लिए हमें आवश्यकता है एक पूर्ण प्रज्ञावान, चैतन्य पूर्ण, सोलह कला युक्त जीवित-जाग्रत सद्गुरु की, जो अपने शरीर के स्पर्श से, शक्तिपात के माध्यम से, योग के माध्यम से तथा साधना के माध्यम से, जो भी तरीका अनुकूल हो, आपकी कुण्डलिनी जाग्रत कर सकें तथा अपनी शक्ति से आपके पूरे शरीर को दिव्य व चैतन्य बना सकें।

साधना हमारे जीवन का एक अत्यन्त आवश्यक बिन्दु है, क्योंकि साधना का सीधा सम्बन्ध विश्वास से, शब्द से और मनःशक्ति से होता है, और साधना के माध्यम से ही इन शक्तियों का विकास किया जाता है, जिससे हम अपने जीवन में पूर्ण प्रज्ञावान, चैतन्य तथा सोलह कला पूर्ण व्यक्तित्व बन सकते हैं।

इसके लिए न तो जंगलों में भटकने की आवश्यकता होती है और न भगवे कपड़े पहनने की। इसे तो सामान्य से सामान्य गृहस्थ भी उसी प्रकार से प्राप्त कर सकता है, जिस प्रकार कोई योगी दूर किसी कन्दरा में बैठ कर प्राप्त करता है, आवश्यकता है, तो केवल लगन की और अपेक्षा बढ़कर प्राप्त कर लेने की आकांक्षा की।

आवश्यकता है हम सद्गुरुदेव निखिल द्वारा बताये मार्ग पर चलते हुए साधनात्मक पथ अपनाएं और उनके वचनों पर अमल करें - 'मैं तुम्हें जीवन का नया पाठ पढ़ाने आया हूं मैं बताने आया हूं कि जीवन छलछलाता हुआ झरना है, इसे तालाब की शक्ल में न बांधे, क्योंकि तालाब का पानी गंदा, मटमैला और बदबूदार हो जाता है। तुम मुझसे सीखो कि जीवन के प्रत्येक क्षण को नृत्य में कैसे परिवर्तित किया जा सकता है। उदासी गम और रोना तो कब्र में जाने के बाद भी कर सकते हो। आओ मेरे साथ जीवन नृत्य में तल्लीन होकर पूर्णता प्राप्त करो।'

जीवन का एक विशेष उद्देश्य होता है, और वह यह कि व्यक्ति उस ज्ञान को प्राप्त करे कि मेरा जन्म ज्यों हुआ है? यह चिन्तन पशु-पक्षी, कीट पतंग में नहीं हो सकता। जन्म लेने की क्रिया तो देवताओं में भी नहीं है। इसलिए मनुष्य जन्म को ब्रह्माण्ड की एक सर्वश्रेष्ठ क्रिया कहा गया है। परन्तु जन्म के पहले ही क्षण से तुम्हारी क्रिया इमशाल की ओर जाने की क्रिया हो जाती है। जैसे-जैसे एक-एक पल बीतता जाता है, तुम मृत्यु के और अधिक तिकट होते जाते हो, और मृत्यु की यह क्रिया पशुओं में भी होती है। परन्तु फिर तुम्हें और पशुओं में क्या अन्तर है? अंतर यह है कि तुम इस रहस्य को ज्ञात कर सकते हो कि प्रभु ने तुम्हें जीवन ज्यों दिया है, जीवन का लक्ष्य क्या है? जीवन का लक्ष्य पूर्णता की ओर अबसर होना है और जो अपने जीवन में पूर्णता की ओर अबसर होने की क्रिया करता है, सोचता है, चिनान करता है, उसी का जीवन सार्थक है और यह सार्थकता तब हो सकती है, जब जीवन में पृष्ठों का उद्दय हो और श्रेष्ठ गुरु मिल सकें। यदि जीवन में ऐसा कोई क्षण आये और उम गुरु को पठियान तें, उनके चरणों को पकड़ तें - वह जीवन है। गुरु ने जन्म लिया है और जन्म लेकर पूर्णता प्राप्त की है, वे ही ममझा सकते हैं, कि जीवन को कैसे पूर्णता दी जा सकती है।

जीवन की श्रेष्ठता तो आंखों में, जीवन में, रोम-रोम में और प्रत्येक अणु-अणु में एक आनन्द, एक मस्ती, एक ठिलोर भर देना है, इसलिए मैं तुम्हें उस सागर में हिंकोते खाने की क्रिया स्थिरा रहा हूं जहां श्रेष्ठता है, जहां मस्ती है, जहां मुख है। और जीवन की इस यात्रा का प्रारम्भ जहां मनुष्य जन्म ले है, वही अंत ईष्ट से साक्षात्कार में है। यह रास्ता आनन्दप्रद है, यह रास्ता मधुरता का है, श्रेष्ठता का है। यह रास्ता जीवन की प्रफुल्लता का है और मब्ले बड़ी बात है कि प्रेम के माध्यम से जीवन के अणु-अणु जीवन के कण-कण और जीवन के रोम-रोम, जीवन के प्रत्येक कार्य में आनन्द का अहमात्मा आ जाता है, एक सुगन्ध और तरंग आ जाती है।

- सद्गुरुदेव



धर्म का लक्षण

धर्म शब्द 'धृ' धातु से निर्मित है, जिसका अर्थ है धारण करना। महाभारत के अनुसार धारण करने को धर्म कहते हैं। धर्म प्रजा को धारण करता है -

**धारणाद्वर्ममित्याहृधर्मो धारयते प्रजाः ।
यत्स्याद्वारणसंयुक्तं स धर्म इति निश्चयः ॥**
(महाभारत)

आचार (सदाचार) को धर्म का लक्षण माना गया है तथा आचार से ही धर्म को फलने वाला कहा गया है -

**आचारलक्षणो धर्मः सन्तश्चरित्रलक्षणः ।
साधूनां च यथा वृत्तमेतदाचारलक्षणम् ॥**
(महाभारत)

तथा

आचारः फलते धर्मः ।
(महाभारत)

आचार तथा धर्म को परस्पर पूरक मानकर आचार को ही परम धर्म के रूप में स्वीकार किया गया है। 'मनु' के अनुसार वेद तथा स्मृतियों में वर्णित है, कि आचार ही श्रेष्ठतम धर्म है। आत्मज्ञान के अभिलाषी द्विज को इसमें चेष्टारत रहना चाहिए।

**आचारः परमो धर्मः श्रृत्युक्तः स्मार्त एव च ।
तस्मादस्मिन्सदा युक्तो नित्यं स्यादात्मवान्द्विजः ॥**
(मनुस्मृति)

धर्म प्रजा को धारण करता है, इस प्रकार सभी प्राणियों की रक्षा भी धर्म ही करता है। जिसका आधार सदाचरण है तथा नैतिक नियम भी इसमें सहायक हैं एवं इसी आधार पर सभी प्राणीमात्र की रक्षा अथवा धारण होता है।

प्रारम्भिक वैदिक 'ऋतु' की अवधारणा आर्यों ने विकसित की थी। 'ऋतु' सांसारिक व्यवस्था थी, जो कि अपने विरोधी तत्त्व 'अनृत' में भी नैतिक व्यवस्था स्थापित करना चाहती थी। प्रारम्भिक भारतीय आर्य समाज की नैतिक तथा सामाजिक विचारधारा ऋत से प्रभावित थी। ऋत का वास्तविक सम्बन्ध यज्ञ अवस्था तथा नैतिक विचारधारा से सम्बन्धित था। कालान्तर में वह धर्म से सम्बद्ध हो गया। इस प्रकार धर्म का अभिप्राय जीवन की ऐसी व्यवस्था से है, जो कि नैतिक एवं सात्त्विक आचरण से ही सम्बद्ध है।

धर्म के आधार स्रोत वेद, स्मृति, सदाचार तथा आत्मतुष्टि हैं, जो धर्म के साक्षात् चार लक्षण हैं -

**वेदोऽस्त्रिलो धर्ममूलं स्मृतिशीले च तद्विदाम् ।
आचारश्चैव साधूनामात्मनस्तुष्टिरेव च ॥
वेदः स्मृतिः सदाचारः स्वस्य च प्रियमात्मनः ।
एतच्चतुर्विधं प्राहुः साक्षाद्वर्मस्य लक्षणम् ॥**

धर्मसूत्रों में वेदों, स्मृतियों तथा शीलगत व्यवहार को धर्म का मूल स्वीकार किया गया है। वशिष्ठ ने भी मत व्यक्त किया है, कि वेद तथा स्मृतियां मनुष्य के सदाचार से अधिक महत्वपूर्ण हैं। वेदों तथा स्मृतियों में मनुष्य के लिए जो कर्तव्य निर्देशित हैं, उनका निष्ठापूर्वक पालन करना ही धर्म है। सदाचार काल, समय तथा परिस्थितियों के अनुसार परिवर्तित होकर मनुष्य के गुणों का अंग बनता है। यह कोई आवश्यक नहीं, कि भिन्न देशों तथा वर्गों के आचार अभिन्न हों। प्रत्येक देश तथा जाति के आचार भिन्न-भिन्न होते हैं।

कुछ अर्थों में आचार भिन्न भी हो सकते हैं और अभिन्न भी। यह भी संभव है, कि आचारों के नाम पृथक हों, किन्तु उनका मूलभूत अर्थ तथा नियम समान होते हैं। याजवल्क्य ने श्रुति, स्मृति, सदाचार के साथ सम्यक् वांछा का निर्देश किया है -

**श्रुतिः स्मृतिः सदाचारः स्वस्य च प्रियमात्मनः ।
सम्यक् संकल्पं कामो धर्ममूलमिदं स्मृतम् ॥**

सदाचार के अन्तर्गत सत्यता, हितकर प्रथाएं, आचरण तथा नैतिक व्यवहार का सञ्चिवेश होता है। इस प्रकार धर्म का क्षेत्र अत्यन्त व्यापक तथा प्रशस्त है, जिसमें शुचिता, सत्यता, दया, अनसूया, शुभ के प्रति प्रवृत्ति, दानशीलता, सम्यक् श्रम एवं लोभहीनता स्वभावतः सञ्चिष्ट हो जाती है।

मानव जीवन में 'सत्य' की महत्ता अत्यधिक है। सत्य से ही व्यक्ति और समाज दोनों की ही उन्नति होती है। सत्य से श्रेष्ठ तो कुछ भी नहीं है -

जास्ति सत्यसमो धर्मो ना सत्याद्विद्यते परम् ।

सभी वस्तुओं का आधार सत्य है, जो समृद्धि को वर्द्धित करता है। असत्य से जीवन तथा मन कलुषित तथा समाज दूषित होता है। इसीलिए वेदों में कहा गया है -

'सत्यम् वद धर्मम् चर'

अर्थात् सत्य बोलो तथा धर्म का आचरण करो। कठिन से कठिन परिस्थिति में भी मनुष्य को सत्य का त्याग नहीं करना चाहिए।

माता, पिता तथा गुरु के प्रति श्रद्धा तथा आदर से न रहना चाहिए। जो अपने माता, पिता तथा गुरु का निरादर करते हैं, वे बहुत बड़े पाप के भागी होते हैं। उनके प्रति आदर तथा श्रद्धा व्यक्त करके ही व्यक्ति लोक व परलोक में विरच्यात होता है -

**मातापित्रोर्जुरुणां च पूजा बहुमता मम।
इह युक्त्वा नरो लोकान् वद्वश्च महदश्नुते॥**

जो व्यक्ति श्रद्धापूर्वक माता, पिता तथा गुरु की सेवा करता है, वह प्रमादहीन गृहस्थ तीनों लोकों को विजीत कर लेता है तथा अपने शरीर से दैदीप्यामन होता हुआ सूर्योदि देवताओं के समान स्वर्ग में आनन्द प्राप्त करता है -

**त्रिष्वप्रमाद्यज्ञैतेषु त्रील्लोकान्विजयेद्गृही।
दीप्यमानः स्ववृष्टु देववद्विवि मोदते॥**

प्राचीन काल में मनुष्य के सम्पूर्ण जीवन को विभिन्न स्तरों के साथ अनुशासन, संयम तथा नियम के अन्तर्गत रखा गया था, जिसे आश्रम व्यवस्था कहते थे। मनुष्य का सम्पूर्ण जीवन बाल्यावस्था से वृद्धावस्था तक, चार आश्रम में विभाजित किया गया - ब्रह्मचर्य, गृहस्थ वानप्रस्थ तथा सन्न्यास आश्रम।

★ ब्रह्मचर्य आश्रम के अन्तर्गत ब्रह्मचारी का यह धर्म निर्दिष्ट था, कि वह गुरु के सान्निध्य में रहकर वेदाध्ययन करे, सूर्योदय से पूर्व शश्या त्यागे, स्नानादि के पश्चात् वह संध्योपासना तथा गायत्री जप करे, निरामिष होते हुए प्रसाधन सामग्री, नारी स्पर्श, संगीत, नृत्य आदि से दूर रहे, इन्द्रियों को वश में रखे, गुरु सेवा करे तथा भिक्षाटन कर अपना तथा गुरु का पोषण करे -

**ब्रह्मचारी ब्रती नित्यं दीक्षापररे वशी।
परिचार्यं तथा वेदं कृत्यं कुर्वन् वसेत् सदा॥**

★ गृहस्थ का यह परम कर्तव्य था, कि वह त्रिवर्ग (धर्म, अर्थ व काम) का पालन करता हुआ गृहस्थ कार्यों को करे। गृहस्थ के लिए अहिंसा, सत्य वचन, शम, दान आदि उत्तम धर्म माना गया है -

**अहिंसा सत्यवचनं सर्वभूतानुकूलम्पनम्।
शमो दानं यथा शक्ति गर्हस्थ्यो धर्म उत्तमः॥**

★ विभिन्न ज्ञानों का सम्पादन गृहस्थ आश्रम के माध्यम से ही संभव था। पंच महायज्ञों की पूर्ति तथा संतानोत्पत्ति गृहस्थ

आश्रम में रहकर ही सम्पन्न की जाती रही है। देव-ऋण तथा पितृ-ऋण जैसे ऋणों से मुक्ति गृहस्थ आश्रम का अनुपालन करने से ही संभव थी।

★ गृहस्थ जीवन से अवकाश लेकर व्यक्ति वानप्रस्थ आश्रम में प्रवेश करता था। सांसारिक मोह-माया को त्याग कर एकान्त का आध्यात्मिक जीवन वानप्रस्थ आश्रम था। एक प्रकार से वानप्रस्थ आश्रम व्यक्ति के लिए सन्न्यास का प्रारम्भिक रूप था, जिसमें वह वन में रहकर संयम, त्याग, अनुशासन, धर्माचरण, सेवाभाव, तपश्चर्या आदि का अभ्यास करता था तथा विषय भोग पर नियंत्रण रखता था।

★ चतुर्थ आश्रम सन्न्यास आश्रम था। सन्न्यास आश्रम में प्रवेश करने वाला व्यक्ति सन्न्यासी (अथवा परिव्राजक) कहा जाता था, जो संसार से पूर्ण विरक्त होकर अपने को ईश्वर-भक्ति में लगाता था। उसे काम, क्रोध, मद, लोभ, मोह आदि का त्याग करना पड़ता था तथा सत्य, अहिंसा, अस्तेय, अपरिग्रह, ब्रह्मचर्य, शौच, संतोष, तप, स्वाध्याय, ईश्वर-प्रणिधान आदि का पालन करना पड़ता था।

युग अथवा काल के अनुरूप भी धर्म की नियोजना की गई, क्योंकि युग अथवा काल के अनुसार धर्म परिवर्तित होता रहता है। नैतिक नियम तथा आदर्श; युग के अनुसार बनते-बिगड़ते रहे हैं। सत्युग, व्रेतायुग, द्वापरयुग तथा कलियुग जैसे युग अपने-अपने युग धर्म तथा आदर्श को व्यक्त करते हैं -

**अन्ये कृत्युजे धर्मस्त्रेतायां द्वापरे परे।
अन्ये कलियुजे चैव यथा शक्ति कृता इव॥**

(महाभारत)

'सत्युग' तप धर्म के लिए, 'व्रेतायुग' ज्ञान धर्म के लिए, 'द्वापरयुग' यज्ञ धर्म के लिए तथा 'कलियुग' दान धर्म के लिए है। वस्तुतः समाज की नैतिकता, कार्यप्रणाली आचार-विचार, व्यवहार तथा सांस्कृतिक प्रतिमान में समय के अनुसार परिवर्तन होता रहता है, जिससे युग धर्म प्रभावित होता है। इससे स्पष्ट है, कि प्रत्येक युग के अपने धर्म हैं, जो दूसरे युग से भिन्न हैं। अपने कर्तव्यों का निष्ठापूर्वक पालन करना तथा परिवार के सदस्यों के प्रति सम्मान तथा यथोचित लगाव रखना ही स्व-धर्म है। दूसरे का धर्म चाहे कितना ही अच्छा क्यों न हो, उसकी अपेक्षा अपना धर्म ही अधिक श्रेयस्कर होता है, चाहे वह स्व-धर्म सदोष ही क्यों न हो -

**श्रेयान्स्वधर्मो विगुणः परधर्मात्स्वनुष्ठितात्।
स्वधर्मं निधनं श्रेयः परधर्मो भयावहः॥**

(गीता ३/३५)

ये धूम्र सत्त्व हैं

मंत्र अपना प्रभाव अवश्य देते हैं

मंत्र चेतना और साधक

मंत्रों के सम्बन्ध में अत्यधिक भ्रान्ति है, कोई कहता है मंत्र जप से कोई प्रभाव नहीं पड़ता, मंत्र तो केवल वर्णमाला के कुछ अक्षर हैं, कोई कहता है मंत्र जप से अत्यधिक चेतना आती है और साधना में सफलता प्राप्त होती है। किसी के अनुसार मंत्र जप से असाध्य रौग भी ठीक हो जाता है। आखिर मंत्र के मूल में क्या है? मंत्र जप से कैसे शक्ति प्राप्त होती है? मंत्र जप किस प्रकार करना चाहिए? प्रत्येक साधक को साधना के प्रारम्भिक रूप पर इन सारी वातों को जानकर मंत्र जप तथा साधना सम्पूर्ण करनी चाहिये क्योंकि साधना का आधार ही पूर्ण श्रद्धा, विश्वास और निष्ठा है।

इन्हीं सब प्रश्नों को खट्ट करता यह विवेचनात्मक आलेख -

मंत्र साधना का तात्पर्य मंत्रों का वाचन नहीं है। जो व्यक्ति पुस्तकों से मंत्रों का चयन करके अपना अभीष्ट पूरा करने की चेष्टा करते हैं, उन्हें यह अवश्य जात होना चाहिये, कि किसी भी मंत्र सिद्धि के दो मुख्य आधार होते हैं -

1. गुरु निर्देशन में सही मंत्र का चयन और 2. उसका स्पष्ट उच्चारण।

अन्य गौण आधार में साधक का व्यक्तित्व, विशिष्ट आसनों पर बैठकर मंत्र जप करना, प्रत्येक दिशा से आती हुई विशिष्ट ध्वनियों को ध्यान में रखते हुए साधना का समय दिशा निर्धारण करना इत्यादि।

मंत्र अपने आप में अक्षरों का गुंफन और उच्चारण की भाँति मंत्र का निर्माण भाव प्रधान या अर्थ प्रधान नहीं होता, अपितु इसका आधार अक्षरों के क्रम का एक निश्चित संयोजन है, जिससे कि उसके क्रमबद्ध उच्चारण से ऐसी विशिष्ट ध्वनि निःसृत होती है, जो अभीष्ट पूर्ति के लिए सफलता दायक हो। जिस प्रकार वीणा के तारों को एक निश्चित क्रम में छेड़ने पर ही एक विशेष राग की उत्पत्ति होती है, उसी प्रकार एक निश्चित लय और शब्दों से बंधे समूह को ही मंत्र कहा जा सकता है।

अब प्रश्न यह उठता है, कि मंत्रों को कैसे जपना चाहिये?

इसकी दो स्थितियां हैं - गोपन एवं स्फुट। वस्तुतः परमात्मलीन अथवा वर्चस्व तेजोद्रूप के लिए मंत्र जप मन ही

मन बिना प्रस्फुटन के होना चाहिये जबकि प्रयोगार्थ मंत्रों का प्रस्फुटन आवश्यक होता है। सामान्यतः साधक कामना पूर्ति हेतु ही साधना में प्रविष्ट होते हैं। अतः उन्हें मंत्रों का स्पष्ट उच्चारण करना चाहिये, क्योंकि मंत्र का शब्द संयोजन और साधक का विधिवत् उच्चारण, दोनों मिलकर ब्रह्माण्ड में एक विचित्र प्रकार की स्वर लहरी प्रवाहित करते हैं, जिससे मंत्रानुष्ठान में निश्चित सफलता प्राप्त होती है।

ध्वनि की महत्ता

यह विश्व दो रूपों में विभक्त है, जिसमें एक ग्राहक और दूसरा ग्राह्य है। जब तक इन दोनों का पूर्ण सम्पर्क नहीं हो जाता, तब तक मनोरथ सिद्धि भी संभव नहीं। ग्राहक और ग्राह्य में सम्पर्क का आधार मात्र ध्वनि ही है, जो होठों से निःसृत होकर पूरे ब्रह्माण्ड में फैल जाती है।

उदाहरण के तौर पर यदि सूर्य से सम्बन्धित किसी मंत्र के सही मंत्रोच्चारण से विशिष्ट ध्वनि कम्पन उत्पन्न होते हैं और ये कम्पन 'ईर्थर' के माध्यम से ऊपर उठते हुए क्षणांश में ही सूर्य तक पहुंच कर वापस लौट आते हैं। लौटते समय ये ध्वनि कम्पन सूर्य की सूक्ष्म शक्ति, तेजस्विता एवं गुणवत्ता से युक्त होते हैं, जो पुनः साधक के शरीर से टकराकर उसमें इन दिव्य गुणों के प्रभुत्व को बढ़ा देते हैं। फलस्वरूप सूर्य मंत्र की साधना से सूर्य से सम्बन्धित तेजस्विता साधक को प्राप्त हो जाती है।

वैज्ञानिकों ने भी स्वीकार किया है, कि ध्वनि (जो कि ऊर्जा ही है) के माध्यम से असम्भव कार्य भी सम्पन्न किये जा सकते हैं, परन्तु यह एक विशिष्ट ध्वनि हो। प्रत्येक ध्वनि प्रत्येक कार्य के लिए उपयुक्त नहीं।

मंत्र उच्चारण से भी एक विशिष्ट ध्वनि कम्पन बनता है, जो अवश्य ही साधक की समग्र चेतना को प्रभावित करता है।

मंत्र ध्वनि का कम्पन 'ईर्थर' से मिलकर सम्पूर्ण अंतरिक्ष में व्याप होते हुए परिस्थितियों को अनुकूल बनाता है तथा शरीर के प्रत्येक रोम, स्थूल व सूक्ष्म शरीर नाड़ी गुच्छकों तथा सूक्ष्म शरीरस्थ चक्रों पर इन मंत्र ध्वनियों का प्रभाव पड़ता है।

फलस्वरूप इडा, पिंगला व सुषुम्ना जैसी प्रमुख नाड़ियों में विद्युत प्रवाह होने से पूरा वातावरण आप्लावित हो जाता है।

यह स्पष्ट है, कि शब्द या उसके अर्थ मंत्र साधना में विशेष महत्व नहीं रखते, अपितु एक विशेष लय या ध्वनि महत्वपूर्ण स्थान रखती है। किसी शब्द की मूल ध्वनि क्या है, जिससे कि इसका निश्चित और स्थाई प्रभाव पड़ सके, यह पुस्तक के निर्जीव पृष्ठ नहीं बता सकते।

यहां पर गुरु आज्ञा की नितान्त अनिवार्यता है, क्योंकि वही उच्चारण करके उस मंत्र की मूल ध्वनि को समझ सकता है।

इसीलिये हमारे शास्त्रों में जोर देकर कहा गया है, कि गुरुमुख से उच्चारित मंत्र की ही साधना करनी चाहिये।

मंत्रों की सामर्थ्य

यहां यह प्रश्न उठता है -

- ★ मंत्रों की शक्ति का स्रोत क्या है?
- ★ कहां से वे अपनी शक्ति प्राप्त करते हैं?
- ★ क्या साधक से या सम्बन्धित देवी-देवता से या वे स्वयं ही शक्तियों को समाहित किये हुए होते हैं?

वस्तुतः: जब साधक मंत्र साधना में संलग्न होता है, तो उसकी स्वयं की अन्तश्चेतना (अन्तर्मन) ही उसके लिये सर्वाधिक सहायक होती है।

जब वह विशिष्ट मंत्र साधक की अन्तश्चेतना के साथ आप्लावित होता है, तभी वह मंत्र जाग्रत व प्राणवान होकर फलदायक बनता है। अतः मंत्रों की सामर्थ्य का कोई बाह्य स्रोत नहीं है, अपितु वह शक्ति उसके भीतर से ही आती है। व्यक्ति अपने प्रयत्नों से अपनी अन्तश्चेतना को अधिक से अधिक सक्रिय कर सकता है और उसे इसके लिये सतत अभ्यास करना भी चाहिये, क्योंकि हमारे साधना क्षेत्र की आधारभूत यह अन्तश्चेतना ही है, जिसके उत्थान से और उपयोग से हम मंत्र में चैतन्यता दे सकते हैं।

चक्रों की भूमिका

हमारे पवित्र ग्रन्थों में वाक् साधना को ही आत्मविद्या प्रधान आधार माना गया है। उसके अनुसार साधक को मन, वचन और कर्म से एक विशेष उच्च स्तर का समन्वय करना पड़ता है, जिससे कि मंत्र का प्रभाव सही रूप से और प्रभावपूर्ण ढंग से हो। मंत्र हमारे चेतन शरीर के साथ-साथ अवचेतन मन से भी सम्पर्कित रहता है; अतः मन के चक्रों से जब तक शब्द सही प्रकार से नहीं टकराते, तब तक उसका विशिष्ट प्रभाव ज्ञात नहीं होता।

मंत्र विशेष शरीर के किस चक्र से टकराकर पुनः होठों से बाहर निकले, यह मंत्रों के वर्गीकरण का मूल आधार है।

अक्षरों को जैरो-तैरो संयोजित करके मुँह से उनकी ध्वनि निकाल देने मात्र से ही काव्य नहीं बन जाते। वीर रस की कविता को बुद्धुदा कर पढ़ने से उसका प्रभाव ही समाप्त हो जाता है। इसी प्रकार मंत्र भी न तो मात्र अपने तरीके से उच्चरित किये जा सकते हैं और न उन्हें सामान्य वाक्यांश ही माना जा सकता है। - तो फिर - मंत्र है क्या? मंत्र साधना केरो करें? प्रत्यनुत लेख में इन्हीं तथ्यों पर प्रकाश डाला गया है।

इसलिये यह आवश्यक है कि शरीरस्थ चक्र विशेष से ही मंत्र की ध्वनि टकराये और इसी उद्देश्य की पूर्ति के लिये विशेष आसनों का विधान है।

आसन विधान

यह रहस्य की बात है, कि निश्चित आसन पर बैठने से एक निश्चित चक्र उत्तेजित रहता है। फलस्वरूप उस समय, जब हम ध्वनि उच्चारण करते हैं, तो अन्य चक्र सुसावस्था में रहते हैं, परन्तु जो चक्र उत्तेजित होता है, उसी से वह वाणी टकराकर बाहर निकलती है, जिसके परिणामस्वरूप उस मंत्र में एक विशेष प्रभाव आ जाता है। इस प्रकार की ध्वनि ही सही अर्थों में मंत्र कहलाती है और इसी ध्वनि शक्ति से चमत्कारिक घटनाएं घटित होती हैं।

दिशा निर्धारण

साधना में सफलता हेतु जहां एक ओर साधक का प्रखर व्यक्तित्व कार्य करता है, वहां उसके वचन और कर्म का संयोजन भी महत्वपूर्ण होता है। साथ ही साथ मंत्र का लययुक्त सही उच्चारण, उसका आरोह-अवरोह तथा सही आसन आवश्यक है। वैज्ञानिकों के अनुसार प्रत्येक दिशा से विशिष्ट ध्वनि तरंगें प्रवाहित होती रहती हैं।

अतः यदि हमारी दिशा ध्वनि तरंग के अनुरूप होती है, तो मंत्र सफलता देता है, परन्तु यदि हमारी दिशा ध्वनि तरंगों में अवरोध उत्पन्न करती है, तो सही प्रभाव नहीं हो पाता। इसीलिए साधक के लिए उचित दिशा की ओर मुँह करके बैठना भी आवश्यक माना गया है।

यदि सही रूप में मंत्र साधना की जाय, तो सफलता में तनिक भी सदेह नहीं होता, परन्तु ये सारे क्रम व्यावहारिक हैं, अतः सद्गुरु के द्वारा ही सही ज्ञान और सही उच्चारण प्राप्त हो सकता है। इस प्रकार साधक, मन, वचन, कर्म से एकनिष्ठ होकर मंत्र साधना में प्रवृत्त हो, तो उसे निश्चय ही पूर्ण सफलता प्राप्त होती है।

सम्प्रदाय के योगियों ने जनजीवन को प्रदान किया, जिससे जनजीवन अपने धर्म को पूर्ण रूप से समझ सकें, और साधना के माध्यम से अपने जीवन को उच्चता की ओर ले जा सकें।

तंत्र विद्या का जिस प्रकार से विकास हुआ, उसमें गुरु शिष्य परम्परा प्रमुख रही, गुरुओं ने अपने शिष्यों को परखा, उनकी बार-बार परीक्षा ली और जो उनकी कसौटी पर खरा उतरा, उसे अपने ज्ञान-सागर में से कुछ विशेष तंत्र विद्याएं प्रदान की और इसी प्रकार तंत्र विद्या का विकास हुआ। प्राचीन काल से ही गुरु अपने शिष्यों को शपथ दिला देते थे, कि इस तंत्र-ज्ञान का प्रयोग किसी भी प्रकार से गलत कार्यों हेतु न किया जाए और न ही इसे पुस्तक रूप में लिपिबद्ध करके, सर्वसाधारणजन के लिए उपलब्ध कराया जाय, इसी कारण कुछ विशेष तंत्रज्ञों के पास ही यह ज्ञान रह गया और उन श्रेष्ठ तंत्र वेत्ताओं ने योग्य शिष्यों के अभाव में अपना विशेष ज्ञान आगे दिया ही नहीं।

‘भैरुण्डा तंत्र’ इस महाविज्ञान का एक ऐसा स्वरूप है, जो अब तक अत्यन्त गुम ही रहा है। यह तंत्र जीवन के सभी स्वरूपों को स्पष्ट करते हुए व्यक्तित्व, शौर्य, आनन्द, गृहस्थ सुख, मानसिक सुख, शत्रु विजय, वशीकरण, कामनापूर्ति, काम-विकास, परिपूर्णता आदि प्रत्येक के सम्बन्ध में विकास किस प्रकार संभव है, स्पष्ट करता है। इस विशेष तंत्र के जितने भी योगी हैं, वे पूर्ण पुरुष हैं, उनकी शरीरिक एवं मानसिक शक्ति इतनी प्रबल रहती है, कि वे अपनी इच्छानुसार जीवन जीते हैं। अत्यन्त कम लोगों की जानकारी में रहने के कारण इस तंत्र का दुरुपयोग नहीं हुआ है।

भैरुण्डा तंत्रः चमटकारिक तंत्र

‘भैरुण्डा तंत्र’ ऐसा विशेष शक्तिपात तंत्र है, जो सभी प्रकार की शक्तियों को अपने भीतर समेटे हुए है। इस तंत्र की साधना व्यक्ति को विशेष सौन्दर्य, व सम्मोहन दिलाने में समर्थ है। इसकी साधना व्यक्ति में वशीकरण की वह शक्ति उत्पन्न कर देती है, कि कोई भी उसके प्रभाव से अद्भुता नहीं रह सकता। इसके प्रभाव से व्यक्ति का काम-जीवन अत्यन्त श्रेष्ठ एवं सुखकारक बन जाता है, इसके ज्ञान से साधक को हर क्षेत्र में विजय प्राप्त होती है, शत्रुओं पर विजय प्राप्त करने के लिए उसे असीमित शक्ति प्राप्त हो जाती है।

भैरुण्डा तंत्र ऐसी विशेष शक्तियों के स्वरूप की साधना है, जो कि पूर्ण विधि-विधान सहित, साधक द्वारा साधना करने पर सिद्ध होती है, और साधक जिस समय अपने विशेष कार्य के लिए जिस भैरुण्डा शक्ति की विशेष साधना करता है, वह

उसमें समाहित होकर उसका कार्य पूर्ण कर देती है, अलग-अलग प्रकार के कार्यों के लिए अलग-अलग शक्तियों का उपयोग आवश्यक है, और यही भैरुण्डा तंत्र की विशेषता भी है। भैरुण्डा की विशेष शक्तियाँ हैं-

कामेश्वरी, महाविद्येश्वरी, भगमालिनी, नित्यकिलन्ना, वन्निवासिनी, शिवदूती, त्वारिता, कुलसुन्दरी, नित्या, नीलपताकिनी, विजया, सर्वमंगला, ज्वालामालिनी, विचित्रा।

इस प्रकार ये चौदह शक्तियाँ भैरुण्डा शक्तियाँ कही जाती हैं, इसमें प्रत्येक शक्ति का कार्य, साधना-प्रभाव, मंत्र अलग-अलग हैं, ये प्रचण्ड शक्तियाँ नियम पूर्वक साधना पूर्ण करने से ही साधक के वश में जाती हैं, फिर साधक स्वयं शक्तिपुंज बन जाता है।

भैरुण्डा शक्तियों की साधना के लिए यह आवश्यक है, कि साधक इनकी साधना बिना किसी को बताए करें, किसी भी रूप में, मजाक में लेते हुए अथवा केवल आजमाने के लिए इसकी साधना नहीं करें, और न ही इसका प्रचार व्यंग्य के रूप में करें। शक्ति उसे ही प्राप्त होती है, जो कि पूर्ण श्रद्धा से शक्ति को अपने भीतर समाहित करना चाहता है।

शक्ति स्त्री स्वरूपा होती है, और निरन्तर साधना से इसे वश में रखा जा सकता है, यह बात विशेष रूप से ध्यान रखने योग्य है। जब भी कोई साधक साधना में निश्चिन्त हो जाता है और यह मान लेता है, कि एक बार सिद्ध हो जाने के पश्चात वह इस शक्ति का कभी भी उपयोग कर लेगा, तो वह भूल करता है।

यहाँ भैरुण्डा तंत्र की दो विशेष शक्तियों; महाविद्येश्वरी एवं नीलपताकिनी देवी की साधनाओं के स्वरूप को ही स्पष्ट किया जाएगा। दोनों की साधना विधि अलग-अलग हैं।

भैरुण्डा महाविद्येश्वरी साधना

जब बुद्धि, ज्ञान और परिश्रम का संयोग नहीं बन पाता है, तो कार्य सफल नहीं होते हैं। वाणी ऐसी होनी चाहिए कि जिससे कोई बात कहें, वह पूर्ण रूप से प्रभावित हो जाए, इच्छित कार्य होना ही चाहिए, साथ ही बुद्धि में इतनी तीव्रता होनी चाहिए, कि दूसरे के विचारों को, भावों को भांप सकें और किस क्षण क्या करना है - ऐसा होना चाहिए। जीवन में उन्नति शरीर-बल के माध्यम से नहीं अपितु बुद्धि बल के माध्यम से ही प्राप्त हो सकती है।

इस साधना से साधक की बुद्धि प्रखर हो जाती है, उसके

को पढ़ लेता है और इस प्रकार वह हर आसन्न घड़यंत्रों, कुचक्रों और धोखाधड़ी से पहले ही सावधान हो जाता है। इसके साथ ही उसकी वाणी में ओजस्विता आ जाती है और वह जो कहता है, लोग उसे मानने को बाध्य होते ही हैं।
मूलतः यह शरीर बल को नहीं, अपितु मानसिक एवं योग शक्तियों को जाग्रत करने की अद्वितीय साधना है।

‘गुप्त भैरुण्डा तंत्र’ में महाविद्येश्वरी साधना का विशेष स्थान है, इसके बीज मंत्र में कुछ ऐसा अक्षर विन्यास है, कि साधक चैतन्य हो जाता है, उसकी योगजनित अतीन्द्रिय शक्तियों का विकास होने लगता है, किसी को देखते ही वह उसके आने का उद्देश्य समझ जाता है, उसके चरित्र की पूरी रूप-रेखा उसके सामने उतर आती है।

अतीन्द्रिय शक्ति जागरण साधना विधि

यह विशेष साधना कृष्ण पक्ष में किसी गुरुवार को सम्पन्न की जा सकती है। इस साधना में विशेष रूप से ‘भैरुण्डा चैतन्य महाविद्येश्वरी शंख’ तथा ‘दो भैरुण्डा चक्र’ आवश्यक हैं, यह साधना सात्त्विक साधना है। सूर्योदय के पहले ही साधक स्नान कर, श्वेत वस्त्र धारण कर, अपने पूजा स्थान में बीचोबीच सामने चौकी पर श्वेत वस्त्र बिछाकर चावल की ढेरी बना लें। उस पर भैरुण्डा शंख को स्थापित करें और उसके दोनों ओर एक-एक ‘चक्र’ स्थापित करें। अगर बट्टी व धी का दीपक जला दें, फिर जलपात्र में थोड़ी केशर तथा चन्दन डाल कर, दाहिने हाथ की उंगलियों से भूमि पर तथा सब दिशाओं में छींटा मारें, फिर स्थान ग्रहण करें।

स्थान पर बैठने के बाद दोनों भैरुण्डा चक्रों पर कुंकुम से टीका लगाएं। शंख के भीतर अष्टगंध, चावल और लौंग अर्पित करें, अब शंख के दोनों ओर कुंकुम से ‘हीं’ लिखें और पूजन कर संकल्प करते हुए दाएं हाथ में जल लेकर भूमि पर छोड़ दें।

भैरुण्डा अतीन्द्रिय शक्ति जागरण मंत्र

॥उ० हीं अतीन्द्रियं जाग्रय मदद्रवे वर्तीं उ० एट् ॥

अब अपने हाथ में चावल के दाने लेकर, एक बार यही मंत्र बोलकर चावल एक ओर फेंक दें। इस प्रकार इस मंत्र का



108 बार जप करना है। जप के बाद शंख में अर्पित किया अष्टगंध अपने कण्ठ, दोनों कानों, दोनों भौंहों, मस्तक व हृदय पर लगाएं। पांच दिन तक नित्य इसी क्रम को दोहराएं, बाद में शंख व चक्रों को हटाकर अपने पूजा स्थान में रख दें। नित्य एक बार इस मंत्र का उच्चारण अवश्य करें।

साधना सामग्री पैकेट - 300/-

* * * * *

भैरुण्डा नीलपताकी नी साधना

यह साधना मूलतः भाग्योदय के लिए सम्पन्न की जाती है। कहते हैं, भाग्य जब रुठ जाता है, तब अपने भी बेगाने हो जाते हैं। विधाता के लेख को तो महापुरुषों को भी झेलना पड़ा है, फिर सामान्य मनुष्य का यदि भाग्य साथ न दे तो उसमें आश्चर्य नहीं है।

जब व्यक्ति के ग्रहों का समीकरण ही उलटा-पुलटा बैठा हो, तो उन ग्रहों के प्रभाव को अनुकूल बनाने के लिए कुछ न कुछ तो करना ही पड़ेगा और इसी को भाग्योदय साधना या नवग्रह शान्ति साधना प्रयोग आदि की संज्ञा दी जाती है। यदि भाग्य कुछ नहीं होता, तो क्यों राम को वनवास में दर-दर भटकना पड़ता, क्या रावण का संहार वे यों ही नहीं कर सकते थे? क्यों पाण्डवों को वनवास भोगना पड़ा? आखिर अंत में तो वे ही विजयी हुए, परन्तु उनके जीवन में ग्रह नक्षत्रों का संयोग ऐसा था, कि उन्हें भाग्य के आगे झुकना पड़ा।

योगी और ऋषि प्रायः विधि के लेखे में और प्रकृति के नियमों में हस्तक्षेप करना पसन्द नहीं करते हैं, परन्तु जो तंत्र सिद्ध पुरुष होते हैं, वे तो अपनी शक्तियों का उपयोग करते ही हैं, वे भाग्य को भी अपने आगे झुका देने में ही जीवन की धन्यता अनुभव करते हैं।

क्यों आपकी उत्तरि नहीं हो पाती है? क्यों आपको ही असफलता का मुख देखना पड़ता है? क्यों आपका ही परिवार अभाव ग्रस्त है? ऐसा तो नहीं है, कि आप दिन भर में औरैं की अपेक्षा कम परिश्रम करते हैं, फिर क्या बात है, कि आप अभी भी वहीं पर हैं, जहां आज से पांच वर्ष पूर्व थे, जबकि

आपसे पीछे के कई लोग बहुत आगे निकल चुके हैं? और जब भाग्य क्षीण हो, तो साधनाओं में भी सफलता नहीं मिल पाती।

जब भाग्यहीन व्यक्ति को कहीं से भी सहायता नहीं प्राप्त होती; ऐसे में भैरुण्डा तंत्र की नीलपताकिनी साधना पूर्ण भाग्योदय का कार्य करती है। यदि साधक इस साधना को सम्पन्न कर ले, और फिर किसी कार्य को हाथ में ले, तो उसे सफलता मिलती है, फिर उसका भाग्योदय आड़े नहीं आता।

भारयोदय साधना विधान

‘नीलपताकिनी साधना’ कृष्ण पक्ष के किसी भी मंगलवार से प्रारम्भ की जा सकता है। यह रात्रिकालीन साधना है। इस साधना में भैरुण्डा तंत्र पञ्चति से मंत्र सिद्ध की गई जिन सामग्रियों की विशेष रूप से आवश्यकता है, वे इस प्रकार हैं - ‘नीलपताकिनी विघ्रह’, भैरुण्डा ग्रहबीज और भाग्योदय सिद्धिफल। इस साधना में किसी प्रकार की माला की आवश्यकता नहीं है। इस साधना में गाय के दूध की आवश्यकता होती है।

रात्रि को 9 बजे के बाद किसी थाली में कुंकुम का पूरी तरह लेप कर लें। अब थाली के बीच में नीलपताकिनी कंकण और भाग्योदय सिद्धिफल स्थापित करें। थाली में ही आठों दिशाओं में एक-एक ‘भैरुण्डा ग्रहबीज’ को भी स्थापित कर दें। एक ग्रहबीज को मध्य में स्थापित करें। थाली के कई ओर धूप-दीप प्रज्ज्वलित करें।

जिस प्रकार घड़ी चलती है, उसी प्रकार एक-एक चम्मच गाय का दूध आठों दिशाओं में थाली में ग्रहबीज के ऊपर चढ़ाते जाएं। आठों दिशाओं में एक-एक चम्मच दुग्ध अर्पण करने के बाद मध्य में रखे ग्रहबीज पर भी दुग्ध अर्पित करें। यह एक चक हुआ। प्रत्येक दुग्धार्पण के साथ एक बार निम्न मंत्र का उच्चारण अवश्य करें -

भैरुण्डा नीलपताकिनी भाग्योदय मंत्र
 ॥ॐ एं भाग्योदयं कुरु कुरु नीलपताकिन्द्रै
 फट ॥

इस तरह एक पाव (1/4 किलो) दूध अर्पित करें। इसके बाद पुनः उपरोक्त मंत्र का बिना माला के 32 मिनट तक जप करें। साधना के बाद थाली के दूध को किसी वृक्ष (केले का वृक्ष हो तो ज्यादा उत्तम है) की जड़ में अर्पित कर दें। ऐसा 7 दिन तक करें। इसके बाद समस्त सामग्री को जल में विसर्जित कर दें।

साधना सामग्री - 330/-

इन दोनों तंत्र साधनाओं को गृहस्थ व्यक्ति सम्पन्न कर अपने व्यक्तित्व को उच्चता के शिखर पर ले जा सकते हैं, ये तंत्र की श्रेष्ठ साधनाएं हैं।

श्रृंग गुरु गति पार लगावें श्रृंग

क्योंकि गुरु ही देते हैं तंत्र का ज्ञान
 और माध्यम है -

शक्तिपात

तंत्र कोई मारण, मोहन, वशीकरण, उच्चाटन आदि को नहीं कहते, अपितु सुव्यवस्थित (systematic) ढंग से किसी कार्य को सम्पादित करने की एक प्रणाली को तंत्र (system) कहते हैं। तंत्र की इस सुव्यवस्थित प्रणाली के अन्तर्गत शक्ति तत्व की अनिवार्यता को आरम्भ से ही श्रेष्ठ गुरुओं ने अनुभव किया, इसीलिए दीक्षा जैसी क्रियाओं का वर्णन शास्त्रों में मिलता है -

दीक्षाग्निदण्डस्तौ मात्याविच्छिन्नबन्धनैः ।
 गतस्तस्य कर्मबन्धः लिर्जिवस्तु शिवो भवेत् ॥

ज्ञान की परम्परा को अक्षुण्ण रखने के लिए शक्ति गुरुजनों के शिष्यों के अन्तः में ज्यों की त्यों स्थापित करने के लिए दीक्षा जैसी प्रक्रिया का प्रतिपादन किया, ‘शक्तिपात’ जैसी क्रिया को विकसित किया। शक्तिपात जैसी सुव्यवस्थित (तंत्रमय) क्रिया स्वतः ही प्रमाण है, इस बात कि शक्ति तत्व का कितना अधिक महत्व है तंत्र साधनाओं में।

‘शक्तिपात’ में गुरु अपनी शक्ति को साधक में स्थापित कर उसको शक्तिसम्पन्न बना देते हैं, जिससे वह स्वयं साधनाओं के क्षेत्र में बढ़ कर सफल हो सके, वह प्राप्त कर सके जो उसका अभीष्ट है। आज भी जो श्रेष्ठ साधक हैं, वे योग्य गुरु से समय-समय पर शक्तिपात प्राप्त करते हुए तंत्र के क्षेत्र में, साधनाओं के क्षेत्र में एक-एक कदम आगे बढ़ते रहते हैं।

बिना दीक्षा के समर्त साधना कर्म व्यर्थ है, इसके कहने के पीछे मन्त्रव्य यहीं है, कि तंत्र में शक्ति की अनिवार्यता निर्विवाद है और ‘शक्तिपात’ तंत्र के शक्ति तत्व के महत्व को दर्शाता हुआ सुन्दरतम्

निरूपण है, जो आज भी पूज्यपाद गुरुदेव की परम्परा में मुमुक्षुओं को उपलब्ध है।

रामदृष्ट गाथा का वार्ता

इस प्रकार समुद्र मंथन से चौदह रत्नों के उत्पत्ति की जो कथा है, उसको हम यदि विस्तार से समझें तभी कई बातें स्पष्ट हो सकती हैं। गीता में भगवान् श्रीकृष्ण ने मनुष्य के जीवन के बारे में कहा है -

**आपूर्यमाण चल प्रतिष्ठित समुद्रमायः प्रविशन्ति यद्धत् ।
तद्वत्काया यं प्रविशन्ति सर्वे, स शान्ति मास्त्वयोति न कामकामी॥**

(श्रीमद्भगवद्गीता 3/60)

अर्थात् जिस प्रकार विभिन्न नदियों के जल अचल प्रतिष्ठा वाले समुद्र में विलीन होकर भी समुद्र को विचलित नहीं करते हुए उसमें समाहित हो जाते हैं, उसी प्रकार मनुष्य को जीवन में सभी भोग प्राप्त करते हुए भी विकार उत्पन्न नहीं करने चाहिए। जो ऐसा कर सकता है, वही पुरुष पूर्णता को प्राप्त कर सकता है, परम शांति का अनुभव कर सकता है।

इसी प्रकार मन रूपी समुद्र का मंथन आवश्यक है और मंथन करने के लिए परिश्रम आवश्यक है, इतना परिश्रम कि उस समय देवताओं और राक्षसों ने मंदराचल पर्वत को उठाकर मंथन किया। जब परिश्रम से मंथन होता है, और उसके साथ बुद्धि और विचार शक्ति को प्रयोग में लाया जाता है, तो मनुष्य के जीवन में रत्नों की उत्पत्ति हो सकती है। जीवन में प्रतिष्ठा रूपी ऐरावत अर्थात् वाहन प्राप्त हो सकता है, धन्वंतरी अर्थात् 'आरोग्य' प्राप्त हो सकता है, शत्रुओं को परास्त करने वाला 'उच्चैश्रवा घोड़ा' प्राप्त हो सकता है, कार्य सिद्धि के लिए कामधेनु रूपी कला प्राप्त हो सकती है, और इच्छापूर्ति के रूप में कल्पवृक्ष प्राप्त हो सकता है।

इसके साथ ही मंथन और परिश्रम करते हुए बल और बुद्धि से जीवन में विषमता रूपी विष भी प्राप्त हो सकता है। उस विष को अर्थात् विपरीत परिस्थितियों में धारण करते हुए भी जो निरंतर कार्यशील रहता है, उसे ही अंत में पूर्णता रूपी लक्ष्मी व अमृत प्राप्त हो सकते हैं, जिसके द्वारा वह मृत्यु से अमृत्यु की ओर जा सकता है।

आज भारतवर्ष में एक लाख से अधिक व्यक्ति करोड़पति हैं और लाखों करोड़पति हुए हैं। वे आए और चले गए। वे केवल लक्ष्मी के माध्यम से अमर नहीं हो सके, लेकिन उनमें से जिनके भी जीवन में लक्ष्मी के साथ नम्रता, कीर्ति, उत्कृष्टि, ऋद्धि और दया रही है, जिन्होंने समाज के लिए उपयोगी कार्य किए, जिन्होंने शिक्षा केन्द्र बनवाए, अस्पताल बनवाए, मन्दिर बनवाए, अर्थात् जिन्होंने भी लक्ष्मी का उपयोग समाज की उन्नति के लिए किया, केवल वे ही अमर हो सके।

लक्ष्मी साधना के इस विवेचन को प्रत्येक साधक को अपनी स्थिति के अनुसार विवेचन करना है, उसके सूत्रों को जीवन में उतारना है। प्रत्येक साधक को अपने जीवन रूपी समुद्र का परिश्रम के साथ मंथन करना है। प्रत्येक साधक को अपने जीवन में लक्ष्मी की भगिनी अलक्ष्मी को हटाने के लिए शुद्ध और सात्त्विक संकल्प लेना है, हृदय में तुष्टि और दया का विकास करना है।

शुभ कार्य के लिए तीन बातें आवश्यक हैं - संकल्प, समय और स्थान। व्यक्ति का घर ही मन्दिर जैसा शुभ स्थान होता है क्योंकि वहीं वह अपने जीवन में नित्य निर्माण-विध्वंस करता रहता है। संकल्प का तात्पर्य है - मानसिक दृढ़ता अर्थात् जो कार्य में हाथ में ले रहा हूं, उसे पूरा करूंगा ही, और समय का तात्पर्य है कि हम जीवन रूपी सृष्टि में विचरण करने वाले ग्रहों को अपने अनुरूप रखते हुए उचित काल खण्ड में कार्य करें।

भर्तृहरि ने अपने नीति श्लोक में कहा भी है -

**कदपि तस्यापि हि शैर्य वृते नृशक्यते शैर्यगुणा प्रपास्वर्म।
अद्येमुखस्यापि कृतस्य वहने नदिः शिखायाति कदाचिदेन॥**

अर्थात् कैसा भी कष्ट क्यों न आ पड़े, यौवनवान् पुरुष धैर्य को नहीं छोड़ता है। अग्नि की ज्वाला कितनी भी नीची कर दी जाय, परन्तु वह ऊपर को ही जाती है।

ऐसा ही जीवन भाव और कार्य प्रत्येक मनुष्य का होना चाहिये, जिससे जीवन में उन्नति प्राप्त हो।

अष्ट सिद्धियों की प्राप्ति हेतु

यद्वा साधना

शार्थ चंद्र

वशीकरण चंत्र

महामृत्युंजय चंत्र

विवाद जय चंत्र

दाज्य-बाधा-निवारण चंत्र

गृह शादित चंत्र

शत्रु विजय चंत्र

सौभाग्य प्रदायक चंत्र

कार्तवीर्यार्जुन चंत्र

जिस प्रकार सामान्य प्राणियों के रहने के लिए अनेक घर होते हैं, उसी प्रकार देवताओं के निवास योग्य विशिष्ट स्थान या गृह होते हैं - यंत्र ऐसे ही पवित्र गृह होते हैं जहां देवता निवास कर सकें। यंत्रों को शास्त्रों में 'देवनगर' नाम से सम्बोधित किया गया है। (यंत्र लेखन में प्रयुक्त लिपि को इसी कारण देवनागरी कहा जाने लगा, जो कि आज कई भारतीय भाषाओं की लिपि है) इन देवनगरों में न केवल अकेले देव का ही आवास होता है, अपितु प्रत्येक देव के अधिदेव, प्रत्यधिदेव, सहायक शक्तियों का भी आवास होता है। अतः यंत्र केवल कुछ रेखाओं का समूह मात्र न होकर साक्षात् देवताओं का सपरिवार 'आवासगृह' है, इस तथ्य को समझे बिना साधना में सफलता असंदिग्ध ही रहती है। इन गृहों में आमंत्रण प्राप्त कर देवता अवस्थित होते हैं और साधक की मनोकामना पूर्ति हेतु सहायक सिद्ध होते हुए आशीर्वाद प्रदान करते हैं।

तंत्रं मंत्रमयं प्रोक्तं देवतैव हि ।

देहात्मानोर्यथा तरो भेदो यंत्रं देवतायोस्तथा ॥

देवता के विग्रह या शरीर रूप में ही यंत्र की भावना करनी

चाहिए। यंत्र की पूजा किए बिना देवता प्रसन्न नहीं होते।

जीवन में आ रहे संकटों, दुःखों व समस्याओं पर नियंत्रण करने में सक्षम होने के कारण इसे यंत्र कहा गया है।

यंत्र लेखन में आवश्यक तथ्य

आगे कुछ यंत्रों का उल्लेख किया जा रहा है, जिनका साधक स्वयं निर्माण कर साधना सम्पन्न कर अभीष्ट फल प्राप्त कर सकते हैं। यदि विशेष रूप से कोई निर्देश नहीं हो, तो इन सामान्य नियमों का यंत्र लेखन में उपयोग किया जा सकता है -

1. यंत्र लेखन में प्रयुक्त स्याही - शास्त्रों में अनेक पदार्थों का विवरण प्राप्त होता है, किन्तु सामान्य रूप में इन यंत्रों को अष्टगन्ध अथवा गन्धव्रय (कुंकुम, सिन्दूर व हल्दी) को पानी में घोल कर बना सकते हैं।

2. लेखनी का चयन - यंत्र लेखन के लिए चांदी की शलाका का प्रयोग कर सकते हैं अथवा अनार, नीम, आम आदि की कलम द्वारा यंत्र का अंकन किया जा सकता है।

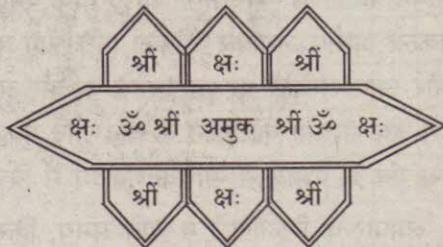
3. यंत्र किस पर अंकित करें - यंत्र को भोजपत्र अथवा

- यंत्र लेखन मुहूर्त - किसी भी श्रेष्ठ समय ('मैं समय हूँ' स्तम्भ से अथवा 'काल निर्णय' से) में यंत्र बनाना चाहिए।
- यंत्र बनाते समय धूप एवं अगरबती जलती रहनी चाहिए तथा मन में कोई अशुभ विचार नहीं लाना चाहिए।
- यंत्र निर्माण करते समय यंत्र से उस साधना से सम्बन्धित मंत्र अथवा गुरु मंत्र का मौन रहते हुए जप करते रहें।

किसी भी कार्य को सुचारू रूप से पूर्ण कर पाना सम्बन्धित उपकरणों के बिना सम्भव नहीं है - ऐसे ही आवश्यक उपकरणों को यंत्र कहते हैं, जो मात्र कुछ अक्षर एवं आकृतियों के समूह न होकर आवास्त होते हैं, देव शक्तियों के, जिनके माध्यम से साधक को मनोनुकूल आशीर्वाद प्राप्त होता है।

1. वशीकरण यंत्र

एक छोटे से बालक के चैहरे में ऐसा क्या होता है, जो प्रत्येक व्यक्ति को उसे गोद में उठाने को विवश कर देता है, जबकि वह छोटा शिशु न तो बोल ही पाता है, और न ही अपनी कोई बात कह सकता है, परन्तु फिर भी उसको सबका प्यार मिलता है - यह उसके अन्दर ईश्वर प्रदत्त शक्ति के कारण ही होता है, जो बड़े होने पर कुसंस्कारों एवं विचारों के आधारों से समाप्त हो जाती है। यदि व्यक्ति में वशीकरण हो, तो उसके जीवन में प्रत्येक व्यक्ति से अनुकूलता ही मिलती है।



इस यंत्र को सफेद सूती कपड़े पर गन्धत्रय से लिखकर, बनाकर यदि मनोयोग से पूजन किया जाए, तो साधक के व्यक्तित्व में वशीकरण शक्ति का विकास होने लगता है, जिससे लोग बिना ना नुकर किए एक बार कहने पर ही अपना सहयोग प्रदान करते हैं। अधिकारी उसके अनुकूल रहते हैं, परिचितजनों में उसे सम्मान प्राप्त होता है।

इस यंत्र के मध्य जहां अमुक लिखा है, वहां 'सर्वजन' लिखें यदि सर्वजन का वशीकरण करना है। यदि किसी पुरुष अथवा स्त्री विशेष को अपने अनुकूल बनाना है, तो उसका नाम अंकित करें।

यंत्र में चार स्थानों पर 'क्षः' बीज अंकित है, इन चारों पर एक-एक 'ब्रीडा' स्थापित करें। फिर यंत्र का कुंकुम, अक्षत, पुष्प आदि से पूजन करें तथा पश्चिम दिशा की ओर मुख करके बिना माला के सस्वर निम्न मंत्र का जप करें -

वशीकरण मंत्र

॥ ॐ श्रीं हीं हुं वशमालय कर्त्तीं ॐ फट् ॥

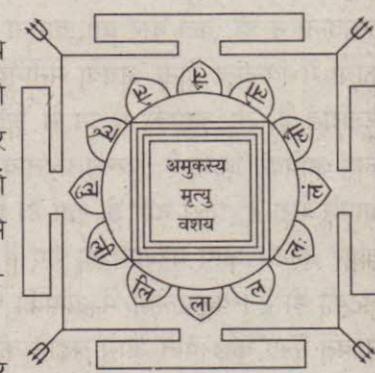
यह 7 दिन की साधना है, आठवें दिन चारों 'ब्रीडा' को यंत्र में लपेट कर मौली से बांध कर जल में प्रवाहित करें।

साधना सामग्री पैकेट - 150/-

☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆

2. महामृत्युंजय यंत्र

कई बार ऐसी स्थितियां जीवन में आ जाती हैं, जब प्राणों पर संकट बन आता है - ये कारण कोई भी हो सकते हैं, किसी घड़यंत्र अथवा साजिश का शिकार होना, किसी भयंकर रोग से ग्रसित होना आदि। भगवान शिव को संहारक देवता माना गया है और मृत्यु पर भी विजय प्राप्त करने के कारण मृत्युंजय कहा गया है। अपने साधक के प्राणों पर आए संकट से भगवान महामृत्युंजय अवश्य ही रक्षा करते हैं, यदि प्रामाणिक रूप से उनकी साधना सम्पन्न कर ली जाती है। इस यंत्र प्रयोग द्वारा समस्त प्रकार के भय - राज्य-भय, शत्रु-भय, रोग-भय आदि सभी शून्य हो जाते हैं।



इस यंत्र को किसी सोमवार के दिन कपड़े पर अंकित करें। यंत्र में जिस स्थान पर अमुक शब्द आया है, वहां अपना नाम लिखें। यदि यह प्रयोग आप किसी अन्य के लिए कर रहे हों, तो उसका नाम लिखें। यंत्र के चारों कोनों पर जो त्रिशूल अंकित हैं, वह प्रतीक है इस बात का कि चारों दिशाओं से भगवान शिव साधक की रक्षा कर रहे हैं। यंत्र के चारों कोनों पर काले तिल की एक-एक ढेरी बना कर, उस पर रुद्राक्ष स्थापित करें। ये चार रुद्राक्ष भगवान शिव की चार प्रमुख शक्तियां हैं। इसके पश्चात् 'महामृत्युंजय माला' से निम्न यंत्र की 5 मालाएं सम्पन्न करें -

महामृत्युंजय मंत्र

॥ ॐ त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं एष्टि वर्धनं उर्वा रुक्मिण बन्धवान् मृत्योर्मुक्षीय मामृतात् ॥

इस मंत्र का 11 दिन तक जप करें, फिर चारों रुद्राक्षों को एक काले धागे में पिरोकर धारण कर लें। एक माह धारण करने के बाद यंत्र, रुद्राक्ष व माला को जल में विसर्जित करें।

साधना सामग्री पैकेट - 240/-

3. विवाद जय यंत्र

कोर्ट कचहरी का चक्र कर ऐसा होता है, कि किसी भी अच्छे भले व्यक्ति के व्यवस्थित जीवन को अस्त-व्यस्त कर दरिद्रता के कगार पर खड़ा कर देता है। कई बार आप पर नकली आरोप लगाकर आपका प्रतिद्वन्द्वी पक्ष मुकदमों में विजय हासिल कर लेता है, और आप सत्यता पर खड़े रहने पर भी अपनी सत्यता को प्रमाणित नहीं कर पाते। इस यंत्र साधना को करने के बाद यदि मुकदमें में उपस्थित हुआ जाए, तो निश्चय ही इस यंत्र के प्रभाव से साधक मुकदमें में विजय प्राप्त करता है।

व्यापार के सिलसिले में जाते समय, किसी बड़े स्तर का क्रय-विक्रय अथवा मोल-भाव करने से पूर्व भी यदि इस प्रयोग को सम्पन्न कर लिया जाए, तो मूल्यों की दर आपके मनोनुकूल स्तर पर तय होती है।

चार दल वाले यंत्र को भोजपत्र अथवा कपड़े पर अंकित करें। यंत्र के मध्य में जहां अमुक लिखा है, वहां उस व्यक्ति का नाम लिखें, जिसके साथ विवाद होना है, अथवा मुकदमा होना है। नाम के ऊपर पीली सरसों से एक ढेरी बनाकर उसपर 'बगलामुखी गुटिका' स्थापित करें। फिर 'पीली हकीक माला' से निम्न मंत्र की 5 माला सम्पन्न करें -

विवाद विजय मंत्र

॥ ॐ कर्त्तर्णं क्रीं महामत्रे विजय सिद्धिं सत्वरं मे देहि ॐ फट् ॥

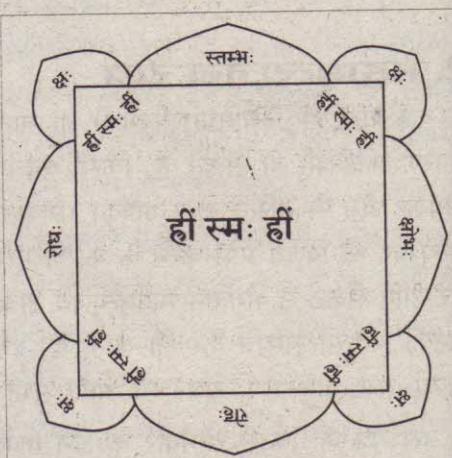
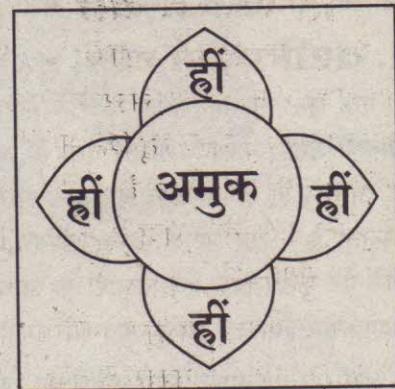
यह 7 दिन का प्रयोग है। आठवें दिन माला व गुटिका को जल में विसर्जित कर दें। जिस दिन मुकदमे अथवा विवाद की तारीख हो, उस दिन यंत्र को अपने साथ ही रखें। बाद में यंत्र को भी विसर्जित कर दें।

साधना सामग्री पैकेट - 240/-

4. राज्य-बाधा-निवारण यंत्र

यदि आप सरकारी कर्मचारी हैं, तो आपको ज्ञात होगा कि किस प्रकार एक तबादला व्यक्ति के जीवन को मथ कर रख देता है। कई बार व्यक्ति चाहता है कि तबादला न हो, कई बार वह चाहता है, कि अमुक स्थान पर तबादला हो, ऐसे कार्यों में विलम्ब होना अथवा मनोनुकूल न हो पाना राज्य बाधा है। यदि आप रिटायर्ड हैं, तो आपकी पेंशन में अव्यवस्था राज्य बाधा है। आपने लोन के लिए आवेदन किया है, परन्तु प्रस्ताव पास नहीं हो रहा है अथवा कोई टेंडर जो आपने भरा है, पास नहीं हो रहा है। बिजली, टेलीफोन अथवा राशन ऑफिस के चक्र काटते आप परेशान हो गए हैं, परन्तु अभी भी आपका कार्य अटका का अटका ही है। कार्यालयों में आपकी फाइल दबी पड़ी है, परन्तु अधिकारी बिना रिश्वत लिए कुछ बात आगे बढ़ाने को राजी ही नहीं हैं, ये सब राज्य बाधाएं ही हैं, जिनपर आप इस यंत्र द्वारा विजय प्राप्त कर सकते हैं।

सबसे पहले चावल की चार ढेरियां बनाएं, उस पर एक स्टील की थाली को स्थित करें। थाली में इस यंत्र को अंकित करें। यंत्र के मध्य में 'सामुद्धा' को स्थापित करें, इसके दार्यों ओर 'अबोला' को स्थापित करें, बाईं ओर काली मिर्च के पांच दाने स्थापित करें। फिर यंत्र, सामुद्धा, अबोला पर कुकुम से तिलक कर अक्षत, पुष्प अर्पित करें। इसके बाद निम्न यंत्र की



विजय माला से 7 माला मंत्र जप करें -

राज्य बाधा निवारण मंत्र
॥ॐ ऐं क्रीं हौं राज्यबाधा निवारणाय फट् ॥

यह 8 दिन की साधना है, नौवें दिन सामुद्धा, अबोला एवं माला को जल में विसर्जित करें। जिस थाली में यंत्र बनाया है उसे धो लें, इस जल को (धोवन) किसी पौधे अथवा पेड़ की जड़ में डाल दें।

साधना सामग्री पैकेट - 250/-

5. गृह शान्ति यंत्र

घर में यदि सुख हो, शान्ति हो, पतिव्रता स्त्री हो, आज्ञाकारी एवं संस्कारी पुत्र-पुत्रियां हों, प्रेम और वात्सल्य प्रदान करने वाले वृद्ध जन हों, तो स्वर्ग और कोई नहीं, आपका घर ही है। परन्तु फिर भी ये सब बातें आज कल शहरी माहौल में काल्पनिक बातें ही साबित हो चुकी हैं, जहां बड़े-बड़े संयुक्त परिवार हुआ करते थे, वर्षीं परिवार तो छोटा होता चला गया है, परन्तु परिवार के सदस्यों में एक-दूसरे के प्रति प्रेम भी कम हो गया है।

यदि परिवार में ही सुख, शान्ति का वातावरण नहीं रहेगा, तो उसके सदस्यों का किसी भी प्रकार से विकास सम्भव नहीं है। इस यंत्र द्वारा अपके घर में, अपने आप ही घर में शान्ति, प्रेम, और प्रसन्नता की लहर व्याप्त हो जाएगी, यह इस यंत्र के आहूत देवताओं के प्रभाव के कारण सम्भव हो पाता है। गृह शान्ति प्रयोग को साधक प्रायः गम्भीरता से नहीं लेते हैं, परन्तु उनकी कई समस्याओं एवं मानसिक परेशानियों का निदान इसी प्रयोग में छिपा होता है।

॥	ही	ही	ही	ही	ही	ही	ही	ही
अं	आं	इं	ईं	उं	ऊं	ऋं		
जं	झं	जं	टं	ठं	डं			
छं	भं	मं	यं	अं	ढं	लूं		
चं	बं	सं	हं	लं	णं	लुं		
डं	फं	षं	शं	वं	तं	एं		
घं	पं	नं	धं	वं	थं	ऐं		
गं	खं	कं	अः	अं	आँ	ओं		
ही	ही	ही						

किसी शुद्ध पीले सूती वस्त्र पर गन्धव्रय अथवा कुंकुम से इस यंत्र का निर्माण करें। यंत्र के मध्य में 'शालिग्राम' को स्थापित करें तथा शालिग्राम के ऊपर व नीचे एक-एक 'तांत्रोक्त नारियल' स्थापित करें। शालिग्राम एवं तांत्रोक्त का धूप, दीप, कुंकुम, पुष्प से पूजन करें। फिर निम्न मंत्र का 20 मिनट तक उच्चारण करें (प्रत्येक मंत्रोच्चार के साथ एक अक्षत शालिग्राम पर अर्पित करें)

गृह शान्ति मंत्र
॥ उँ हौं हौं नमः शिवाय गृहस्थ सुखं देहि देहि उँ ॥

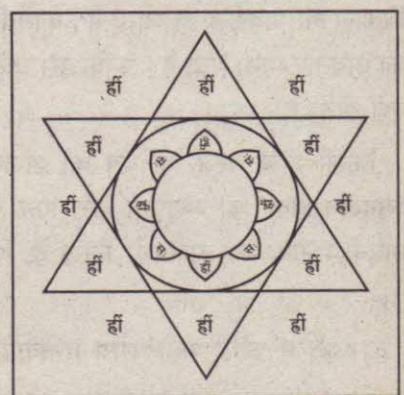
सात दिन के इस प्रयोग के बाद यंत्र समेत समस्त सामग्री को किसी तालाब अथवा नदी में विसर्जित कर दें।

साधना सामग्री पैकेट - 280/-

6. शत्रु विजय यंत्र

ईर्ष्या एक ऐसी वृत्ति है, जिसके वशीभूत होकर आपके तथाकथित भित्र एवं शुभचिन्तक भी शत्रुवत् व्यवहार करने लगते हैं। तब यह और भी खतरनाक हो जाता है, जब उनके व्यवहार से पता भी नहीं चलता कि आप से वे ईर्ष्या भी रखते हैं। आपका अच्छा भला व्यापार चल रहा हो, आपके पुत्र उत्तरि कर रहे हों, आपके घर में सम्पन्नता हो, आपके घर में वैभव हो, तो पता नहीं, क्यों लोगों को कष्ट होने लगता है? - एक प्रकार से वे होते ही है, जिनसे कि आपकी कोई व्यक्तिगत शत्रुता, दुश्मनी अथवा रंजिश हो।

इस यंत्र द्वारा आपके शत्रु नष्ट तो नहीं होंगे, परन्तु आपके प्रति उनका शत्रुवत् व्यवहार अंवश्य समाप्त हो जाएगा। सूर्योदय के पश्चात शुभ मुहूर्त में इस यंत्र को सफेद कपड़े पर अंकित करें। यंत्र के मध्य में शत्रु का नाम लिखें और उसके ऊपर 'विजय सिद्धिका' को स्थापित करें। फिर निम्न मंत्र की 'छिन्नमस्ता माला' से 5 माला सम्पन्न करें -



शत्रु विजय मंत्र
॥ ॐ हूं हूं छां शत्रु विजयाय फट् ॥

ज्यारह दिन तक इस मंत्र का जप करें, फिर समस्त सामग्री को जल में विसर्जित करें।

साधना सामग्री पैकेट - 250/-

7. सौभाग्य प्रदायक यंत्र

कुछ तो ग्रहों का प्रभाव होता है, और कुछ व्यक्ति के स्वयं के पूर्व के कर्म व संस्कार, जिनसे मिलकर व्यक्ति के भाग्य का निर्माण होता है। भाग्य के सम्बल की जीवन में अत्यन्त आवश्यकता होती है। क्या कारण होता है, कि समान रूप से परिश्रम करने वाले दो व्यक्तियों में, अथवा समान योग्यता रखने वाले दो व्यापारियों में एक का धन्धा चमक जाता है, जबकि दूसरे का सामान्य ही रहता है - कहाँ न कहाँ इसका कारण उसके भाग्य में ही होता है।

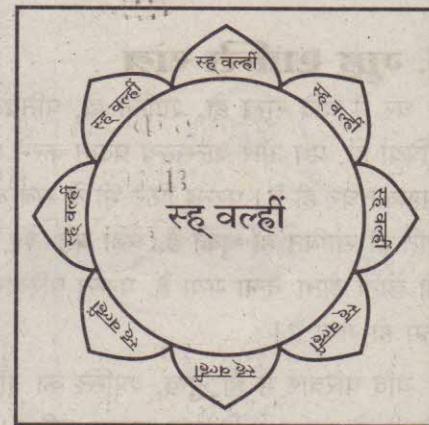
यंत्रों के द्वारा सौभाग्य का जागरण किया जा सकता है। इस यंत्र को कपड़े पर अंकित कर उसके मध्य में 'श्री मुद्रिका' को स्थापित करें। यंत्र के सामने एक दीपक प्रज्ज्वलित करें तथा उसके सामने एक पात्र में 'शुभ' एवं 'लाभ' नामक दो गुटिकाएं स्थापित कर लें। मुद्रिका एवं दोनों गुटिकाओं का कुंकुम, अक्षत एवं पुष्प से पूजन करें।

फिर निम्न मंत्र 15 मिनट तक जप करें। प्रत्येक मंत्रोच्चारण के साथ एक आचमनी जल शुभ एवं लाभ पर अर्पित करें।

सौभाग्य जागरण मंत्र
॥ ॐ श्रीं सौभाग्य सिद्धिं हौं ॐ नमः ॥

जप समाप्ति के बाद कुछ जल को ग्रहण करें शेष जल को स्वयं अपने ऊपर तथा घर में छिड़क दें। ऐसा 11 दिन तक करें। बारहवें दिन यंत्र व गुटिकाओं को मन्दिर में चढ़ा दें एवं श्री मुद्रिका धारण कर लें।

साधना सामग्री पैकेट - 210/-



8. कार्तवीर्यार्जुन यंत्र

जिस क्षण पर मनुष्य के जीवन में इच्छाएं समाप्त हो जाती हैं, उस क्षण से उसका जीवित रह पाना असम्भव हो जाता है। कोई मनुष्य ऐसा नहीं है, जिसकी कोई इच्छा न हो; और इच्छा होना कोई गलत नहीं है। इच्छाएं हों, और इच्छा पूरी करने का व्यक्ति में सामर्थ्य हो, वही श्रेष्ठ पुरुषार्थ के लक्षण है। इच्छाओं के अतृप्त रह जाने से व्यक्ति में हीन भावना घर कर लेती है और उसके जीवन का भावी विकास भी अवरुद्ध हो जाता है। कार्तवीर्यार्जुन को भगवान विष्णु के सुदर्शन के चक्र का अवतार माना गया है। उनके इस यंत्र की साधना करने से साधक की मनोकामनाएं पूर्ण होती हैं।

किसी शुद्ध वस्त्र पर यंत्र का अंकन कर मध्य में 'ॐ फ्रौं' लिखें, उस पर 'सुदर्शन चक्र' का स्थापना करें, फिर चक्र का पुष्प, कुंकुम, अक्षत, धूप आदि से संक्षिप्त पूजन करें। यंत्र के नीचे कुंकुम से अपनी मनोकामना संक्षेप में लिखें, फिर 'मूँगा माला' से निम्न मंत्र की 5 माला जप करें -

मनोकामना सिद्धि मंत्र

॥ ॐ हूं फ्रौं हूं महाबलाय मनोवाञ्छित सिद्धये कार्तवीयये फट् ॥

यह 11 दिन का प्रयोग है। प्रयोग समाप्ति पर यंत्र को चक्र व माला के साथ जल में विसर्जित करे दें।

साधना सामग्री पैकेट - 225/-

शिव्य धर्म

शिव्य और गुरु का सम्बन्ध जीवन में श्रेष्ठतम् सम्बन्ध माना गया है। इन सम्बन्धों को संसार के किसी भी तराजू में तोला नहीं जा सकता। एक श्रेष्ठ शिव्य में निम्न गुण अवश्य ही होने चाहिए। इन गुणों से ही विश्वास, निष्ठा बढ़ती है।

☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆

- ❖ 'हरि रहे गुरु ठौर है, गुरु रहे नहिं ठौर' इस बात को ध्यान में रखके शिव्य का प्रयत्न मात्र गुरु को आनंदित एवं प्रसन्न करने का होना चाहिए।
- ❖ जो गुरु कहे; वह करे, जो गुरु करे उस ओर ध्यान न दे, क्योंकि वे किस क्षण क्या करते हैं, यह अगर शिव्य समझ ही जाय तो वह स्वयं 'गुरु' बन जाता।
- ❖ शिव्य के लिए गुरु ही माता, पिता, बंधु और सखा होते हैं, अतएव उसे अपनी समस्त चेतना गुरु चरणों में ही लगाए रखनी चाहिए।
- ❖ शिव्य वह है जो नित्य गुरु मंत्र का जप उठते, बैठते, सोते जागते करता रहता है।
- ❖ शिव्य को गुरु के सोने के बाद ही सोना चाहिए और गुरु के उठने से पहले ही शर्या का त्याग कर देना चाहिए।
- ❖ चाहे कितना ही कठिन एवं असम्भव काम क्यों न सौंपा जाए, शिव्य का मात्र कर्तव्य बिना किसी ना नुकर के उस काम में लग जाना है।
- ❖ गुरु शिव्य की बाधाओं को अपने ऊपर ले लेते हैं, अतएव यह शिव्य का भी धर्म है कि वह अपने गुरु की चिंताओं एवं परेशानियों को हटाने के लिए प्राणपण से जुटा रहे।
- ❖ शिव्य का मात्र एक ही लक्ष्य होता है, और वह है, अपने हृदय में स्थायी रूप से गुरु को स्थापित करना।
- ❖ और फिर ऐसा ही सौभाग्यशाली शिव्य आगे चलकर गुरु के हृदय में स्थायी रूप से स्थापित हो पाता है।
- ❖ जब होठों से गुरु शब्द उच्चारण होते ही गला अवरुद्ध हो जाए और आँखें छलछला उठें तो समझें कि शिव्यता का पहला कदम उठ गया है।
- ❖ और जब २४ घण्टे गुरु का एहसास हो, खाना खाते, उठते, बैठते, हंसते, गाते अन्य क्रियाकलाप करते हुए ऐसा लगे कि वे ही हैं मैं नहीं हूं, तो समझें कि आप शिव्य कहलाने योग्य हुए हैं।



गुरु वाणी

★ सद्गुरुदेव के द्वीनों चरण कमल पापों एवं दुःख से मुक्ति दिलाने वाले हैं। इन चरणों के स्पर्श से व्यक्ति पूर्ण आनन्द से परिपूर्ण हो जाता है।

★ गुरु ही वह सेतु है जिसके द्वारा शिष्य भव सागर को सहजता से पार कर लेता है। गुरु ही शिष्य में गुरुत्व का आलोक भर देते हैं।

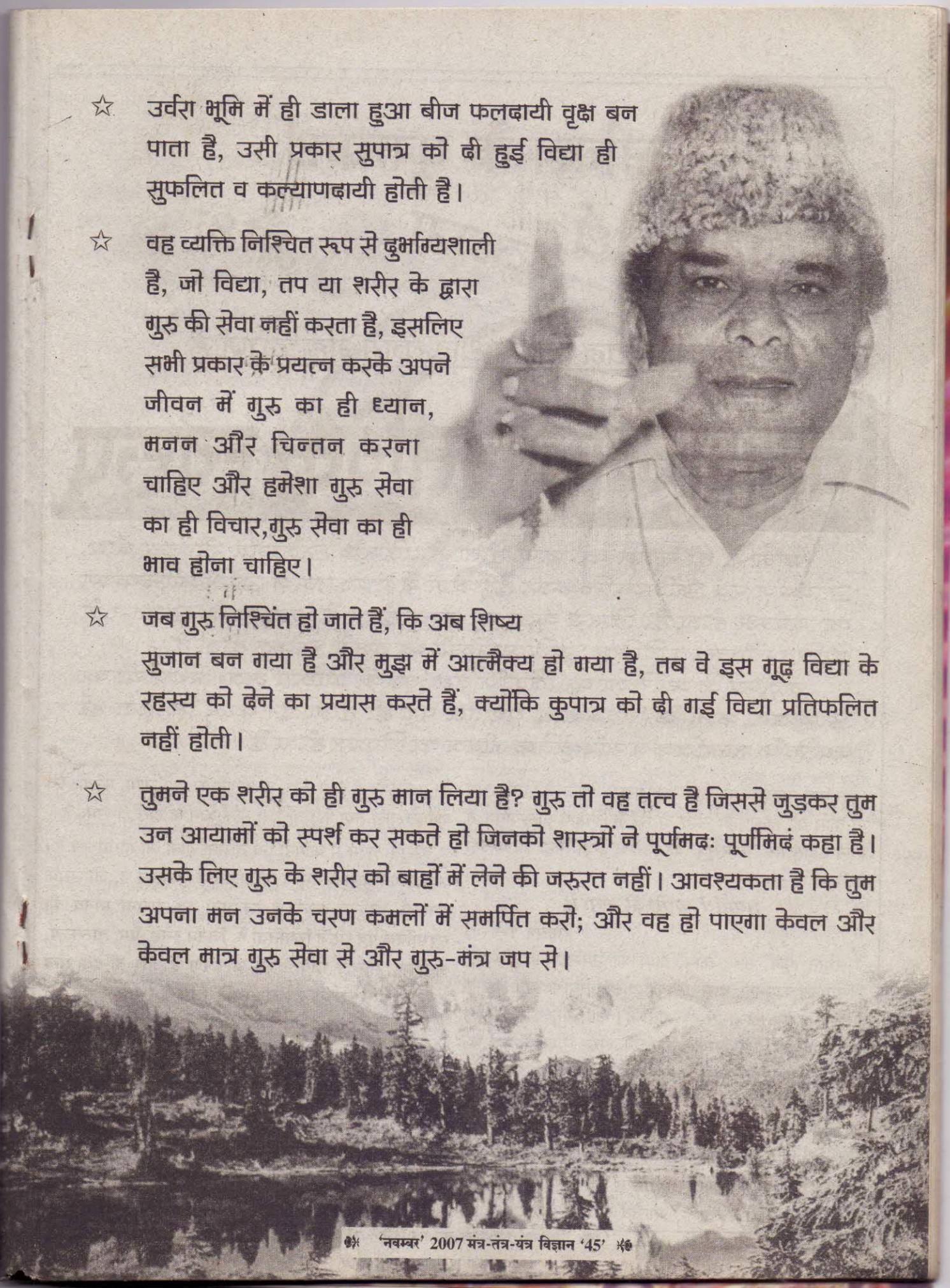
★ गुरु स्वयं ही प्रेम की प्रतिमूर्ति हैं, उनके कारण ही संसार में प्रेम, माधुर्य होता है। सांसारिक जड़ पद्धाथों में गुरु के कारण ही आनन्द व्याप्त है।

जीव पर अहैतु की कृपा करने में गुरु का कोई स्वार्थ नहीं होता। वे शिष्य को देते ही हैं, शिष्य से कुछ भी लेते नहीं।

गुरु के प्रसन्न हो जाने पर कोई भी कार्य असंभव नहीं रह जाता। अतः गुरु के प्रति समर्पण होना ही चाहिए।

साधक को चाहिए कि प्रसन्न मन से श्रद्धा पूर्वक गुरु को ही अपना लक्ष्य बना ले, और वही माध्यम है जो साधक के जीवन को पूर्ण सौभाग्यशाली बना देता है।





- ☆ उर्वरा भूमि में ही डाला हुआ बीज फलदायी वृक्ष बन पाता है, उसी प्रकार सुपात्र को ढी हुई विद्या ही सुफलित व कल्याणदायी होती है।
- ☆ वह व्यक्ति निश्चित रूप से दुर्भाग्यशाली है, जो विद्या, तप या शरीर के द्वारा गुरु की सेवा नहीं करता है, इसलिए सभी प्रकार के प्रयत्न करके अपने जीवन में गुरु का ही ध्यान, मनन और चिन्तन करना चाहिए और हमेशा गुरु सेवा का ही विचार, गुरु सेवा का ही भाव होना चाहिए।
- ☆ जब गुरु निश्चिंत हो जाते हैं, कि अब शिष्य सुजान बन गया है और मुझ में आत्मैक्य हो गया है, तब वे इस गूढ़ विद्या के रहस्य को देने का प्रयास करते हैं, क्योंकि कुपात्र को ढी गई विद्या प्रतिफलित नहीं होती।
- ☆ तुमने एक शरीर को ही गुरु मान लिया है? गुरु तो वह तत्त्व है जिससे जुड़कर तुम उन आयामों को स्पर्श कर सकते हो जिनको शास्त्रों ने पूर्णिदः पूर्णिदं कहा है। उसके लिए गुरु के शरीर को बाहों में लेने की जरूरत नहीं। आवश्यकता है कि तुम अपना मन उनके चरण कमलों में समर्पित करो; और वह हो पाएगा केवल और केवल मात्र गुरु सेवा से और गुरु-मंत्र जप से।

जीवन के पूर्णपार्थ

धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष हैं

इसमें जीवन का आधार काम महत्वपूर्ण है

काम का वास्तविक स्पष्टप

काम के ही सृजन का कार्य होता है, जिसके अन्तर्भूत सौन्दर्य बोध, आकर्षण एवं अभिव्यक्तिकरण हैं। काम के व्यवहारात्मक अभिव्यक्तिकरण का प्रारम्भ होता है, जिसके कला का जन्म होता है। मनुष्य के अन्तर्में चिन्तित सौन्दर्य विभिन्न अभिव्यक्तियों का इसमें अंकन होता है।

मनुष्य के व्यक्तित्व का निर्माण तथा उसकी विभिन्न मनः स्थितियों का आकलन काम के विवेकशील धरातल पर ही होता है। काम के द्वारा ही व्यक्ति के सामग्रिक व सांस्कृतिक जीवन का विकास होता है।

पुरुषार्थ चतुष्टय में काम का तीसरा स्थान है; धर्म, अर्थ है। एक दृष्टि से देखा जाय, तो संतान की अभिलाषा, परिवार एवं काम को विविध संज्ञा दी गई है। महर्षि वात्स्यायन ने वंश की वृद्धि तथा पितृ ऋण से मुक्ति काम के द्वारा ही संभव है। अपने महान् ग्रंथ 'कामसूत्र' का प्रारम्भ इन्हीं तीनों की बन्दना से किया है -

॥धर्मार्थ कामेभ्यो नमः ॥

(कामसूत्र १-१-१)

अर्थात् 'धर्म, अर्थ, काम, काम को नमस्कार है।' व्यक्ति की समस्त कामनाएं, वासनात्मक प्रवृत्तियां तथा आसक्ति मूलक वृत्तियां काम के अन्तर्गत हीं आती हैं। काम मनुष्य जीवन की सहज प्रवृत्ति है, जो उसके इन्द्रियों के सुख से सम्बन्धित है। स्त्री-पुरुष का एक-दूसरे के प्रति आकर्षण, मानव समाज व परिवार का उत्थान काम की ही देन है। काम के ही वशवर्ती हो कर व्यक्ति एक-दूसरे से प्रेम करता है, अपने प्रियजनों के प्रति आकर्षित होता है, काम के वशीभूत होकर स्त्री-पुरुष सम्बोग रत होते हैं, काम से ही प्रेरित होकर मनुष्य स्त्री और संतान की कामना करता है, सौन्दर्य के प्रति आकर्षित होता

वस्तुतः काम में कामना एवं वासना दोनों का ही मिश्रण है। कामना एवं वासना मनुष्य की प्रवृत्तियों में प्रमुख हैं, जो उसके मन को उद्वेलित करती हैं। कामना एवं वासना मानव की स्वभाविक एवं सहज स्थितियां हैं, जिनमें स्नेह, प्रेम, वात्सल्य, अनुराग, सौन्दर्य प्रियता एवं आकर्षण हैं और इन्द्रिय सुख तथा यौन सम्बन्धी इच्छाओं की तृप्ति है। मानव मन एवं मस्तिष्क की इच्छाएं एवं उनकी तुष्टि कामजन्य ही होती है। महाभारत में कहा गया है -

॥सम्प्रमोदमलः कामो भूयः स्वगुणवर्जिताः ॥

अर्थात् 'सम्प्रमोद या आनन्द में लिप्स रहना ही काम है।' काम का अतिरेक महान् दुर्गुण भी है। काम के वशीवर्ती हो कर स्वधर्म का त्याग भी उचित नहीं है, ऐसा महाभारत के रचयिता का मानना है। इसीलिए यह कहा जाता है, काम का

आचरण धर्म के अनुसार ही हो। महाभारत के रचयिता ने अर्थ को काम तथा धर्म का आधार माना है। समस्त आकांक्षाओं की पूर्ति के लिए काम आवश्यक है। महाभारत के अनुसार -

धर्ममूलः सदैवार्थः कामोऽर्थफलमुच्चते ।

संकल्पमूलास्ते सर्वे संकल्पे विषयात्मकः ॥

अर्थात् 'धर्म सदैव ही अर्थ प्राप्ति' का कारण है एवं काम अर्थ का फल, लेकिन इन तीनों का मूल कारण है संकल्प; एवं संकल्प है विषय रूप।'

कौटिल्य ने भी अपने ग्रंथ में काम का अंतिम श्रेणी में ही खोला है -

॥धर्मार्थ विरोधेन कामं सर्वेत्॥

अर्थात् 'बिना धर्म व अर्थ को हानि पहुंचाये काम का सेवन करना चाहिए।' त्रिवर्ग के पालन में काम को मानव का अन्तिम उद्देश्य मान कर यह बताया गया है, कि धर्म तथा अर्थ की प्राप्ति के पश्चात ही व्यक्ति को काम प्राप्ति के लिए उद्यत होना चाहिए। मानव जीवन में उसकी अभिलाषाओं का मुख्य स्थान है। इन्हीं मनोवृत्तियों से प्रेरित होकर, वशीभूत होकर ही मनुष्य वेदादि धर्म शास्त्रों का अध्ययन-मनन करता है।

मनुष्य की समस्त अन्तर्वृत्तियां 'काम' से ही सञ्चालित होती हैं। इस प्रकार एक दृष्टि से देखा जाय, तो काम के मुख्यतः तीन आधार प्रतीत होते हैं - जैविकीय, सामाजिक एवं धार्मिक।

व्यक्ति अपनी समस्त अभिलाषाओं एवं इच्छाओं की पूर्ति जैविकीय आधार पर ही करता है। इच्छाओं की तृप्ति न होने पर मानव में हीनता, तनाव, क्षोम, आक्रोश व क्रोध का बीजारोपण होता है तथा नैराश्य की अभिव्यक्ति होती है, जो कि उसके विकास में अवरोधक बनती है। इससे मनुष्य की स्वाभाविक प्रगति भी बाधित होती है। इन्हीं इच्छाओं की तृप्ति से व्यक्ति का तनाव व क्रोध दूर होता है, जो जैविकीय आधार के द्वारा ही संभव है।

काम का सामाजिक आधार अत्यन्त ही महत्वपूर्ण है, जिसके माध्यम से व्यक्ति अपनी सामाजिक आवश्यकताओं की पूर्ति करता है। विवाह के माध्यम से पति-पत्नी के सम्बन्ध एवं प्रजनन के माध्यम से पारिवारिक एवं सामाजिक निरन्तरता काम के ही सामाजिक आधार हैं। प्रेम, स्नेह, अनुराग, सौन्दर्य प्रियता से मनुष्य के मन-मस्तिष्क में कोमल भावनायें जाग्रत होती हैं, जिससे उसका व्यक्तित्व निखरता है और उसे अपने सामाजिक दायित्वों का बोध होता है। इस सामाजिक प्रतिबद्धता में पति का पत्नी से, पत्नी का पति से प्रेम होता है,

अपनी संतानों के प्रति स्नेह होता है, अपने आत्मीय एवं प्रियजनों के प्रति अनुराग होता है तथा स्त्री का सौन्दर्य के प्रति आकर्षण होता है। काम के इस सामाजिक स्वरूप से मनुष्य के व्यक्तित्व का विकास होता है।

काम का धार्मिक आधार व्यक्ति को उसकी इन्द्रियों की तुष्टि एवं अदम्य इच्छाओं से विरत करता है। व्यक्ति आत्मिक उत्थान की ओर अग्रसर हो कर धार्मिक बनता है। मनुष्य का प्रेम, स्नेह, अनुराग एवं आकर्षण उच्चतर अवस्था में ईश्वर के प्रति आकृष्ट होता है, जो मोक्ष का मार्ग है। वह निरन्तर ईश्वर के प्रति अनुरक्त होता जाता है उसे भोगों के प्रति विरक्ति हो जाती है।

व्यक्ति को शारीरिक, मानसिक एवं इन्द्रिय परम आनन्द अनुभूति काम के माध्यम से ही होती है। काम के माध्यम से ही उसे सम्भोग सुख व यौन सुख की प्राप्ति होती है। यौन सुख के अतिरिक्त संतान सुख भी व्यक्ति को काम के माध्यम से ही प्राप्त होता है। यद्यपि त्रिवर्ग में काम को तृतीय स्थान प्रदान किया गया है, किन्तु मनुष्य के जीवन में इसका महत्वपूर्ण स्थान है। गृहस्थ जीवन की सार्थकता काम के द्वारा सन्तानोत्पत्ति से ही मानी गई है, जो कि उसे स्वर्गिक व ऐहिक सुख प्रदान करता है।

कौटिल्य के अनुसार -

समं वा त्रिवर्गमन्योन्यानुबन्धनम् । एकोहित्वा सेवितोर्धर्मार्थकामान् आत्मात्मानमितरौ च पीडयति ॥

अर्थात् 'परस्पर एक-दूसरे के आश्रित धर्म, अर्थ तथा काम का स्वरूप त्रिवर्ग का समान भाव से सेवन करना चाहिए, क्योंकि धर्म, अर्थ, तथा काम इन तीनों में एक का अधिक सेवन अन्य दो को पीड़ा पहुंचाता है।'

व्यक्ति सर्वाधिक काम-वासना की ओर ही अधिक झुकता है, काम से ही सृजन का कार्य होता है, जिसके अन्तर्गत सौन्दर्य बोध, आकर्षण एवं अभिव्यक्तिकरण हैं। काम से रचनात्मक अभिव्यक्तिकरण का प्रारम्भ होता है, जिससे कला का जन्म होता है। मनुष्य के अन्तस में चित्रित सौन्दर्य व विभिन्न अभिव्यक्तियों का इसमें अंकन होता है। काम प्रवृत्तियों के द्वारा ही वह कला की विभिन्न विधाओं यथा नृत्य, गायन, चित्रकला, वादन आदि की ओर आकर्षित होता है। वह इन कलाओं को अपने ढंग से स्थापित करता है, काव्य को वह अपने शृंगारिक भावों से पृथक रूप देता है, अपनी सृजनात्मक शक्तियों को वह कला के विकास में, स्व व्यक्तित्व निर्माण के लिए उपयोग करता है।

काम मात्र सम्भोग सुख या यौन सुख नहीं है, क्योंकि विषय लिप्तता व विलासिता से जीवन का सुगम व स्वस्थ विकास नहीं होता।

विषयों के सर्वदा चिन्तन से भोग में रुचि उत्पन्न होती है, जिससे काम-वासना का जन्म होता है। काम तृप्ति में बाधा से क्रोध, क्रोध से मोह, मोह से मति भ्रम, मति भ्रम से बुद्धि नाश तथा बुद्धि नाश से मनुष्य का सर्वनाश होता है।

गीता में भी यही कहा गया है -

ध्यायतरे विष्यानपुंसः सङ्गस्ते शूपजायते ।
सङ्गत्संजायते कामः कामात्क्रोधोऽभिजायते ॥
क्रोधादभवति संमोहः संमोहात्समृति विभ्रमः ।
समृतिभ्रंशाद् बुद्धिनाशरे बुद्धिनाशत्प्रणश्यति ॥

(गीता २/६२-६३)

अतः उचित यही समझा गया, कि काम-वासना को धर्म या सदाचरण तथा आध्यात्मिक रूप में रखा जाय। धर्म तथा अध्यात्म का आवरण देकर काम में गंभीरता तथा धर्मनिष्ठता बताने की चेष्टा की गई एवं संकुचित तथा सीमित काम विकारों के स्थान पर प्रशस्त एवं व्यापक विषय सुख की अवधारणा की गई। वस्तुतः आकर्षण, आसक्ति एवं अनुराग की प्रवृत्ति कामोत्तेजना की ओर उन्मुख करती है, जिससे व्यक्ति काम की ओर प्रवृत्त होता है।

काम सुख को प्रधान सुख माना गया है। इसमें धर्म को सम्मिलित कर लेने पर वह अमर्यादित व असांस्कृतिक नहीं बनता। मानव जाति का उत्थान, प्रसार, विस्तार सभी कुछ काम पर ही आधारित हैं।

काम गृहस्थ जीवन का आधार है, क्योंकि काम के वशीभूत हो कर वह विवाह करता है, पत्नी प्राप्त करता है, काम के वशीभूत होकर ही वह वंश वृद्धि के लिए संतानोत्पत्ति करता है। काम के सेवन से ही व्यक्ति की अतृप्ति इच्छाएं व कामजनित अभिलाषाएं पूर्ण होती हैं। मनुष्य के व्यक्तित्व का निर्माण तथा उसकी विभिन्न मनः स्थितियों का आकलन काम के विवेकशील धरातल पर ही होता है। काम के द्वारा ही व्यक्ति के सामग्रिक व सांस्कृतिक जीवन का विकास होता है।

गीता में कहा गया है, कि स्वाधीन अन्तःकरण वाला पुरुष राग, द्रेष से रहित अपने वश में ही हुई इन्द्रियों द्वारा विषयों को भोगता हुआ अन्तःकरण की प्रसन्नता प्राप्त करता है -

रागद्वेषविद्युत्त्वस्तु विष्यानिन्द्रियैश्चरन् ।
आत्मवश्येविद्येयात्मा प्रसादमधिगच्छति ॥

(गीता २/६४)

धर्म से संचालित और उस पर अवलम्बित काम की ही प्रशंसा की गई है, धार्मिक काम की प्रशंसा की गई है। अधार्मिक काम सदैव से ही निन्दनीय रहा है। धर्महीन काम-अनुसरण कर्ता की अपनी बुद्धि को समाप्त कर देता है तथा विपरीत परिस्थितियों में वह अपने शत्रु द्वारा निन्दा का पात्र बनता है -

धर्मर्थावभिसंत्वज्य संसर्भं योऽनुमानयते ।
हसन्ति व्यसने तस्य दुर्दो नरिरादिव ॥

(महाभारत उद्योग पर्व १२८-३०)

धर्महीन काम में लिप्त रहने वाले व्यक्ति की स्थिति अत्यन्त ही शोचनीय होती है, ऐसा विषयी व विलासी व्यक्ति न तो परिवार के योग्य होता है और न ही समाज के योग्य। धर्म व अर्थ का उपार्जन भी ऐसे व्यक्ति के वश में नहीं होता है। विवेकशील व बुद्धिमान व्यक्ति काम का अनुगमन काफी चिन्तन-मनन व तर्क-वितर्क करने के उपरान्त करता है, वह सदैव ही धार्मिक परिप्रेक्ष्य में काम को सम्पन्न करता है। शास्त्रकारों का विचार है, कि बिना धर्म के अर्थ व काम का सम्पादन नहीं हो सकता है।

मत्स्य पुराण का कथन है, कि धर्महीन काम बन्ध्या के सदृश्य है -

॥धर्महीनस्य कामार्थो बन्ध्यासुतसमौ ध्रुवम् ॥

(मत्स्य पुराण २४१-८)

पुरुषार्थ के लिए बुद्धि व विवेक वांछनीय है। जिसकी इन्द्रियां वश में होती हैं, उसी की बुद्धि स्थिर होती है।

॥वशेहि यस्येन्द्रियाणि तस्य प्रज्ञा प्रतिष्ठिता ॥

(गीता २-६१)

बुद्धिं के सुस्थिर होने पर ही व्यक्ति अच्छे कार्य कर सकता है। भ्रमित व अस्थिर बुद्धि का व्यक्ति विषय लोलुपता में ही लगा रहता है, जिसके फलस्वरूप उसे पुरुषार्थ प्राप्ति में बाधाओं का सामना करना पड़ता है।

जीवन को सुस्थिर व सुगम बनाने के लिए भारतीय मनीषियों ने धर्म पूर्वक निष्पादित काम को ही हितकारी बताया। धर्महीन काम परिवार व समाज के लिए तथा स्वयं की उन्नति के लिए बाधक है। नैतिकता, सदाचारिता व चरित्र निर्माण के लिए ही काम पर धर्म का अंकुश लगाया गया है। शास्त्रों के इस विवेचना से यह स्पष्ट है कि जीवन का आधार धर्म, अर्थ की प्राप्ति और अर्थ का उपयोग श्रेष्ठ कामनाओं की पूर्ति में है तभी जीवन की पूर्णता होती है।

रूप सौन्दर्य काम का अधार है

हस्तिया

अप्सरा

साधना



ईश्वर द्वारा प्रदान देह को सजाने-संवारने में मनुष्य जितना समय लगाता है, उतना समय किसी अन्य कार्य में नहीं लगाता। जहां पुरुष का सौन्दर्य उसकी वीरता, ज्ञान, आत्मविश्वास, कार्यक्षमता, विपरीत परिस्थितियों का सामना करने की क्षमता इत्यादि है, वहीं ऊंचा कद, चौड़ा भाल, बलिष्ठ हाथ, गेहूंआ रंग, चौड़ा सीना, दबा हुआ पेट, बलिष्ठ कंधे, दृष्टि में तेज इत्यादि शारीरिक-सौन्दर्य के अन्तर्गत आते हैं। चाल और वाणी में गंभीरता भी पुरुष-सौन्दर्य का ही एक स्वरूप है।

वहीं स्त्री-सौन्दर्य की परिभाषा में संसार में सबसे अधिक ग्रन्थ लिखे गये हैं। स्त्री सौन्दर्य में बाह्य बनावट हाव-भाव मुद्रा पर विशेष बल दिया गया है। सुन्दर चेहरा, कोमल त्वचा, लम्बी गर्दन, कमल नेत्र, पुष्ट उरोज, पतली कमर, भारी नितम्ब, लम्बे सुडौल पैर इत्यादि के अलावा एक-

जीवन की शुष्कता में रस और सौन्दर्य की अभिवृद्धि प्रत्येक व्यक्ति चाहता है अपने आप को सम्मोहन से युक्त करना प्रत्येक पुरुष अधार स्त्री की इच्छा रहती है। काम्य जीवन की पूर्णता अप्सरा साधना से प्राप्त हो सकती है, और रम्भा तो अप्सराओं में भी सर्वश्रेष्ठ अप्सरा है।

एक अंग पर हजारों ग्रन्थ लिखे गये हैं। यह सत्य भी है कि स्त्रियां अपने रूप-श्रृंगार पर विशेष ध्यान देती हैं। आंतरिक गुणों में स्त्रियों में दया, ममता, मोह, ममत्व, शालीनता विशेष गुण माने गये हैं।

क्या कहते हैं हमारे शास्त्र -

आखिर इन सब स्थितियों के पीछे क्या रहस्य है? उपनिषद कार कहते हैं कि मनुष्य को अपने आंतरिक गुणों की ओर विशेष ध्यान देना चाहिए क्योंकि अंततः मनुष्य का लक्ष्य ब्रह्म से साक्षात्कार करना है, वहीं आदि काल से ही बाह्य रूप पर भी विशेष बल दिया गया है। इन दोनों बातों में विरोधाभास नहीं है। यह मनुष्य जीवन अपने आप को आंतरिक तौर पर श्रेष्ठ बनाने के लिये तथा बाह्य रूप में सुन्दर बनाने के लिये भी प्राप्त हुआ है।

सौन्दर्य तत्त्व पद्या है?

सौन्दर्य अर्थात् सुन्दरता एक ऐसा तत्त्व है, जिसे आप उपेक्षित नहीं कर सकते हैं, उसमें तो एक ऐसा आकर्षण होता ही है, कि मन रोकते हुए भी नहीं रुकता, यह केवल शरीर के माध्यम से पूर्ण स्पष्ट न हो बल्कि हाव-भाव, व्यवहार, वाणी, वस्त्र आदि से भी स्पष्ट हो, पूर्ण रूप से लयबद्ध हो, वाणी में संगीत का अनुभव हो, नेत्रों में ऐसी दृष्टि हो, जो हृदय के भीतर समा जाय, यही तो सौन्दर्य का आकर्षण है, जीवन की जो सौन्दर्य के प्रति स्वाभाविक प्रकृति है, वह रोकने पर भी नहीं रुकती, तो उसे इटूठे बन्धनों से क्यों जकड़ा जाय?

यह तो निश्चित सत्य है कि सुन्दरता सब को अपनी ओर सहज आकर्षित कर लेती है, इसके अतिरिक्त जो व्यक्ति रूप-सौन्दर्य को अपने वश में कर लेने की शक्ति प्राप्त कर लेता है, वह साधना का एक विशेष स्तर पूरा कर लेता है, उसके आत्म-विश्वास में कई गुना वृद्धि हो जाती है, उसकी कार्य करने की क्षमता बढ़ जाती है, और बड़ी चुनौतियों को पार करने के लिए तत्पर हो जाता है।

इसी कारण रूप-सौन्दर्य की पूजा-अर्चना और उसे दैहिक अथवा मानसिक रूप से प्राप्त करने की इच्छा अदम्य रूप से रही है, और यह इच्छा एक ऐसी इच्छा है, जिसे जब तक सम्पूर्ण रूप से प्राप्त न कर लिया जाय, तब तक शान्ति नहीं मिलती।

२५३

पत्रिका में निकंतक ड्राक्सका
क्षाधनाएं अधिया यक्षिणी क्षाधनाएं
प्रक्षुत अकरे था यही अर्थ है
यि क्षाधकों में क्षौन्दर्य थोथ
प्रक्षुप्ति हो थके,
उनथा लाक्ष्य के पवित्र हो थके
यर्योऽथि यिक्षी भी थेवी अथवा थेवता
था मूल क्षेत्रप लाक्ष्यमय ही होता है,
ये मानव यि भ्रांति थिषाढ
के धिके नहीं होते।
जष क्षाधक क्षयं ही
तय थक ले यि वह यिक्ष
मानक्षिक्ता में थकड़ा है?
आखिक्र भ्रावनाऽथों था
भी युछ महत्व होता होगा?
यदि जीवन में नहीं; तो थम के थम
क्षाधना मार्ग में तो अथश्य ही।

द्वापर युग, अर्थात् श्री कृष्ण के समय का काल तो नारी-सौन्दर्य की पूजा-अर्चना, साधना का सर्वोत्तम काल कहा जा सकता है, स्वयं श्री कृष्ण ने अपने पूरे जीवन में उसको पूर्ण महत्व दिया है, रूप-सौन्दर्य। उनके वश में था, और इसीलिए वे विभिन्न योग-मायाएं करते हुए ‘‘योगेश्वर श्रीकृष्ण’’ कहलाये।

सौन्दर्य उत्तीर स्त्री

सौन्दर्य शब्द कहते ही किसी के भी मानस में जो बिम्ब सर्वप्रथम आता है वह किसी स्त्री का होता है। सौन्दर्य व स्त्री मानो एक दूसरे के पर्यायवाची शब्द हों; और यह असहज भी नहीं है क्योंकि इस सृष्टि में सौन्दर्य का सर्वाधिक स्पन्दनशील रूप एक स्त्री ही हो सकती है, मात्र दैहिक रूप में ही नहीं वरन् उससे कहीं अधिक कोमल भावनाओं के अभिव्यक्तिकरण के रूप में।

भावनाओं के सौन्दर्य से जो उत्पन्न होता है उसे ही लास्य अर्थात् नर्तन कहा गया है; और ऐसे नर्तन में कोई आवश्यक नहीं कि हाथ-पांव की गंतिशीलता हो, एक नर्तक की स्थिति वह भी होती है जहाँ मन नृत्य कर उठता है; और ऐसा तब होता है जब मन में सौन्दर्य बोध की कोई धारण निर्मित हुई हो।

जीवन का नवगिमणि करें -

जीवन का उत्स काल अर्थात् जिस काल में मनुष्य अपने जीवन का निर्माण सतत् रूप से करता रहता है, वह 21 से 50 वर्ष के मध्य का होता है। पचास वर्ष के बाद किसी नवीन भाव को स्वीकार करने की चेतना अथवा किसी नये कार्य को हाथ में लेने की क्षमता कम होने लग जाती है।

जीवन का यह मध्य काल केवल शारीरिक व मानसिक क्षमता की दृष्टि से ही नहीं वरन् पचास वर्ष के पश्चात के जीवन को भी क्षमतावान बनाए रखने की दृष्टि से महत्वपूर्ण काल होता है।

जीवन के ऐसे ही क्षणों में ऐसी विशेष साधना को सम्पन्न कर लेना चाहिए, वह होती है अप्सरा साधना, क्योंकि अप्सरा साधना से शरीर को जो ऊर्जा, और शारीरिक ऊर्जा से भी अधिक आवश्यक मानसिक उल्लास प्राप्त होता है वह आगामी जीवन के लिए अनेक रूपों में लाभप्रद सिद्ध होती है।

यह एक अनुभूत तथ्य है कि यदि अप्सरा साधना को सम्पन्न करने के उपरान्त अन्य साधनाओं को प्रारम्भ किया जाए तो उनमें अपेक्षाकृत अधिक तीव्रता से सफलता प्राप्त

होने की स्थिति बन जाती है क्योंकि अप्सरा साधना करने के पश्चात निश्चय ही साधक के शरीर में ऐसे परिवर्तन हो जाते हैं, जो आन्तरिक रूप से नित्य यौवनवान बनाए रखने में सहायक सिद्ध होते हैं।

रम्भा-उच्चतम अप्सरा

उच्चकोटि की अप्सराओं की श्रेणी में रम्भा का प्रथम स्थान है, जो शिष्ट और मर्यादित मानी जाती है, सौन्दर्य की दृष्टि से अनुपमेय कही जा सकती है। शारीरिक सौन्दर्य, वाणी की मधुरता नृत्य, संगीत, काव्य तथा हास्य और विनोद यौवन की मस्ती, ताजगी, उल्लास और उमंग ही तो रम्भा हैं, जिसकी साधना से वृद्ध व्यक्ति भी यौवनवान होकर सौभाग्यशाली बन जाता है। जिसकी साधना से योगी भी अपनी साधनाओं में पूर्णता प्राप्त करता है। इच्छित पौरुष एवं सौन्दर्य प्राप्ति के लिए प्रत्येक पुरुष एवं नारी को इस साधना में अवश्य सचिलता चाहिए। सम्पूर्ण प्रकृति-सौन्दर्य को समेट कर यदि साकार रूप दिया जाय तो उसका नाम रम्भा होगा। सुन्दर मांसल शरीर, उन्नत एवं सुडौल वक्षस्थल, काले, घने और लम्बे बाल, सजीव एवं माधुर्य पूर्ण आंखों का जादू, मन को मुग्ध कर देने वाली मुस्कान, दिल को गुदगुदा देने वाला अंदाज, यौवन भार से लदी हुई रम्भा बड़े से बड़े योगियों के मन को भी विचलित कर देती है। जिसकी देह यष्टि से प्रवाहित दिव्य गंध से आकर्षित देवता भी जिसके सानिध्य के लिए लालायित देखे जाते हैं।

- ★ सुन्दरतम वस्त्रालंकारों से सुसज्जित चिरयौवना, जो प्रेमिका या प्रिया के रूप में साधक के समक्ष उपस्थित रहती है, साधक को सम्पूर्ण भौतिक सुख के साथ मानसिक ऊर्जा, शारीरिक बल एवं वासन्ती सौन्दर्य से परिपूर्ण कर देती है।
- ★ इस साधना के सिद्ध होने पर वह साधक के साथ छाया की तरह जीवन भर सुन्दर और सौम्य रूप में रहती है तथा उसके सभी मनोरथों को पूर्ण करने में सहायक होती है।
- ★ रम्भा साधना सिद्ध होने पर सामने वाला व्यक्ति स्वयं खिंचा चला आए, यहीं तो चुम्बकीय व्यक्तित्व है।
- ★ इस साधना से साधक के शरीर से रोग, जर्जरता एवं वृद्धता समाप्त हो जाती है।



यह जीवन की सर्वश्रेष्ठ साधना है; जिसे देवताओं ने सिद्ध किया, इसके साथ ही ऋषि-मुनि, योगी संन्यासी आदि ने भी सिद्ध किया, यह सौम्य साधना है।

★ इस साधना से प्रेम और समर्पण की कला व्यक्ति में स्वतः प्रस्फुटित होती है क्योंकि जीवन में यदि प्रेम नहीं होगा तो व्यक्ति तनावों से, बीमारियों से ग्रस्त होकर समाप्त हो जाएगा। प्रेम की अभिव्यक्ति करने का सौभाग्य और सक्षमता माध्यम है रम्भा साधना। जिन्होंने रम्भा साधना नहीं की है, उसके जीवन में प्रेम नहीं है, तन्मयता नहीं है, प्रफुल्लता भी नहीं है।

साधना-विधान

सामग्री - प्राण प्रतिष्ठित रम्भोत्कीलन यंत्र, अप्सरा माला, सौन्दर्य गुटिका तथा साफल्य मुद्रिका। यह रात्रिकालीन 27 दिन की साधना है। इस साधना को किसी भी पूर्णिमा को, शुक्रवार को अथवा किसी भी गुरु पुष्य, रवि पुष्य, सर्वार्थ सिद्धि योग के दिन से प्रारंभ करें।

साधना प्रारंभ करने से पूर्व साधक को चाहिए कि स्नान

काम का धार्मिक आधार

व्यक्ति की उत्तरी

इन्द्रियों की तुष्टि एवं
अदम्य इच्छाओं के
विनाश करता है। व्यक्ति
आत्मिक उत्थान की
ओर अब्सर होकर
धार्मिक बनता है।
मनुष्य का प्रेम, रौह,
अनुराग एवं आकर्षण
उत्तर अवस्था में ईश्वर
के प्रति आकृष्ट होता है,
जो भौक्त का भार्त है। वह
प्रियतर ईश्वर के प्रति
अनुरक्त होता जाता है
और उसे भौतिकों के प्रति
विनाश हो जाती है।

आदि से निवृत होकर अपने सामने चौकी पर गुलाबी वस्त्र बिछा लें, पीला या सफेद किसी भी आसन पर बैठें, आकर्षक और सुन्दर वस्त्र पहनें, पूर्व दिशा की ओर मुख करके बैठें, धी का दीपक जला लें, सामने चौकी पर एक थाली या प्लेट रख लें, दोनों हाथों में गुलाब की पंखुड़ियां लेकर रम्भा का आह्वान करें।

॥अरे रम्भे आगच्छ पूर्ण यौवन संस्तुते॥

यह आवश्यक है कि यह आह्वान कम से कम 101 बार अवश्य हो। प्रत्येक आह्वान मंत्र के साथ एक पंखुड़ी थाली में रखें इस प्रकार आह्वान से पूरी थाली पुष्प-पंखुडियों से भर दें।

अब अप्सरा माला को पंखुडियों के ऊपर रख दें इसके बाद अपने बैठने के आसन पर और अपने ऊपर इत्र छिड़कें। रम्भोत्कीलन यंत्र को माला के आसन पर स्थापित करें। गुटिका को यंत्र के दार्यों ओर तथा साफल्य मुद्रिका को यंत्र के बांयों ओर स्थापित करें। सुगन्धित अगरबत्ती एवं धी का दीपक साधनाकाल तक जलते रहना चाहिए।

सबसे पहले गुरु पूजन और गुरु मंत्र जप कर लें। फिर यंत्र तथा अन्य साधना सामग्री का पंचोपचार से पूजन सम्पन्न करें। इसके बाद बायें हाथ में गुलाबी रंग से रंगे हुए चावल रखें, और निम्न मंत्रों को बोलकर यंत्र पर चढ़ावें।

ॐ दिव्यायै नमः । ॐ प्राणप्रियायै नमः ।
ॐ वार्षीश्वर्यै नमः । ॐ ऊर्जस्वलतायै नमः ।
ॐ सौन्दर्य प्रियायै नमः । ॐ देवप्रियायै नमः ।
ॐ यौवनप्रियायै नमः । ॐ ऐश्वर्यप्रदायै नमः ।
ॐ सौभाग्यदायै नमः । ॐ धनदायै रम्भायै नमः ।
ॐ आरोग्य प्रदायै नमः ।

इसके बाद उपरोक्त अप्सरा माला से निम्न मंत्र का 5 माला प्रतिदिन जप करें।

मंत्र

॥ॐ हरि रं रम्भे! आगच्छ आज्ञां पालय
मनोवाञ्छितं देहि एं ॐ स्वाहा॥

प्रत्येक दिन अप्सरा-आह्वान करें और प्रत्येक दिन को दो गुलाब की माला रखें। एक माला स्वयं पहन लें, दूसरी माला को रखें, जब भी ऐसा आभास हो कि किसी का आगमन हो रहा है अथवा सुगंध एक दम बढ़ने लगे, अप्सरा का बिम्ब नेत्र बन्द होने पर भी स्पष्ट होने लगे तो दूसरी माला सामने यंत्र पर पहना दें।

27 दिन की साधना में प्रत्येक दिन नये-नये अनुभव होते हैं चित्त में सौन्दर्य भाव बढ़ने लगता है। कई बार तो रूप में अभिवृद्धि स्पष्ट दिखाई देती है। स्त्रियों द्वारा इस साधना को सम्पन्न करने पर चेहरे पर अद्वितीय ताजगी प्राप्त होती है।

साधना पूर्णता के पश्चात् मुद्रिका को अनामिका उंगली में पहन लें, शेष सभी सामग्री को जल में प्रवाहित कर दें। यह सुपरीक्षित साधना है। पूर्ण मनोयोग से साधना करने पर अवश्य मनोकामना पूर्ण होती ही है।

अतः विधिष्ठ साधना सामग्री तो उपहार स्वरूप ही है साथ ही इसके माध्यम से गुरु कार्य के रूप में आप अपने दो मित्रों को प्रतिका सदस्य बनाएं तथा कार्ड क्रं 6 पर अपने दोनों मित्रों का पता लिखकर भेजें। कार्ड मिलाने पर 490/- की टी.पी.पी. ट्रांस आपको इस साधना की मंत्र सिद्ध प्राण प्रतिष्ठायुक्त सामग्री भेज देंगे तथा दोनों मित्रों को एक वर्ष तक नियमित रूप से प्रतिका भेजी जाएगी।

इस योजना का उद्देश्य आपके गुरु परिवार में दो नये सदस्यों को जोड़ना है। यदि आपके लिये यह संभव नहीं है तो आप 490/- की न्यौछावर राशि भेज कर यह साधना सामग्री-पैकेट प्राप्त कर सकते हैं।



जीवन में इस आवश्यक है
 जीवन में सौन्दर्य आवश्यक है
 जीवन में आहलाद् आवश्यक है
 जीवन में उल्लास आवश्यक है
 जीवन में सुरक्षा आवश्यक है

ऐसे श्रेष्ठ जीवन के लिए सम्पन्न करें

अष्ट साधनों साधना

बहुत से लोग यद्धिणी का नाम सुनते ही उर जाते हैं कि ये बहुत भयानक होती हैं, किसी चुड़ैल की तरह, किसी प्रेतनी की तरह, मगर ये सब मन के बहुत हैं। यद्धिणी साधक के समक्ष एक बहुत ही सौम्य और सुन्दर रुरी के रूप में प्रस्तुत होती है। देवताओं के कोषाध्यक्ष कुबेर स्वयं भी यक्ष जाति के ही हैं।

यद्धिणी साधना का साधना के क्षेत्र में एक निश्चित अर्थ है। यद्धिणी प्रेमिका मात्र ही होती है, भोग्या नहीं, और यूं भी कोई भी रुरी भोग की भावभूमि तो हो ही नहीं सकती, वह तो सही अर्थों में सौन्दर्य बोध, प्रेम को जगत करने की भावभूमि होती है। यद्यपि मन का प्रस्फुटन भी दैरिक सौन्दर्य से होता है किन्तु आगे चलकर वह भी भावनात्मक रूप से परिवर्तित हो जाता है या हो जाना चाहिए और भावना का सबसे श्रेष्ठ प्रस्फुटन तो रुरी के रूप में सहगमिनी बना कर कर ही संभव हो सकता है। यदि यह धारणा एक लौकिक रुरी के संदर्भ में सत्य है तो क्यों नहीं यद्धिणी के संदर्भ में सत्य होगी? वह तो प्रायः कई अर्थों में एक सामान्य रुरी से श्रेष्ठ रुरी होती है।

★ ★ ★ ★ ★ ★ ★ ★ ★ ★ ★ ★

तंत्र विज्ञान के रहस्य को यदि साधक पूर्ण रूप से आत्मसात् दुर्लभ साधनाएं वर्णित हैं। साधक यदि गुरु कृपा प्राप्त कर लेता है, तो फिर उसके लिए सामाजिक या भौतिक समस्या किसी एक तंत्र का भी पूर्ण रूप से अध्ययन कर लेता है, तो या बाधा जैसी कोई वस्तु स्थिर नहीं रह पाती। तंत्र विज्ञान का उसके लिये पहाड़ जैसी समस्या से भी टकराना अत्यंत लघु आधार ही है, कि पूर्ण रूप से अपने साधक के जीवन से सम्बन्धित क्रिया जैसा प्रतीत होने लगता है।

बाधाओं को समाप्त कर एकाग्रता पूर्वक उसे तंत्र के क्षेत्र में बढ़ने के लिए अग्रसर करे।

साधक सरलतापूर्वक तंत्र की व्याख्या को समझ सके, इस सकता। साधक तो समस्त सांसारिक क्रियायें करता हुआ भी निर्लिपि हेतु तंत्र में अनेक ग्रंथ प्राप्त होते हैं, जिनमें अत्यन्त गुद्या और भाव से अपने इष्ट चिन्तन में प्रवृत्त रहता है।

साधक में यदि गुरु के प्रति विश्वास न हो, यदि उसमें जोश न हो, उत्साह न हो, तो फिर वह साधनाओं में सफलता नहीं प्राप्त कर

ऐसे ही साधकों के लिए 'उद्घामरेश्वर तंत्र' में एक अत्यंत उच्चकोटि की साधना वर्णित है, जिसे सम्पन्न करके वह अपनी समस्त मनोकामनाओं को पूर्ण कर सकता है तथा अपने जीवन में पूर्णता के साथ भौतिक सुख-सम्पदा का पूर्ण आनन्द प्राप्त कर सकता है।

'अष्ट यक्षिणी साधना' के नाम से वर्णित यह साधना प्रमुख रूप से यक्ष जाति की श्रेष्ठ रमणियों, जो साधक के जीवन में सम्पूर्णता का उद्बोध कराती हैं, की साधना है।

ये प्रमुख यक्षिणियां हैं -

- | | |
|------------------------|-----------------------|
| 1. सुर सुन्दरी यक्षिणी | 2. मनोहारिणी यक्षिणी, |
| 3. कनकावती यक्षिणी | 4. कामेश्वरी यक्षिणी |
| 5. रतिप्रिया यक्षिणी | 6. पद्मिनी यक्षिणी |
| 7. नटी यक्षिणी | 8. अनुरागिणी यक्षिणी |

प्रत्येक यक्षिणी साधक के लिये अलग-अलग प्रकार से सहयोगिनी होती है, अतः साधक को चाहिये कि वह आठों यक्षिणियों को ही सिद्ध कर ले।

यहां पर, अष्ट यक्षिणियों के विषय में संक्षिप्त विवरण दिया जा रहा है।

सुर सुन्दरी यक्षिणी

यह सुडौल देह्यष्टि, आर्कषक चेहरा, दिव्य आभा लिये हुए, नाजुकता से भरी हुई है। देव योनि के समान सुन्दर होने के कारण इसे सुर सुन्दरी यक्षिणी कहा गया है।

सुर सुन्दरी की विशेषता है, कि साधक उसे जिस रूप में पाना चाहता है, वह प्राप्त होती है - चाहे वह माँ का स्वरूप हो, चाहे वह बहन का या पत्नी का; या प्रेमिका का। यह यक्षिणी सिद्ध होने के पश्चात् साधक को ऐश्वर्य, धन, सम्पत्ति आदि प्रदान करती है।

मनोहारिणी यक्षिणी

अण्डाकार चेहरा, हरिण के समान नेत्र, गौर वर्णीय, चन्दन की सुगन्ध से आपूरित मनोहारिणी यक्षिणी सिद्ध होने के पश्चात् साधक के व्यक्तित्व को ऐसा सम्मोहक बना देती है, कि कोई भी, चाहे वह पुरुष हो या स्त्री, उसके सम्मोहन पाश में बंध ही जाता है। यह साधक को धन आदि प्रदान कर उसे संतुष्ट कराती है।

कनकावती यक्षिणी

रक्त वस्त्र धारण की हुई, मुर्ध करने वाली और अनिन्द्य सौन्दर्य की स्वामिनी, षोडश वर्षीया, बाला स्वरूपा कनकावती यक्षिणी है।

कनकावती यक्षिणी को सिद्ध करने के पश्चात् साधक में तेजस्विता तथा प्रखरता आ जाती है, फिर वह विरोधी को भी मोहित करने की क्षमता प्राप्त कर लेता है। यह साधक की प्रत्येक मनोकामना को पूर्ण करने में सहायक होती है।

कामेश्वरी यक्षिणी

सदैव चंचल रहने वाली, उद्घाम यौवन युक्त, जिससे मादकता छलकती हुई बिम्बित होती हैं, साधक का हर क्षण मनोरंजन करती है कामेश्वरी यक्षिणी।

यह साधक को पौरुष प्रदान करती है तथा पत्नी सुख की कामना करने पर पूर्ण पत्नीवत् रूप में साधक की कामना पूर्ण करती है। साधक को जब भी द्रव्य की आवश्यकता होती है, वह तत्क्षण उपलब्ध कराने में सहायक होती है।

रति प्रिया यक्षिणी

स्वर्ण के समान देह कान्ति से युक्त, सभी मंगल आभूषणों से सुसज्जित, प्रफुल्लता प्रदान करने वाली है रति प्रिया यक्षिणी।

रति प्रिया यक्षिणी साधक को हर क्षण प्रफुल्लित रखती है तथा उसे दृढ़ता भी प्रदान करती है। साधक और साधिका ग्रदि संयमित होकर इस साधना को सम्पन्न कर लें तो निश्चय ही उन्हें कामदेव और रति के समान सौन्दर्य की उपलब्धि होती ही है।

पद्मिनी यक्षिणी

कमल के समान कोमल, श्यामवर्णा, उन्नत स्तन, अधरों पर सदैव मुस्कान खेलती रहती है, तथा इसके नेत्र अत्यधिक सुन्दर हैं।

पद्मिनी यक्षिणी साधना साधक को अपना सान्निध्य नित्य प्रति प्रदान करती हैं। इसकी सबसे बड़ी विशेषता यह है, कि यह अपने साधक में आत्मविश्वास व स्थिरता प्रदान कराती है तथा सदैव उसे मानसिक बल प्रदान करती हुई उन्नति की ओर अग्रसर करती हैं।

नटी यक्षिणी

नटी यक्षिणी को 'विश्वामित्र' ने भी सिद्ध किया था। यह अपने साधक की पूर्ण रूप से सुरक्षा करती है तथा किसी भी प्रकार की विपरीत परिस्थितियों से साधक को सरलता पूर्वक निष्कलंक बचाती है।

अनुरागिणी यक्षिणी

अनुरागिणी यक्षिणी शुभ्रवर्णा हैं। साधक पर प्रसन्न होने पर वह उसे नित्य धन, मान, यश आदि प्रदान करती हैं तथा साधक की इच्छा होने पर उसके साथ उल्लास करती है।

अष्ट यक्षिणी साधना को सम्पन्न करने वाले साधक को यह साधना अत्यन्त संयुक्त होकर करनी चाहिए। सम्पूर्ण साधना काल में ब्रह्मचर्य का पालन अनिवार्य है। साधक यह साधना करने से पूर्व यदि सम्भव हो, तो 'अष्ट यक्षिणी दीक्षा' भी लें। साधना काल में साधक मांस, मदिरा का सेवन न करें तथा मानसिक रूप से निरन्तर गुरु मंत्र का जप करते रहें।

यह साधना रात्रिकाल में ही सम्पन्न करें। साधनात्मक अनुभवों की चर्चा किसी से भी नहीं करें, न ही किसी अन्य को साधना के विषय में बतायें।

निश्चय ही यह साधना साधक के जीवन में भौतिक पक्ष को पूर्ण करने में अत्यन्त सहायक सिद्ध होगी, क्योंकि अष्ट यक्षिणी सिद्ध साधक को जीवन में कभी भी निराशा या हार का सामना नहीं करना पड़ता है। वह अपने क्षेत्र में अद्वितीयता प्राप्त करता ही है।

साधना विधान

इस साधना में आवश्यक सामग्री है - '४ अष्टाक्ष गुटिकाएं' तथा 'अष्ट यक्षिणी सिद्ध यंत्र' एवं 'यक्षिणी माला'।

साधक यह साधना किसी भी शुक्रवार को प्रारम्भ कर सकता है। यह तीन दिन की साधना है।

लकड़ी के बाजोट पर सफेद वस्त्र बिछायें तथा उस पर कुकुम से निम्न यंत्र बनाएं -



फिर उपरोक्त प्रकार से रेखांकित यंत्र में जहां-जहां 'ही' बीज अंकित है वहां एक-एक अष्टाक्ष गुटिका स्थापित करें। फिर अष्ट यक्षिणी का ध्यान कर प्रत्येक गुटिका का पूजन कुकुम, पुष्प तथा अक्षत से करें। धूप तथा दीप लगायें।

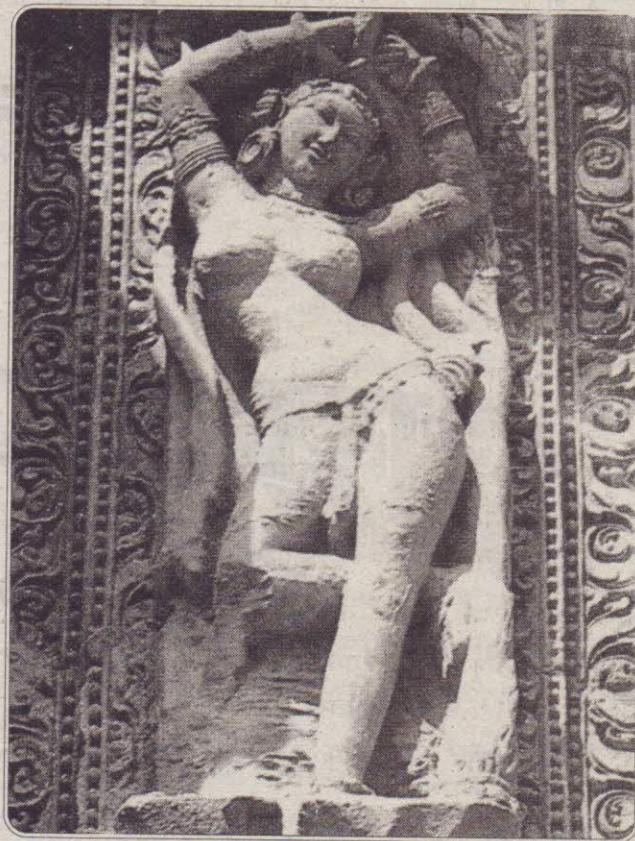
फिर यक्षिणी से निम्न मूल मंत्र की एक माला मंत्र जप करें, फिर क्रमानुसार दिये हुए आठों यक्षिणियों के मंत्रों की एक-एक माला जप करें। प्रत्येक यक्षिणी मंत्र की एक माला जप करने से पूर्व तथा बाद में मूल मंत्र की एक माला जप करें। उदाहरणार्थ पहले मूल मंत्र की एक माला मंत्र जप करें, फिर सुर-सुन्दरी यक्षिणी मंत्र की एक माला मंत्र जप करें, फिर मूल मंत्र की एक माला मंत्र जप करें, फिर क्रमशः प्रत्येक यक्षिणी से सम्बन्धित मंत्र का जप करना है। ऐसा तीन दिन तक नित्य करें।

मूल अष्ट यक्षिणी मंत्र

॥३५ ॐ श्रीं अष्ट यक्षिणी सिद्धि देहि नमः ॥

सुर सुन्दरी मंत्र

॥३५ ॐ हीं अरगच्छ सुर सुन्दरी स्वाहा ॥



मनोहारिणी मंत्र

॥३५ हीं अरगच्छ अरगच्छ मनोहारी स्वाहा ॥

कनकावती मंत्र

॥३५ हीं हूं रक्ष कर्मणि अरगच्छ कनकावति स्वाहा ॥

कामेश्वरी मंत्र

॥३५ क्रीं कामेश्वरी वश्य प्रियाय क्रीं ॐ ॥

रति प्रिया मंत्र

॥३५ हीं अरगच्छ अरगच्छ रति प्रिया स्वाहा ॥

पद्मिनी मंत्र

॥३५ हीं अरगच्छ अरगच्छ पद्मिनी स्वाहा ॥

नटी मंत्र

॥३५ हीं अरगच्छ अरगच्छ नटि स्वाहा ॥

अनुरागिणी मंत्र

॥३५ हीं अनुरागिणी अरगच्छ अरगच्छ स्वाहा ॥

मंत्र जप समाप्ति पर साधक साधना कक्ष में ही सोयें। अगले दिन पुनः इसी प्रकार से साधना सम्पन्न करें, तीसरे दिन साधना सामग्री को जिस वस्त्र पर यंत्र बनाया है, उसी में बांध कर नदी में प्रवाहित कर दें।

ल
क्ष
मी

सा
ध
ना

आष्ट लक्ष्मी में

सर्वाधिक महत्वपूर्ण

अज्ञपूर्णा लक्ष्मी

अन्नपूर्णा मात्र अन्न या धान्य प्राप्ति की ही देवी नहीं हैं, वह तो अन्न के साथ ही आध्यात्मिक और भौतिक उन्नति के लिए आवश्यक संस्कार भी साधक को प्रदान करती हैं। कहावत मशहूर है -

जैसा होगा अज्ञ, वैसा होगा मन,
जैसा होगा पाणी, वैसी होगी वाणी।

अर्थात् अन्न मात्र कोई पेट भरने वाली वस्तु नहीं है, अपितु व्यक्ति के समस्त संस्कारों का जन्म उसके ग्रहण किए गए अन्न से ही निर्मित होता है। यदि अन्न पवित्र होगा, शुद्ध होगा, सद्वृत्ति से उपार्जित होगा, तो निश्चय ही उसे ग्रहण करने वाले में बुद्धि, संस्कार, सद्वृत्ति का विकास होगा।

शास्त्रों में कहा गया है - 'अन्नब्रह्म' अर्थात् अन्न गेहूँ या चावल के दानों को नहीं कहते बल्कि अन्न तो साक्षात् ब्रह्म का स्वरूप है, जिससे पूरे शरीर का निर्माण हुआ है, जिससे पूरे शरीर को जीवनी शक्ति प्राप्त होती है। आर्य परिवारों में बालकों को यह शिक्षा दी जाती है, कि भोजन करने से पूर्व भगवान को अर्पित कर के अन्न ग्रहण करें, यह अन्न की दिव्यता का सूचक है। भोजन में भी प्रकार होते हैं - तामसिक, राजसिक और सात्त्विक - इसी के अनुसार व्यक्तित्व बनता है। भक्ष्य-अभक्ष्य में भेद न करने वालों की बुद्धि भी वैसी ही हो जाती है, जबकि जो साधक हैं, वे इस बात को जानते हैं, कि अन्न का मन से कितना गहरा सम्बन्ध है, और वे सात्त्विक आहार ही ग्रहण करते हैं।

अन्न के तामसिक या सात्त्विक होने पर ही इतिश्री नहीं हो जाती, अपितु यह भोजन का निर्माण करने वाले व्यक्ति के

श्रेष्ठ जीवन का

आधार है श्रेष्ठ अज्ञ,

और अज्ञ केवल अनाज या भोज्य पदार्थ को नहीं कहा जाता, अज्ञ का तात्पर्य है अपने देह के भीतर ग्रहण करना, श्रेष्ठ भोजन, श्रेष्ठ विचार, श्रेष्ठ भाव, श्रेष्ठ उद्देश्य, जिससे जीवन में अभीष्ट लक्ष्य प्राप्त हो सके। इसके लिये आवश्यक है लक्ष्मी की अज्ञपूर्णा साधना, जिसे संसार के सारे महान् योगियों ने सिद्ध किया।

आचार, विचार, संस्कार, पवित्रता-अपवित्रता आदि का भी भोजन पर प्रभाव पड़ता है।

गुरु नानक एक बार सैदपुर पहुंचे। वहां के एक उच्च अधिकारी मलिक भागो के घर पितर पक्ष के अवसर पर भोज का आयोजन था। उसने गुरु नानक को भी भोज में आमंत्रित किया, परन्तु नानकदेव ने भोजन करने से इन्कार कर दिया। मलिक भागो ने क्रोध में पूछा - 'मेरे यहां भोजन करने में आपको क्यों आपत्ति है?'

‘क्योंकि तुम्हारे भोजन में खून है।’ - नानक बोले। मलिक चिढ़कर बोला - ‘जिस नीच लालो के धर आपने भोजन किया है, क्या उसके भोजन में दूध था?’

‘हां तुम ठीक कहते हो, उसमें वास्तव में दूध था।’

‘दूध था?’ मलिक ने विस्मय और क्रोध से मिले स्वर में पूछा।

‘हां, लालो का भोजन कठोर परिश्रम की कमाई है, इसलिए उसमें दूध है।’

‘और मेरा भोजन?’

‘असहाय और निर्धन लोगों की बेगार है, इसलिए उसमें खून है।’ नानक बोले।

‘इसका कोई प्रमाण?’

‘प्रमाण तो कोई नहीं, परन्तु सत्य को प्रमाणित किया जा सकता है’, और ऐसा बोलकर नानकदेव ने एक हाथ में भाई की रूखी रोटी ली और दूसरे हाथ में मलिक का पकवान। फिर दोनों को निचोड़ा। ऐसा करने पर लालो की रूखी-सूखी रोटी से दूध निकला और मलिक भागों के पकवान से खून।

यह देखकर मलिक ने नानक के चरणों में गिरकर आजीवन परिश्रम से आजीविका कमाने का प्रण किया। अर्थात् किस तरह अन्न उपर्जित किया गया है, साधक के जीवन में इसका भी महत्व है, जो श्रेष्ठ साधक होते हैं, वे हर कहीं भोजन नहीं कर लेते।

अन्नपूर्णा जीवन में अन्न, धान्य एवं सकल भोज्य पदार्थों को प्रदान करने वाली देवी के रूप में पूजित हैं। आजं भी भारत में कई ऐसे योगी हैं, जिन्हें अन्नपूर्णा सिद्धि प्राप्त है, जिनमें से कुछ इस प्रकार हैं -

1. स्वामी महेशानन्द जी उत्तरकाशी, 2. स्वामी रामेश्वरानन्द जी, गंगोत्री, 3. लाल बाबा, गंगोत्री मार्ग, 4. बहिन सुप्रिया, केदारनाथ, 5. स्वामी विद्यानन्द, शेषनाग, कश्मीर, 6. हीरजाभाँई मेघाजी, सोमनाथ, गुजरात, 7. स्वामी रघुनाथ, कन्याकुमारी।

जिन्हें अन्नपूर्णा सिद्धि थी

गढ़वाल का एक महत्वपूर्ण शहर है ‘टिहरी’ और इससे थोड़ी ही दूर पर एक महत्वपूर्ण आश्रम है ‘शिवानन्द आश्रम’। इस आश्रम में लगभग तीस-चालीस शिष्य और स्वामी शिवानन्द जी रहते हैं, ये सिद्ध योगी हैं और पूरे गढ़वाल में इनकी चर्चा है। सौ वर्ष से भी काफी अधिक आयु होने पर भी पहाड़ों में पैदल चल लेते हैं, आंखों पर चश्मे की जरूरत नहीं है, सिर पर चाहिए। जो प्रदर्शन के चक्कर में पड़ते हैं, या जो धन अर्जन

बाल काले हैं और मुंह में पूरे दांत हैं। लगभग सौ वर्षों से वे विविध साधनाओं में रत रहे हैं, पर जिसकी वजह से वे सर्वाधिक प्रसिद्ध हैं वह है, उनकी ‘अन्नपूर्णा सिद्धि’।

गढ़वाल में शायद ही कोई ऐसा व्यक्ति बचा होगा, जिसने शिवानन्द आश्रम की यात्रा नहीं की होगी और भोजन नहीं किया होगा। सभी शिष्य अत्यन्त ही नम्र, विनीत और आग्रह करके भोजन करते हैं, जबकि पूरे आश्रम में किसी प्रकार का कोई खाद्य पदार्थ नहीं है। जो वैज्ञानिक दृष्टिकोण की रट लगाए रहते हैं, उनके लिए इस आश्रम का द्वार स्वैच्छिक खुला है, वे जाकर अपनी बुद्धि आजमा सकते हैं।

स्वामी शिवानन्द जी पूज्यपाद सद्गुरुदेव निखिलेश्वरानन्द जी के शिष्य रहे हैं और कई वर्षों तक उनके साथ रहकर उनकी सेवा करते हुए साधनाएं सम्पन्न की थीं। उनके द्वारा ही स्वामी शिवानन्द जी को अन्नपूर्णा साधना प्राप्त हुई थी और सिद्ध होने पर आज्ञा दी थी, कि तुम्हें गढ़वाल में ही कहीं पर आश्रम स्थापित करना है और गरीब लोगों के लिए अन्न, धन जुटाना है। गरीब बच्चों की शिक्षा व्यवस्था करनी है एवं साथ ही आध्यात्मिक चेतना भी जाग्रत करनी है। आज से लगभग बारह-तेरह वर्ष पूर्व जब सद्गुरुदेव गृहस्थ रूप में उनके आश्रम पहुंचे थे, तो एकदम से उन्हें विश्वास नहीं हो सका, स्वामी शिवानन्द एकदम जड़वत् खड़े के खड़े ही रह गए, उनकी आंखों से अश्रुधार निकलने लगी और वे गुरुदेव के चरणों में प्रणिपात हो गए।

इस अवसर पर सद्गुरुदेव के साथ ही गए एक शिष्य ने लिखा है कि आश्रम में ही एक कुटिया थी, कुटिया में न तो किसी प्रकार का बर्तन था और न ही किसी प्रकार का कोई खाद्य पदार्थ। बाहर भोज हो रहा था, उस कुटिया में शिष्य आते, जमीन पर हाथ रखते, और जिस पदार्थ की कामना करते उससे सम्बन्धित पदार्थ उनके हाथ के सामने उपस्थित हो जाता और वह शिष्य उसे परोसने बाहर चला जाता। इसी सिद्धि के आधार पर स्वामी शिवानन्द जी ने इलाहाबाद के एक कुम्भ मेले के अवसर पर दस हजार साधुओं को भोजन कराया था।

अन्नपूर्णा साधना आज भी साधकों के पास सुरक्षित है और साधना द्वारा सिद्ध की जा सकती है, परन्तु इसके लिए साधक का सत्संकल्पों से पूर्ण होना आवश्यक है। जो व्यक्ति यह सिद्धि प्राप्त हो जाने पर स्वार्थ प्रयोजन में इरादा नहीं रखते हैं, उन्हें ही इस साधना को सम्पन्न करने का संकल्प करना चल लेते हैं, आंखों पर चश्मे की जरूरत नहीं है, सिर पर चाहिए। जो प्रदर्शन के चक्कर में पड़ते हैं, या जो धन अर्जन

के उद्देश्य से ऐसी सिद्धि की आकांक्षा रखते हैं, उन्हें यह सिद्धि प्राप्त नहीं हो सकती।

इस साधना के सिद्ध होने पर साधक को कभी भी अन्न, धन्य की कमी नहीं होती। प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष रूप से देवी अन्नपूर्णा की कृपा उसके ऊपर बरसती ही रहती है। कभी भी घर से कोई भूखा नहीं जाता और न ही घर में किसी वस्तु का अकाल पड़ता है।

अन्नपूर्णा लक्ष्मी साधना के लाभ

विश्वामित्र प्रणीत 'तंत्र सार' में अन्नपूर्णा साधना के निम्न लाभ बताए हैं -

1. इस साधना के सिद्ध करने के बाद व्यक्ति सिद्ध योगी बन जाता है, उसे महादेवियों के दर्शन प्राप्त होने लगते हैं, जिससे उसका साधनात्मक स्तर निरन्तर बढ़ता जाता है।
2. अन्नपूर्णा साधना-सिद्धि होने पर कई सिद्धियां तो साधक को यों ही अपने आप प्राप्त हो जाती हैं।
3. साधक जहां भी रहता है, उसे मनोवांछित भोज्य पदार्थ उपलब्ध होता है, कितने ही लोग क्यों न हों, वह सबको आतिथ्य सत्कार देने में समर्थ होता है।
4. अन्नपूर्णा साधना को सम्पन्न करने के बाद साधक द्वारा ग्रहण किया हुआ अन्न उसके शरीर, बुद्धि और मन की शुद्धि कर उसे योग पथ पर आरूढ़ करता है।
5. एक बार भी यदि इस साधना को सम्पन्न कर लिया जाए, तो साधना के बाद, घर में जो भी अन्न पकता है, उस अन्न को ग्रहण करने से भोजन करने वाले सभी सदस्यों के अन्दर सद्विचारों का, सुसंस्कारों का, पवित्र भावनाओं का, आपसी प्रेम आदि सदगुणों का जागरण होता है। घर स्वर्ग तुल्य हो जाता है, क्लेश समाप्त हो जाते हैं, सभी के अन्दर परिवर्तन होता है, और संतान सन्मार्ग पर चलकर उन्नति करती है।
6. अन्नपूर्णा साधना सिद्धि करने के बाद साधक के लिए सिद्धाश्रम का मार्ग स्वतः ही खुल जाता है।
7. यह मात्र घर में अन्न की कमी को पूर्ण करने की साधना नहीं, अपितु घर में सुसंस्कारों का सूत्रपात्र करने की साधना है, शरीर एवं मन के विकारों को दूर करने की साधना है क्योंकि अन्नपूर्णा की कृपा से साधक के घर अन्न, मात्र फिर अन्न नहीं रह जाता अपितु एक दिव्य प्रसाद बन जाता है, जिसको ग्रहण करने के बाद

रोग, शोक, सन्ताप, दुःख, दारिद्र्य, दैन्य आदि कुछ भी ठहर नहीं सकते।

साधना विधि

यह साधना किसी पुष्प नक्षत्र से प्रारम्भ की जा सकती है। साधक रेशमी धोती धारण कर बैठें, धी का दीपक व अगरबत्ती लगा लें। किसी पात्र में पुष्पासन देकर 'अन्नपूर्णा सिद्धि यंत्र' स्थापित करें। इसके दाईं और 'मयूर शिखा' तथा यंत्र के बाईं ओर 'शतपूष्पा' को स्थापित करें। इसके बाद सात जायफल (पंसारी की दुकान में मिल सकता है) रख दें और पास में कलश के ऊपर एक नारियल रख दें।

विनियोग -

अब दाहिने हाथ में जल लेकर विनियोग करें -

**ॐ अस्य श्री अन्नपूर्णा महादेवी हृदय स्तोत्र महामत्रस्य
श्री महाकाल भैरव ऋषि उष्णिक छन्दः महाश्वेता स्वरूपिणी
महाकाल सिद्धा श्री अन्नपूर्णा अम्ब देवता, हीं बीजं, हूं शत्ति,
क्रीं कीलकं, श्री अन्नपूर्णा अम्ब प्रसादात् समस्त पदार्थ
प्राप्त्यर्थं मंत्र जपे विनियोग।**

न्यास

जल को भूमि पर छोड़ दें, तथा पूरे शरीर के अंगों को दाहिने हाथ से स्पर्श करते हुए शरीर में, अन्नपूर्णा का स्थापन करते हुए न्यास सम्पन्न करें -

श्रीमहाकाल भैरव ऋष्ये नमः

- शिरसि

उष्णिक छन्दसे नमः

- मुखे

महाश्वेता स्वरूपिणी महाकाल सिद्धि

श्री अन्नपूर्णा अम्ब देवतायै नमः

- हृदि

हीं बीजाय नमः

- लिंगे

हीं शत्त्वये नमः

- नामौ

क्रीं कीलकाय नमः

- पादये

समस्त पदार्थ प्राप्त्यर्थं मंत्र जपे

- सर्वांगे

विनियोगाय नमः

इसके बाद 'अन्नपूर्णा लक्ष्मी माला' से निम्न मंत्र की 11 माला नित्य 30 दिन तक सम्पन्न करनी चाहिए -

अन्नपूर्णा मंत्र

॥३५ क्रीं क्रूं क्रों हूं हूं हीं हीं ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ

अन्नपूर्णायै नमः ॥

साधना समाप्ति के बाद यंत्र को कपड़े में लपेट कर जहां अन्न भण्डार करते हों, वहां रख दें तथा अन्य सभी सामग्री को जल में विसर्जित कर दें।

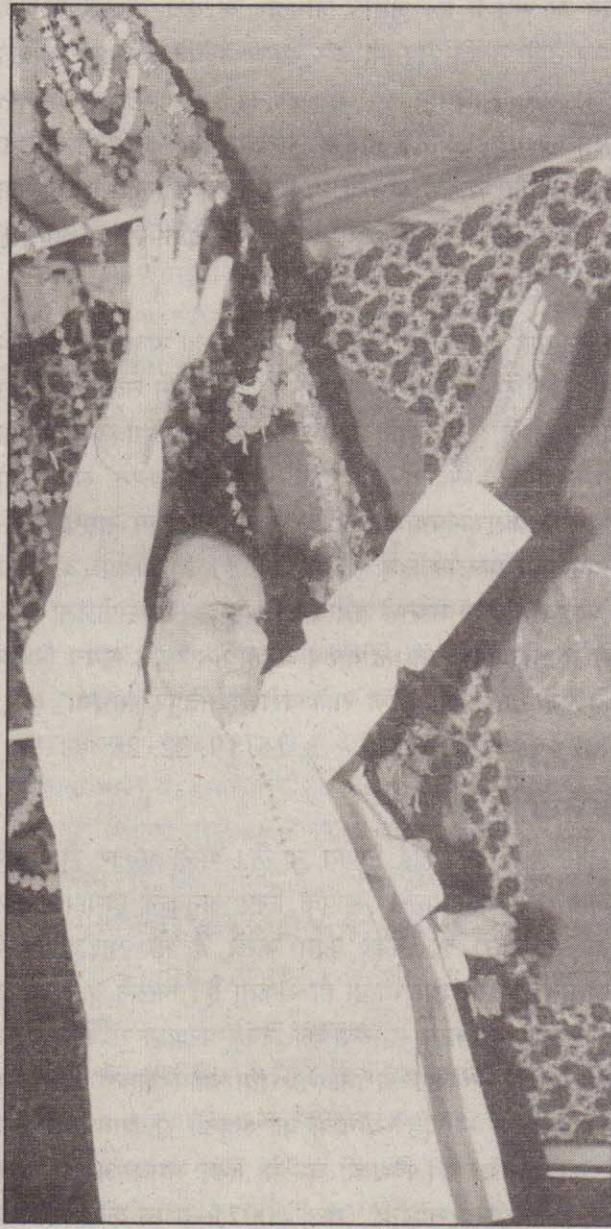
साधना सामग्री - 350/-

मैं समय हूँ

साधक, पाठक तथा सर्वजन सामान्य के लिए समय का वह रूप यहां प्रस्तुत है जो किसी भी व्यक्ति के जीवन में उद्घाटि का कारण होता है तथा जिसे जान कर आप ख्वयं अपने लिए उद्घाटि का मार्ग प्रशस्त कर सकते हैं।

नीचे दी गई सारिणी में समय को श्रेष्ठ रूप में प्रस्तुत किया गया है छ जीवन के लिए आवश्यक किसी भी कार्य के लिये, चाहे वह व्यापार से सम्बन्धित हो, नौकरी से सम्बन्धित हो, घर में शुभ उत्सव से सम्बन्धित हो अथवा अन्य किसी भी कार्य से सम्बन्धित हो, आप इस श्रेष्ठतम् समय का उपयोग कर सकते हैं और सफलता का प्रतिशत 99.9% आपके भाव्य में अंकित हो जायेगा।

ब्रह्म मुहूर्त का समय प्रातः: 4.24 से 6.00 बजे तक ही रहता है।



वार/दिनांक	श्रेष्ठ समय
रविवार (नवम्बर 18, 25) (दिसम्बर 2, 9)	दिन 07:36 से 10:00 तक 12:24 से 02:48 तक 04:24 से 04:30 तक रात 07:36 से 09:12 तक 11:36 से 02:00 तक
सोमवार (नवम्बर 19, 26) (दिसम्बर 3, 10)	दिन 06:00 से 07:30 तक 09:00 से 10:48 तक 01:12 से 06:00 तक रात 08:24 से 11:36 तक 02:00 से 03:36 तक
मंगलवार (नवम्बर 20, 27) (दिसम्बर 4, 11)	दिन 06:00 से 07:36 तक 10:00 से 10:48 तक 12:24 से 02:48 तक रात 08:24 से 11:36 तक 02:00 से 03:36 तक
बुधवार (नवम्बर 21, 28) (दिसम्बर 5, 12)	दिन 06:48 से 11:36 तक रात 06:48 से 10:48 तक 02:00 से 04:24 तक
गुरुवार (नवम्बर 22, 29) (दिसम्बर 6, 13)	दिन 06:00 से 06:48 तक 10:48 से 12:24 तक 03:00 से 06:00 तक रात 10:00 से 12:24 तक
शुक्रवार (नवम्बर 16, 23, 30) (दिसम्बर 7, 14)	दिन 09:12 से 10:30 तक 12:00 से 12:24 तक 02:00 से 06:00 तक रात 08:24 से 10:48 तक 01:12 से 02:00 तक
शनिवार (नवम्बर 17, 24) (दिसम्बर 1, 8, 15)	दिन 10:48 से 02:00 तक 05:12 से 06:00 तक रात 08:24 से 10:48 तक 12:24 से 02:48 तक 04:24 से 06:00 तक

नाक्षत्रपूर्ण कृष्ण वार्षी

मेष -

कोई नया, बहुत समय से सोचा हुआ कार्य आप आरंभ कर पाएंगे, परिस्थितियाँ भी आपके अनुकूल सिद्ध होंगी और आप आशा से कहीं अधिक सफलता प्राप्त कर पाएंगे। धार्मिक एवं आध्यात्मिक चिंतन से आप यात्रा करेंगे, जिससे आपको लाभ होगा, किसी पुराने मित्र या परिचित से मिलकर हर्ष होगा। नौकरी पेशा लोगों के लिए समय उत्तम है तथा पदोन्नति होने की संभावना है। आय में वृद्धि भी हो सकती है तथा विदेश यात्रा हो सकती है। आप 'लक्ष्मी विनायक साधना' (मई 2007) करें। विशेष तिथियाँ - 9, 13, 17, 19, 25, 30 हैं।

वृष -

माह के आरम्भ में आप स्वयं को असमंजस में पाएंगे कि यह करन् या यह करन्? अंत में आप अपनी अंतःशक्ति द्वारा सही निर्णय लेने में सफल होंगे जिससे न केवल आपको अपने कार्यक्षेत्र में अभूतपूर्व सफलता प्राप्त होगी अपितु अगर आप नौकरी में हैं तो पदोन्नति, आय वृद्धि भी हो सकती है। कुल मिलाकर परिस्थिति सर्वथा आपके अनुकूल होगी तथा आप हर्षित अनुभव कर पाएंगे। माह के अंत में यात्रा के योग भी बन रहे हैं तथा यात्रा द्वारा आपको लाभ भी होगा। महिलाओं के लिए समय उन्नतिदायक है। आप 'ज्वालामालिनी साधना' (सितम्बर 2007) करें। तिथियाँ - 3, 8, 11, 17, 22 हैं।

भित्तुन -

समय अच्छा चल रहा है तथा आपको नए अवसर प्राप्त होंगे जिनके कारण आप प्रगति कर पाएंगे। धनागम होगा तथा आप अपनी योजनाओं को साकार रूप दे पाएंगे। समाज में आपका यश तथा मान प्रतिष्ठा बढ़ेगी तथा आपकी व्यस्तता निश्चित रूप से बढ़ेगी। इस कारण स्वास्थ्य पर विशेष ध्यान देने की आवश्यकता रहेगी। वाद-विवाद की स्थिति में संयम से काम लें। मित्रों एवं स्वजनों का पूर्ण सहयोग प्राप्त होगा। जीवन साथी का भी सहयोग मिलेगा। वाहन के क्रय-विक्रय में सावधानी बरतें। आप 'राज राजेश्वरी महात्रिपुर सुन्दरी साधना' (सिं. 07) करें। तिथियाँ - 2, 7, 16, 23, 26 हैं।

कर्क -

जो कार्य आप कर रहे हैं उसी में लगे रहें तथा उचित समय की प्रतीक्षा करें। पुराने अनुबंध ही लाभप्रद सिद्ध होंगे। व्यापार का कामकाज पूरी तरह नौकरों पर न छोड़ें अन्यथा हानि हो सकती है। जमीन जायदाद के क्रय-विक्रय के लिए समय ठीक नहीं। शत्रु भी इस समय आपके खिलाफ सक्रिय रहेंगे, अतः सावधान रहें। हो सकता है कि मित्र एवं स्वजन समय पर मुंह फेर लें। आप हर परेशानी का दृढ़ता से सामना करेंगे तो ही विजय आपकी होगी। आप 'लीलावती अप्सरा साधना' (जु. 07) करें। तिथियाँ - 7, 12, 17, 21, 30 हैं।

सिंह -

इस माह कुछ जरूरत से अधिक व्यय हो सकता है जिससे तनाव की स्थिति पैदा हो सकती है। ऋण लेने तक की नौबत आ सकती है, परन्तु यदि आप समय से पहले सावधान रहें तो स्थिति संभल सकती है। कोई भी सौदा करते समय भी सावधान रहें, अन्यथा धोखा हो सकता है। इस समय किसी को पैसा उधार नहीं दें तो अच्छा है। विद्यार्थियों के लिए आवश्यक है कि मेहनत करें वरना मनोनुकूल सफलता प्राप्त होने में सेवेह है। रात को वाहन का प्रयोग करते समय विशेष सावधान रहें। आप 'राज राजेश्वरी महात्रिपुर साधना' (सि. 2007) करें। शुभ तिथियाँ - 3, 15, 19, 22, 25 हैं।

कन्या -

जलदबाजी में कोई निर्णय न लें। भली प्रकार से सोच विचार कर काम करना आपके लिए अनुकूल होगा। अगर आप साझेदारी का कोई काम करते हैं तो साझेदारों से सावधान रहें अन्यथा धोखा हो सकता है। पिछले कुछ समय से अगर आप किसी समस्या को लेकर परेशान रहे हैं तो इस माह उसका निवारण हो जाएगा तथा आप राहत की सांस लेंगे। मीडिया से जुड़े व्यक्तियों को शत्रुओं से सावधान रहने की आवश्यकता है। विद्यार्थी वर्ग के लिए समय अनुकूल है। आप 'काल भैरव साधना' (मार्च 2007) सम्पन्न करें। तिथियाँ - 1, 9, 16, 19, 22 हैं।

तुना -

नौकरी आदि में सफलता प्राप्त होगी तथा राजकार्य आसानी से पूर्ण होंगे। अपना स्वयं के भरोसे पर ही कार्य करें, किसी अन्य से हानि की संभावना रहेगी। व्यापारिक दृष्टि से यह समय सामान्य ही रहेगा। यात्रा भी करनी पड़ सकती है जो कि लाभप्रद सिद्ध होगी। घर पर कोई विशेष आयोजन हो सकता है। बेरोजगारों के लिए समय अच्छा है और प्रयास किए जाएं तो अच्छी नौकरी मिल सकती है। संतान पक्ष की ओर से निराशा का वातावरण बनेगा। आप 'नवग्रह साधना' (मई 2007) सम्पन्न करें। तिथियां - 3, 10, 14, 20, 27 हैं।

वृष्टियक -

आप अपनी प्रकृति के अनुरूप कम समय में अधिक कार्य करने का प्रयत्न करेंगे, जिससे तनाव पैदा हो सकता है। व्यस्त रहना अच्छा है परंतु कार्य भार इतना भी न बढ़ने दें कि स्वास्थ्य पर उसका प्रतिकूल प्रभाव पड़े। मनोरंजन द्वारा तनाव दूर करने का प्रयत्न करें। इस माह आपको संतान की ओर से शुभ समाचार प्राप्त हो सकता है जिससे आपको हर्ष होगा। दाम्पत्य जीवन संतोषजनक रहेगा। अदालती मामलों में अनुकूलता प्राप्त होगी। यात्रा करते समय स्वास्थ्य का विशेष ध्यान रखें। आप 'भगवती विंध्यवासिनी साधना' (मई 07) अवश्य सम्पन्न करें। तिथियां - 2, 9, 16, 23, 30 हैं।

धनु -

समय अपके पूर्णतः अनुकूल है। आप बहुत समय से सोचे हुए कार्यों को पूर्ण कर पाएंगे जिससे आपको मान सम्मान मिलेगा तथा आर्थिक लाभ भी होगा। हो सकता है कुछ श्रेष्ठ नवीन अवसर आपको प्राप्त हों; जिनका आप पूरा-पूरा लाभ अवश्य उठाएं। कुछ ऐसा भी घटित हो सकता है कि जीवन में एकाएक बहुत बड़ा परिवर्तन आ जाए; परंतु वह होगा अनुकूल ही। पूरा महीना प्रसन्नता के साथ व्यतीत होगा। आकस्मिक धन लाभ भी हो सकता है। आप 'रत्न सारला सायुज्य यक्षिणी साधना' (जून 2007) करें। तिथियां - 6, 11, 19, 23, 25 हैं।

मकर -

रुके हुए कार्य मित्रों एवं संबंधियों के सहयोग से पूर्ण होंगे। लापरवाही एवं जलवायी से कोई कार्य न करें, धैर्य बनाए रखें। सूझबूझ से काम लेंगे तो व्यापार में विस्तार हो सकता है तथा आशा से कहीं अधिक लाभ हो सकता है। किसी वाद-विवाद में न ही पड़ें तो अच्छा होगा। पारिवारिक जीवन में

योग: सिद्ध योग - 15, 16, 21, 27, 29, 30 नवम्बर / 8 दिसम्बर ☆
सर्वार्थ सिद्ध योग - 11, 14, 17, 26, 29 नवम्बर / 12, 18, 30 दिसम्बर
☆ अमृत सिद्ध योग - 26 नवम्बर ☆ द्विपुष्कर योग - 6 नवम्बर / 25, 30 दिसम्बर ☆ गुरु पुष्य योग - 29 नवम्बर ☆

बाधाएं एवं परेशानियां उत्पन्न हों सकती हैं परंतु स्थिति स्वयं सुधार भी जाएगी। कुछ शत्रु हानि पहुंचाने का प्रयत्न कर सकते हैं परंतु वे विफल रहेंगे। इस माह विदेश यात्रा का अवसर प्राप्त हो सकता है। आप 'शनि साधना' (मई 2007) करें। तिथियां - 1, 2, 6, 10, 17, 23, 28 हैं।

कुंभ -

आप बहुत प्रगति करने को उत्सुक हैं तथा इस दिशा में आप प्रयासरत भी हैं। इस माह आपको उन्नति के स्वर्णिम अवसर प्राप्त होंगे जिनको आप किसी भी हालत में छूकें नहीं। अगर आप नया घर या वाहन खरीदने की सोच रहे हैं तो उसके लिए यह समय अनुकूल है। साहित्य एवं कला जगत से जुड़े व्यक्तियों को पुरस्कार अथवा सम्मान प्राप्त हो सकते हैं। उच्चाधिकारियों तथा राजनेताओं का अनुग्रह प्राप्त होगा। शिक्षक वर्ग के लिए भी समय अच्छा है। आप 'अष्टकाली साधना' (सितम्बर 07) करें। तिथियां - 4, 9, 18, 22, 26 हैं।

मीन -

परिवार के साथ आप अधिक समय व्यतीत करने को बाध्य होंगे तथा प्रारम्भ में समय की कमी के कारण ऐसा करने पर आपको क्षोभ हो सकता है, परन्तु आखिर में आप प्रसन्नता अनुभव करेंगे तथा परिवार के साथ बिताए उन पलों को अपनी यादों में संजो कर रखने का प्रयत्न करेंगे। पूरा मास प्रसन्नता पूर्वक व्यतीत होगा तथा सामाजिक आयोजनों, मनोरंजक कार्यक्रमों में आप बढ़चढ़ कर भाग लेंगे। नयी खरीदारी करने या घर को सजाने संवारने का भी अच्छा समय है। बेरोजगारों को सफलता प्राप्त होगी। आप 'पुरश्चरण साधना' (सितम्बर 07) करें। तिथियां - 1, 8, 15, 23, 30 हैं।

इस मास के व्रत, पर्व इवं त्यौहार

19 नवम्बर	कार्तिक शुक्ल - 09	सोमवार	आंबला नवमी
21 नवम्बर	कार्तिक शुक्ल - 11	बुधवार	देव प्रबोधिनी एकादशी
22 नवम्बर	कार्तिक शुक्ल - 12	गुरुवार	प्रदोष व्रत
24 नवम्बर	कार्तिक शुक्ल - 15	शनिवार	पूर्णिमा
1 दिसम्बर	मार्गशीर्ष कृ. - 08	शनिवार	काल मैरवाष्टी
5 दिसम्बर	मार्गशीर्ष कृ. - 11	बुधवार	उत्पत्ति एकादशी
6 दिसम्बर	मार्गशीर्ष कृ. - 12	गुरुवार	प्रदोष व्रत
9 दिसम्बर	मार्गशीर्ष कृ. - 30	रविवार	अमावस्या
20 दिसम्बर	मार्गशीर्ष शु. - 11	गुरुवार	मोक्षदा एकादशी

जीवन सरिता

यों तो किसी भी समस्या के समाधान हेतु अनेकों उपाय हैं परंतु मंत्रों के माध्यम से समस्या के निवारण के पीछे धारणा यह है कि मंत्र शक्ति एवं दैवी शक्ति द्वारा साधक को वह बल प्राप्त होता है जिससे कि किसी भी समस्या का समाधान सहज हो जाता है। उदाहरण के लिए माना जाता है कि सभी गोणों का उद्भव मनुष्य के मन से ही होता है। जिस प्रकार मन पर पड़े दुष्प्रभावों को यदि मंत्र द्वारा नियंत्रित कर लिया जाए तो गोण स्थायी रूप से शान्त हो जाते हैं उसी प्रकार मन को सुहृद करके किसी भी समस्या पर आप विजय प्राप्त कर सकते हैं।

1. क्या आप हमेशा दूसरों से भयभीत रहते हैं?

आप हमेशा दूसरे व्यक्तियों से डरते रहते हैं। जो व्यक्ति ज्यादा बलशाली है उसके सामने तो हर कोई झुकता है पर इसका मतलब यह नहीं, कि आप हर व्यक्ति से भयभीत रहें। आप के अन्दर भी पर्याप्त शक्ति है, उसका एक बार प्रयोग तो करें। यह प्रयोग अत्यन्त साहस, बल पराक्रम प्रदान करता है और अपने साधक की हर तरह से रक्षा करता है।

किसी पात्र में 'वीर सिद्धि गुटिका' को रविवार की रात्रि 10 बजे घर के एकांत कक्ष में दक्षिण मुख हो काले ऊनी आसन पर बैठ जायें। जमीन पर चन्दन से स्वास्तिक बनाकर उसमें गुटिका को स्थापित कर दें और उसकी चारों दिशाओं में तेल के चार दीपक जलायें और निम्न मंत्र का 45 मिनट जप करें -

मंत्र

॥ॐ ऐं अजिते अपराजिते अभ्याय फट् ॥

अगले रविवार तक इस प्रयोग को नियमित रूप से करें तथा प्रयोग की समाप्ति पर इस गुटिका को नदी में विसर्जित कर दें।

साधना सामग्री - 60/-

☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆

2. इस प्रयोग के द्वारा आपको सफलता नहीं मिले ऐसा संभव नहीं

हर व्यक्ति जिस कार्य को भी शुरू करता है, उस कार्य में सफलता ही उसका एकमात्र लक्ष्य होता है, चाहे वह छोटे से छोटा कार्य या कैसा भी कार्य हो। व्यापारी के लिए अपने व्यापार में उचित और श्रेष्ठता, नौकरी करने वालों के लिए पदोन्नति, विद्यार्थियों के लिए अच्छे अंकों से प्रथम श्रेणी से पास होना, हर क्षेत्र में सबसे आगे रहना आदि, लेकिन इस

प्रतिद्वन्द्विता के युग में अपने लक्ष्य को प्राप्त करना अपने हर कार्य में सफलता पर उसे लगता है, कि उसके जीवन का एक नया अध्याय आरम्भ हो रहा है। जीवन में जितनी आध्यात्मिक सफलता जरूरी है, उतनी ही भौतिक सफलता भी आवश्यक है और जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में सफल होना ही वास्तविक सफलता है, क्योंकि पूर्ण रूप से सफल व्यक्ति ही जीवन को सही तरीके से जी सकता है।

इस प्रयोग के माध्यम से आप सफल हो सकते हैं, क्योंकि जो व्यक्ति इस प्रयोग को सम्पन्न कर लेता है उसके जीवन में असफलता रह ही नहीं सकती है।

प्रातः काल स्नान कर स्वच्छ वस्त्र पहनकर अपने पूजा कक्ष में किसी पात्र में विशिष्ट सिद्धि प्रदायक 'लघु नारियल' को स्थापित कर उसका कुंकुम, अक्षत से पूजन करें तथा दीपक लगाकर उस कार्य को बोलें, जिसमें सफलता प्राप्त करनी है, फिर निम्न मंत्र का 32 मिनट तक जप करें -

मंत्र

॥ॐ ह्रौ रः रः ह्रौ उ॒॑॑॥

यह ज्यारह दिन का प्रयोग है, ज्यारह दिन के बाद लघु नारियल को नदी में प्रवाहित कर दें।

साधना सामग्री - 90/-

☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆

3. दूर बैठे व्यक्ति के बारे में जान सकते हैं इस प्रयोग से

आप अपने घर में कार्य करते हैं, कि अचानक एक क्षण आपको अनुभव होता है, कि मेरे घर पर या रिश्तेदार के यहां पर कुछ घटित हो रहा है, जिससे वह दुःखी है या उसका अचानक एक्सीडेन्ट हो गया है। ऐसी घटनाओं का पूर्वानुभास

आपको हो सकता है, यदि आप यह प्रयोग सम्पन्न कर लें तो। किसी पात्र में 'विरोचन गुटिका' को स्थापित कर उसका पूजन कर उसके समक्ष 31 बार दिन तक नित्य 35 मिनट तक निम्न मंत्र का जप करें -

मंत्र

॥ॐ हं हंसः अप्तिचक्रे हं हं ॐ नमः ॥

प्रयोग समाप्ति के बाद गुटिका को मंदिर में चढ़ा दें और जब किसीं स्वजन को देखना हो, तो 5 बार मंत्र का जप करके आंखें बंद कर उस व्यक्ति विशेष पर ध्यान केन्द्रित करें, तो आप जान सकेंगे उसके बारे में।

साधना सामग्री - 90/-

☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆

4. क्या विवाह के पश्चात् जीवन में नीरसता आ गई है?

विवाह के पश्चात् जीवन में जो उमंग, उत्साह पति और पत्नी के मध्य देखने को मिलता है, वह कुछ माह के बाद ही कम होने लगता है और तनाव, झगड़ा, समस्याएं उभर कर आने लगती हैं। इससे उनका पारिवारिक जीवन दिखावे के रूप में तो चलता है, लेकिन आन्तरिक रूप से उनमें आपस में कोई प्रेम या लगाव नहीं रह जाता है। वे एक दूसरे से अलग होते जाते हैं और आपस में ठीक से बोल भी नहीं पाते हैं जिससे कि परिवार टूटने लगता है। यदि आपके सामने भी इस प्रकार की समस्या आ रही है, तो आप इस अद्वितीय प्रयोग को अवश्य सम्पन्न करें -

किसी पात्र में 'वृहन्त' को स्थापित कर उसका कुंकुम, पुष्प, धूप, दीप व अक्षत से पूजन करें तदुपरान्त उसके समक्ष निम्न मंत्र का 21 मिनट तक जप करें। यह 11 दिन का प्रयोग है, इसको प्रातः काल सम्पन्न करना अधिक श्रेष्ठ रहता है।

॥ॐ हीं क्षीं क्लीं अमृतमालिनी फट् ॥

प्रयोग समाप्ति पर 'वृहन्त' को जल में विसर्जित करें।

साधना सामग्री - 90/-

☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆

5. क्या आप जानते हैं, कि आप के अन्दर कितनी योग्यताएं छिपी हैं?

आप के अन्दर क्या क्षमता है यह आपको मालूम नहीं है। हर व्यक्ति यह नहीं जान पाता है, कि उसके अन्दर क्या अच्छाइयां हैं। आपके अन्दर अनेक प्रकार की क्षमताएं हैं, लेकिन उनके विषय में आपको मालूम नहीं है, आप अपनी

की तरह धुंधली अस्पष्ट प्रतीत होती हैं। आप भी अपने अन्दर छिपी क्षमताओं अथवा योग्यताओं को उजागर कर सकते हैं क्योंकि हर किसी के अन्दर कोई न कोई अच्छाइ छिपी ही रहती है। उसे मालूम नहीं होता है जब तक कोई उसे न बताए, कि वे योग्यताएं उसमें हैं। इस प्रयोग के माध्यम से आप अपने अन्दर छिपी हुई योग्यताओं को पहचान सकते हैं।

अपने पूजा कक्ष में 'वृहदारण्य' को स्थापित कर उसके ऊपर कुंकुम से सात बिन्दियां लगाते हुए निम्न मंत्र का जप 35 मिनट तक करें। ऐसा 11 दिन तक करें -

मंत्र

॥ॐ हं ब्रह्मदेवाय आ उ सः ॐ ॥

बारहवें दिन प्रयोग समाप्ति के बाद 'वृहदारण्य' को नदी में विसर्जित कर दें।

साधना सामग्री - 60/-

☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆

6. आपके सम्मोहन से बच कर कोई जा नहीं सकता

व्यक्ति में यदि आकर्षण न हो या वह सामने वाले व्यक्ति को अपने सामने झुकाने की क्षमता न रखता हो, तो वह व्यक्ति नहीं है, क्योंकि सम्मोहन के चुम्बकीय प्रभाव से युक्त व्यक्तित्व के भीतर ही दृढ़ आत्मविश्वास जाग सकता है। यदि आप में आत्मविश्वास है, तो आप जिस कार्य को करने जा रहे हैं, वह आधा कार्य तो ऐसे ही सम्पन्न हो जाता है। अपने अन्दर सम्मोहन पैदा कर ही हीन भावना से मुक्त हुआ जा सकता है। प्रबल आत्मविश्वास से ही जीवन में चतुर्दिक् सफलता और उत्तम प्राप्ति की जा सकती हैं। यदि आप लोगों को आकर्षित नहीं कर पाते हैं, तो एक बार अवश्य ही यह प्रयोग करें।

अपने पूजा कक्ष में 'सम्मोहन सिद्धिप्रदा' को स्थापित कर उसके समक्ष तेल का दीपक जला लें। फिर सम्मोहन 'सिद्धिप्रदा' को एकटक देखते हुए निम्न मंत्र का जप 25 मिनट तक 15 दिन तक नियमित रूप से करें -

मंत्र

॥ अ॒ अ॑ सम्मोहय वशमानय सं सं ॐ ॥

प्रयोग समाप्ति के सम्मोहन सिद्धिप्रदा को किसी चौराहे पर रख आवें। इसके पश्चात् अगले 15 दिनों तक नित्य 5 मिनट तक इस मंत्र का जप करते रहें। इस प्रयोग को सम्पन्न करने पर व्यक्ति में एक आकर्षण आ जायेगा।

साधना सामग्री - 150/-

☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆

गृह छमको बढ़ीं वराहमिहि॒र कै बहा हैं

किसी भी कार्य को प्रारम्भ करने से पूर्ण प्रत्येक व्यक्ति के मन में संशय-असंशय की भावना रहती है कि यह कार्य सफल होगा या नहीं, सफलता प्राप्त होगी या नहीं, वाधाएं तो उपरित नहीं हो जायेगी, पता नहीं दिन का प्रारम्भ किस प्रकार से होगा, दिन की समाप्ति पर वह स्वयं को तनावरहित कर पायेगा या नहीं? प्रत्येक व्यक्ति कुछ ऐसे उपाय अपने जीवन में अपनाना चाहता है जिनसे उसका प्रत्येक दिन उसके अनुकूल एवं आनन्दयुक्त बन जाय। कुछ ऐसे ही उपाय आपके समक्ष प्रस्तुत हैं जो वराहमिहिर के विविध प्रकाशित ग्रंथों से संकलित हैं, जिन्हें यहां प्रत्येक दिवस के अनुसार प्रस्तुत किया गया है तथा जिन्हें सम्पूर्ण करने पर आपका पूरा दिन पूर्ण सफलतादायक बन सकेगा।

दिसम्बर

1. “शनि गुटिका” (न्यौछावर 40/-) का पूजन कुंकुम, सरसों के तेल तथा काले तिल से करके सभी को पीपल के पेड़ की जड़ में अर्पित कर आएं। बाधाएं टलेंगी।
2. सूर्य को प्रातः काल अर्ध्य देकर ही भोजन करें।
3. थाली में कुंकुम से अष्टदल कमल बना कर शिवलिंग स्थापित कर पूजन करें।
4. हनुमान जी के विग्रह या चित्र पर सिंदूर का लेपन करें तथा बेसन से बनी मिठाई का भोग लगाएं।
5. घर से निकलते समय पहले दाहिना पैर बाहर निकालें।
6. आज हनुमान जी की आरती अवश्य सम्पन्न करें।
7. **ॐ नमः दुर्गे दुर्गे रक्षणि स्वाहा** मंत्र से ज्यारह बार जल अभिमंत्रित कर पूरे घर में छिड़कें।
8. घर से बाहर जाते समय 7 बार **ॐ भैरवाय नमः** का जप करें।
9. आज प्रातः काल 11 माला गुरु मंत्र का जप करें।
10. ‘शिव तेजसं’ (न्यौछावर 50/-) का प्रातः पूजन कर, पूरे दिन अपनी जेब में रखें। शाम को नदी या तालाब में विसर्जित करें। सफलता प्राप्त होगी।
11. हनुमान जी के विग्रह के सामने तेल का दीपक जलाकर उसका पूजन करें।
12. भगवान गणपति को बेसन के लड्डूओं का भोग लगाएं तथा गणेश आरती गाएं।
13. तीन बार निम्न मंत्र द्वारा गुरु का ध्यान करें
त्वरेव तत्वार्थं चित्त्यं अरन्दं मूर्ति लित्वतं परिपूर्णं चन्द्रं।
ब्रह्मण्डं स्त्रश्मदिग्दिव्यं च तद् विष्वेऽहं स्त्रात्मकं मद् गुरुं प्रणम्मामि जित्यम्य।
14. भगवती दुर्गा का पूजन कर घर के बाहर जाएं।
15. आज 21 बार **ॐ हैं क्रीं हूं ॐ** का जप कर कार्य पर जाएं। अनिष्ट टलेगा।
16. प्रातः चना और गुड़ दान करें अथवा गाय को खिलाएं।
17. प्रत्येक कार्य को करने से पहले मन ही मन 5 बार **ॐ साम्बृद्धि शदशिवाय नमः** का जप करें।
18. प्रातः पांच बार हनुमान बाण का पाठ करें।
19. प्रातः भगवती लक्ष्मी का पूजन करते हुए 11 बार **ॐ हैं अग्रच्छ महालक्ष्मी स्त्रिद्वेष्य ॐ** का जप करें।
20. प्रातः 6 बार निम्न श्लोक का उच्चारण कर गुरु पूजन करें - **त्वं विश्वद्वं त्वं ब्रह्म त्वं विष्णुं त्वं रुद्रं त्वं तत्वमसि त्वं पूर्णं ॐ**
21. आज प्रातः काल ‘निखिलेश्वरानन्द स्तवन’ का पाठ करें। दिन भर गुरु स्मरण करें तथा गुरु सेवा संकल्प लें।
22. ‘फणिका’ (न्यौछावर 50/-) को परिवार के सदस्यों के सिर पर धुमाते हुए **हूं भैरवाय फट्** का जप करें। फिर दक्षिण दिशा में घर से दूर फैक दें।
23. प्रातः घर के पूर्वी दिशा में धी का दीपक जलाएं।
24. आक के पत्ते पर कुंकुम से **ॐ नमः शिवाय** लिखकर दक्षिणा सहित शिव मंदिर में चढ़ा आएं।
25. पीली सरसों लेकर बगलामुखी का मंत्र जप करते हुए पूरे घर में छिड़कें। अनिष्ट टलेगा।
26. ‘विनायक गुटिका’ (न्यौछावर 30/-) का पूजन दुर्वा से करें तथा पांच बार **ॐ गणपतये नमः** का जप कर किसी गणपति मंदिर में चढ़ा आएं। सफलता प्राप्त होगी।
27. घर से निकलने से पूर्व निम्न श्लोक का उच्चारण करें।
सर्ववाद्याप्रशमनं त्रैलोक्यस्य स्त्रिलोक्य।
एवमेव त्वया कार्यस्मद्दैरिविनाशनम्॥
28. प्रातः काल भगवती लक्ष्मी का पूजन कमल के पुष्प या किसी लाल पुष्प से करें।
29. प्रातः नौ बार निम्न श्लोक का जप करें।
जयंतीं मंगला काली महाकाली कृपालिनी।
दुर्गा क्षमा शिवा थात्री स्वाहा स्वधा नमोस्तुते।
30. प्रातः काल 51 बार गायत्री मंत्र जप करें।
31. **ॐ नमः शिवाय** का 11 बार जप करके घर से बाहर जाएं।

बजरंग बली तोड़े दुश्मन की नली

छांकटसौत्वन

श्री



हनुमान

विशिष्ट सरल साधना

जो जन-जन के आराध्य, शीघ्र कृपा करने वाले, हर संकट में रक्षा कर अपने भक्त को अभय प्रदान करने वाले देव हनुमान की महिमा निराली है।

शिष्य रूप में, सेवक रूप में श्री राम के अतिप्रिय हनुमान की जन-जन में ख्याति है, लेकिन तंत्र साधना में पवन पुत्र हनुमान का नाम सबसे ऊपर है क्योंकि वे वीरों के वीर, महावीर, विक्रमी और साहस, बल के अपूर्व स्वामी हैं। हनुमान भक्तों की भावना से प्रसन्न हो कर कृपा करने वाले परम आराध्य देव हैं, इनकी महिमा में जो कुछ भी लिखा - कहा जाय वह कम है :-

परब्रह्म नारायण शिव स्वरूप हनुमान ही हैं, श्री शिव के न छोटी होती है और न बड़ी, वह तो केवल व्यक्ति या घटना ज्यारह रुद्र स्वरूपों में ज्यारहवें रुद्र श्री हनुमान है, जो कि शत्रु होती है और उस पर आत्म विश्वास द्वारा विजय प्राप्त की जा संहारकर्ता, अति बलशाली, और इच्छानुसार कार्य करने सकती है; और जो श्री हनुमान का साधक है, उसके भीतर तो वाले हैं।

श्री हनुमान की मानस साधना भी सम्भव है, मूर्ति साधना भी की जा सकती है, मान्त्रिक साधना और तान्त्रिक साधना भी है, इसी कारण रामायण में लिखा है कि परब्रह्म रुद्र हनुमान की महिमा उन्हीं की कृपा से समझ में आ सकती है, वे सर्व मंगल निधि, सच्चिदानन्द घन परमब्रह्म रुद्र रूप हनुमान तो ओंकार स्वरूप पूर्ण ब्रह्म हैं।

श्री हनुमान प्रतीक हैं - ब्रह्मचर्य, बल, पराक्रम, वीरता, भक्ति, निःरता, सरलता और विश्वास के। शत्रु अथवा बाधा,

कि मेरी पीठ के पीछे प्रबल पराक्रम के देव बजरंग बली खड़े हैं, फिर मुझे काहे की चिन्ता ?

हनुमान उपासना के कुछ आवश्यक तथ्य

1. हनुमान जी की मूर्ति को तिल में मिले हुए सिन्दूर का लेपन करना चाहिये।
2. नैवेद्य में प्रातः गुड, नारियल का गोला व लड्डू, मध्याह्न में गुड, धी और गेहूं की रोटी का चूरमा अथवा मोटा रोटी तथा रात्रि में आम, अमरुद, अथवा केला नैवेद्य रूप में

चढ़ाना श्रेष्ठ माना गया है।

3. पुष्पों में केवल लाल और पीले बड़े फूल जैसे कमल, हजारा, सूर्यमुखी, गेंदा चढ़ाना चाहिये।
4. धी में भीगी हुई एक अथवा पांच बत्तियों का दीपक जलाना चाहिये।
5. हनुमान साधना में ब्रह्मचर्य ब्रत का पूर्ण रूप से पालन करें।
6. संभव हो तो कुंए के जल से स्नान करें।
7. हनुमान मंत्र का जप बोल कर अर्थात् आवाज के साथ हनुमान मूर्ति/चित्र में नेत्रों को देखते हुए किया जाता है।
8. अनिष्ट की इच्छा से हनुमान साधना नहीं करनी चाहिये।
9. श्री हनुमान सेवा, पूजा के प्रत्यक्ष उदाहरण हैं, अतः साधक को सेवा करके फल प्राप्ति की इच्छा रखनी चाहिये, पूजा में पूर्ण श्रद्धा और सेवा भाव होना चाहिये।
10. पूजा स्थान में भगवान राम व सीता का चित्र होना हनुमान जी को प्रियकर लगता है।

मंगलवार के दिन संकल्प लेकर प्रारम्भ किया गया अनुष्ठान/ साधना निष्कल नहीं जाती और साधक को अल्पकाल में ही परिणाम दृष्टिगोचर होने लगते हैं। आगे कुछ साधनाएं प्रस्तुत हैं, जिन्हें किसी भी मंगलवार को प्रारम्भ किया जा सकता है।

प्रारम्भिक साधना विधान

आगे कई साधनाएं प्रस्तुत हैं। प्रत्येक में प्रारम्भिक साधना विधान तो एक सा ही रहेगा, अलग-अलग कार्यों के लिये मात्र साधना सामग्री व जप मंत्र अलग-अलग होगा।

लाल वस्त्र धारण कर दक्षिणाभिमुख होकर वीरासन में बैठ जायें। अपने सामने एक चौकी पर सिन्दूर छिक दें तथा उस पर हनुमान का चित्र स्थापित करें। किसी पात्र में यंत्र व सामग्री को स्थापित कर लें। दाहिने हाथ में जल लेकर संकल्प करें कि मैं (अमुक नाम का व्यक्ति) अमुक प्रयोजन से होगा। यह अनुष्ठान प्रारम्भ कर रहा हूँ।

इसके बाद श्री हनुमान का सकाम ध्यान करें। दोनों आंखें बन्द कर कुछ देर तक उनके स्वरूप का स्मरण करें तथा उनके आशीर्वाद की कामना करें। हनुमान का ध्यान मंत्र इस प्रकार है -

वीरासनस्थ, मौञ्जी यज्ञोपवीतारुण रुचिर शिखा
शोभितं कुण्डलांकम्।

भत्तानामिष्ट दं तं प्रणत मुनिजनं वेदनाद प्रमोदं,
ध्यायेद नित्यं विधेयं प्लवगकुलपर्ति जग्यदी
भूतवारिम्॥

उदय होते हुए करोड़ों सूर्यों जैसे तेजस्वी, मनोरम, वीर आसन में स्थित, मुंज की मेखला और यज्ञोपवीत धारण किये हुए, कुण्डल से शोभित, मुनियों द्वारा बन्दित, वेद नाद से प्रहर्षित, वानरकुल स्वामी, समुद्र को एक पैर से लांघने वाले, देवता स्वरूप, भक्तों को अभीष्ट फल देने वाले श्री हनुमान मेरी रक्षा करें।

१. हनुमान प्रत्यक्ष साधना द्विष्ट प्रयोग

हनुमान शक्तिशाली, पराक्रमी, संकटों का नाश करने वाले और दुःखों को दूर करने वाले महावीर हैं। इनके नाम का स्मरण ही साहस और शक्ति प्रदान करने वाला है।

सामने मंत्र सिद्ध प्राण प्रतिष्ठित 'हनुमत यंत्र' को किसी पात्र में स्थापित करें। यंत्र पर सिन्दूर अच्छी तरह से लगा दें, फिर गुड़, धी, आटे से बनी हुई रोटी को मिला कर लड्डू बना कर उसका भोग लगावें। फिर निम्न मंत्र का 'मूँगा माला' से 11 माला मंत्र जप करें -

मंत्र

॥ ॐ नमो हनुमन्तर्य आवेशय आवेशय
स्वाहा ॥

मंत्र उच्चारण करने के तुरन्त बाद पूजा स्थान में वर्ण भूमि पर सो जायें। यह रात्रिकालीन साधना है। इस प्रकार नित्य 11 दिनों तक करें। जो नैवेद्य हनुमान जी के सामने रखा है, वह आठों प्रहर रखा रहे। अगले दिन रात्रि को वह नैवेद्य दूसरे पात्र में रख दें और नया नैवेद्य हनुमान जी को चढ़ा दें।

यह निश्चित है, कि 11 वें दिन हनुमान जी साधक को प्रत्यक्ष दर्शन देंगे और उसे प्रश्नों का उत्तर देंगे अथवा जिस निमित्त यह प्रयोग किया गया है, वह कार्य निश्चय ही सम्पन्न होगा।

जब यह प्रयोग पूरा हो जाय, तो वह एकत्र किया हुआ नैवेद्य या तो किसी गरीब व्यक्ति को दे दें, अथवा दक्षिण दिशा में घर के बाहर भूमि खोद कर उसे गाढ़ दें।

इसी प्रयोग से साधकों ने बड़ी विपत्तियों को सरलता से टाला है, भयंकर रोगों से छुटकारा पाया है, दण्ड पाये व्यक्ति को इस प्रयोग से निदान/छुटकारा मिल सका है, वास्तव में

ही यह प्रयोग अपने आप में अचूक और अद्वितीय है।

साधना सामग्री पैकेट - 300/-



२. वज्र की तरह अविचलित, अडिंग बनें, आत्म विश्वास बढ़ायें

जीवन में कई बार ऐसी घटनाएं भी घटती हैं, जिनसे व्यक्ति विचलित हो जाता है। ऐसी परिस्थितियों में स्वयं को अविचलित और अडिग बनाया जा सकता है, स्वयं में वज्र की तरह अडिगता को समाहित कर, जैसी हनुमान में थी, कैसी भी विपरीत परिस्थिति हो, कैसा भी वातावरण निर्मित हो रहा हो, जरूरत होती है उन परिस्थितियों में अविचलित भाव से खड़े रहने की, उचित और अनुचित निर्णय लेने की; और यह सामर्थ्य प्राप्त हो सकती है, इस तीव्र हनुमान मंत्र साधना से, जिसके करने पर चाहे कितनी भी विपरीत परिस्थिति हो, आप अविचलित भाव से खड़े होकर निर्णय ले सकते हैं।

‘हनुमान मुद्रिका’ के सामने 5 दिन तक नित्य 21 बार निम्न मंत्र का जप करें -

मंसा

॥ॐ हूँ ओँ हूँ ओँ हनुमते फट॥

पांचवें दिन मुद्रिका को उंगली अथवा गले में धारण कर लें। दो माह पश्चात् किसी मन्दिर में हनुमान मूर्ति के समक्ष मुद्रिका अर्पित कर दें। यह साधना किसी अभेद्य कवच की तरह आपको आत्मविश्वास तथा अडिगता प्रदान करेगी।

हनमान मट्टिका - 175/-

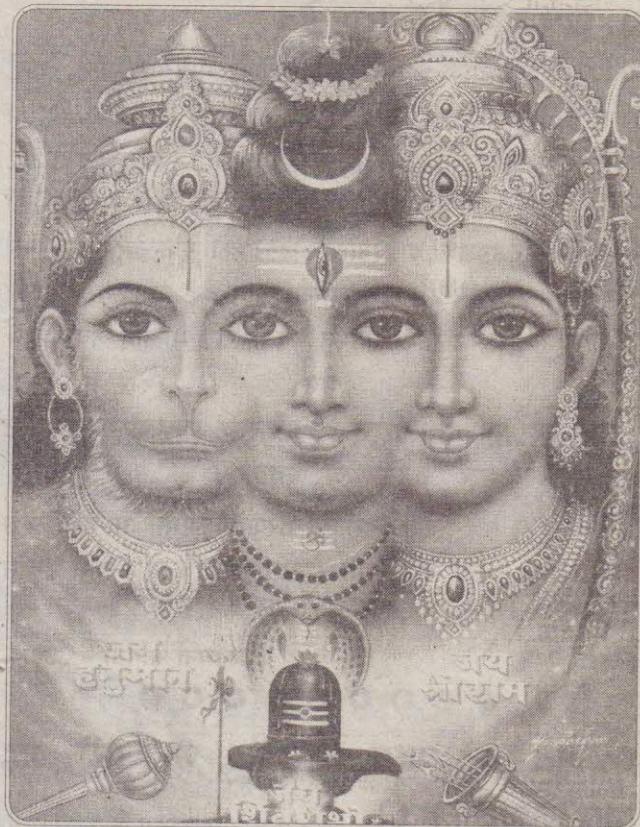


3. कार्य सिद्धि हेत

मंत्र सिद्ध 'बजरंग यंत्र' को किसी पात्र में स्थापित कर लें। 'तीव्र मधुरुपेण रुद्राक्ष' को लेकर उन पर सिन्धूर व तेल का लेप करें। इन तीनों को यंत्र के क्रमशः दाएं, बाएं एवं सामने स्थापित कर दें। इसके बाद निम्न मंत्र का 'मूँगा माला' से 5 माला जप करें -

३४

॥३५ नमो भगवते सर्व ग्रहान् भूत भविष्य वर्तमान्
 दूसर्स्थ समीपस्थान् छिन्दि छिन्दि भिन्दि भिन्दि सर्व
 काल दुष्ट बुद्धिनुच्चाटयोच्चाटय पर बलान् क्षेभय
 क्षेभय मम सर्व कायाणि साधक साधय। ३५ नमो
 हनुते ३५ हां हीं हूं फट। देहि ३५ शिव सिद्धि, ३५ हां



ॐ हैं ॐ हूँ ॐ हैं ॐ हों ॐ हः स्वाहा ॥

यह 12 दिन का प्रयोग है। इसके बाद सभी सामग्री को किसी नदी अथवा सरोवर में विसर्जित कर दें।

साधना सामग्री - 360/-



४. सर्व विष्णु निवारण हेत

मंत्र सिद्ध प्राणप्रतिष्ठित 'हनुमत यंत्र' को सामने रख कर उस के बीच में 'मारुति मुंज फल' स्थापित कर दें। फिर आधे घण्टे तक बिना माला के वीर मद्वा में निम्न मंत्र जप करें -

४३

॥ उ॑ नमो हनुमते परकृत यंत्र मंत्र पराहंकार भूत
प्रेत पिशाच पर दृष्टि सर्व विष्णु मार्जन हेतु विद्या
सर्वांग भवान् निवास्य निवास्य वद्य वद्य लुण्ठ लुण्ठ
एव एव विलुच विलुच किलि किलि किलि सर्व
कुयंत्राणि दुष्टवाचं उ॑ हीं हीं हं फट् स्वाहा॥

इस प्रकार एक समाह करने से यदि कोई आकस्मिक संकट अथवा विघ्न आन पड़ा हो, तो उसका निवारण होने लगता है। बाद में सामग्री को किसी मन्दिर में चढ़ा दें।

साधना सामग्री - 225/-



५०. शत्रु बाधा निवारण हेतु

किसी शत्रु द्वारा आपके प्राण, यश, मान, सम्मान, धन, सम्पत्ति, परिवार जन आदि को नुकसान पहुंचने का खतरा हो या किसी मुकदमे द्वारा कोई आप पर हावी होना चाहता हो, तो इस प्रयोग से विपक्ष ठण्डे पड़ जाते हैं। 'बजरंग यंत्र' को स्थापित कर उसके दाईं ओर अक्षत की एक ढेरी बना कर उस पर सिन्दूर से रंग कर 'बालादिकम् दंड' को स्थापित कर लें। फिर 'मूंगा माला' से निम्न मंत्र की 11 मालाएं जप करें -

मंत्र

॥ ॐ पूर्वं कपिलमुखाय पंचमुखं हनुमते टं टं टं टं सकलं शत्रुं संहारणाय स्वाहा ॥

आठ दिन तक ऐसा करने से परिणाम सामने आना प्रारम्भ हो जाता है। नौवें दिन सभी सामग्री को किसी निर्जन स्थान पर खुले आसमान के नीचे रख आवें।

साधना सामग्री - 330/-

★ ★ ★ ★ ★ ★ ★ ★

६०. भूत-प्रेत बाधा, अमंगल, महामारी, ग्रह दोष निवारण हेतु ।

यह एक तीव्र प्रयोग है, जिसे रात्रि में सम्पन्न करना चाहिये तथा क्रोध मुद्रा में इस मंत्र का जप किया जाता है। इसमें किसी माला की आवश्यकता नहीं होती। सामने 'हनुमान यंत्र' को स्थापित कर उसके ऊपर 'हनुमान बाहुक' स्थापित करें। फिर निम्न मंत्र का जप करें। पांच दिन तक नित्य 1000 बार इस का उच्चारण करने से चाहे किसी भी प्रकार की प्रेत बाधा या तंत्र बाधा हो, या दोष हो, उसका शमन हो जाता है।

मंत्र

॥ ॐ ऐं श्रीं हां हीं हूं हौं हः ॐ नमो भगवते महावते पराक्रमाय भूतं प्रेतं पिशाचं ब्रह्मं राक्षसं शाकिनीं डाकिनीं यक्षिणीं पूतनामारीं महामारीं राक्षसं भैरवं वेतालं ग्रहं राक्षसादिकालं क्षणेन हनं हनं भंजयं भंजयं मारयं मारयं शिक्षयं शिक्षयं माहेश्वरं रुद्रावतारं ॐ हं फट् स्वाहा ॥ ॐ नमो भगवते हनुमदात्याय रुद्राय सर्वं दुष्टं जनमुखं स्तम्भनं कुरु कुरु स्वाहा ॥ ॐ हां हीं हौं ठं ठं ठं फट् स्वाहा ॥

पांच दिन बाद यंत्र को जल में विसर्जित कर दें तथा हनुमान बाहुक को लाल धागे में पिरोकर गले में धारण कर लें अथवा जिसके लिये प्रयोग कर रहे हों, उसे धारण करा दें।

साधना सामग्री - 270/-

★ ★ ★ ★ ★ ★ ★ ★

श्री हनुमान जी की आरती

आरती कीजै हनुमान लला की ।
दुष्टदलन रघुनाथ कला की ॥
जाके बल से गिरिवर काँपै ।
रोग-दोष जाके निकट न झाँके ॥१॥
अंजनि पुत्र महा बलदाई ।
संतन के प्रभु सदा सहाई ॥२॥
आरती कीजै...

दे बीरा रघुनाथ पठाये ।
लंका जारि सियं सुधि लाये ॥३॥
लंका सो कोट समुद्रं सी खाई ।
जात पवनसुत बार न लाई ॥४॥
लंका जारि असुर संहारे ।
सियाराम जी के काँज सौवारे ॥५॥
आरती कीजै...

लक्ष्मण मूर्छित पढ़े सकारे ।
आनि सजीवन प्रान उबारे ॥६॥
पैठी प्रताल तोरि जम-तारे ।
आहिरावन की भुजा उखारे ॥७॥
बार्ये भुजा असुर दल मारे ।
दहिनी भुजा संतजन तारे ॥८॥
आरती कीजै...

सुर नर मुनि आरती उतारे ।
जय जय जय हनुमान उचारे ॥९॥
कंचन थार कपूर लौ छाई ।
आरति करत अंजना माई ॥१०॥
जो हनुमान की आरती गावै ।
बसि बैकुंठ परमपद पावै ॥११॥
आरती कीजै हनुमान लला की...

दीक्षा की अविरल यात्रा जारी है 5-6 जनवरी 2008

त्रिविल ज्ञान की गंगा अविरल बहती जा रही है

नववर्ष के शुभ अवसर पर

शक्तिप्रपात दुर्क्ष

दस महाविद्या दीक्षा

एवं साधना शिवि

जो जीवन की पूर्णता के लिये आवश्यक है

विश्व की श्रेष्ठतम साधनाओं में दस महाविद्या साधना है। उच्चकोटि के साधक धीरि-धीरि दर्सों महाविद्याओं को सिद्ध कर पूर्ण सफलता प्राप्त कर लेते हैं। एक-एक कर दर्सों महाविद्याओं को सम्पूज्न कर लेना ही आद्यात्मिक व भौतिक जीवन की पूर्णता है।

... और जब गुरु से स्पर्श प्राप्त कर लेते हैं। उनसे दीक्षा प्राप्त कर व्यक्ति साधना के उपक्रम में उत्तरता है, तो वह प्रज्ञावान सिद्धिपुरुष बन जाता है।

इन दस महाविद्याओं का समन्वित स्वरूप दस महाविद्या दीक्षा का महान् अध्याय इस नववर्ष के प्रारम्भ में -

महर्षि गौतम अपने आश्रम में बैठे थे, कि उनके समक्ष एक चराने की आज्ञा दी और कहा - 'जब इनकी संख्या एक ब्राह्मण कुमार ने उपस्थित होकर अत्यन्त विनीत स्वर से हजार हो जाये, तब मेरे सामने उपस्थित होना।'

प्रार्थना की - "ऋषि श्रेष्ठ! आप मुझे अपना शिष्य बनाकर ब्रह्मज्ञान प्रदान करें, ब्रह्मत्व-प्राप्ति दीक्षा दें, जिससे कि मैं गौओं को लेकर घने जंगल में चला गया तथा वहां नित्य गुरु अपने लक्ष्य को पूर्णता से प्राप्त कर सकूँ।"

महर्षि गौतम ने शांत भाव से उसे देखा और पूछा - 'तुम्हारा नाम क्या है? तुम्हारा गोत्र क्या है?' की सेवा कर रहा था, तो उसकी लगन और गुरु भक्ति को देखकर विभिन्न देवताओं ने अपना स्वरूप बदल-बदल कर उसे ज्ञान प्रदान किया।

ब्राह्मण कुमार ने उत्तर दिया - 'मेरी मां द्वारा दिया गया 'सत्यकाम' है नाम; व गोत्र तो मुझे तब प्राप्त होगा, जब आप मुझे दीक्षा प्रदान करेंगे।'

महर्षि इस उत्तर को सुनकर अत्यन्त प्रसन्न हो गये तथा उसे अगले दिन आने को कहा। अगले दिन जब सत्यकाम

उपस्थित हुआ, तो महर्षि ने उसे बिना कुछ कहे गौओं को महर्षि से कुछ भी गुप्त तो था नहीं, उन्होंने सत्यकाम के

आभामण्डल युक्त चेहरे की ओर देखते हुए कहा - 'सत्यकाम! तुम्हारे मुख मण्डल से ब्रह्म ज्ञान की झलक स्पष्ट मिल रही है। तुम्हारे लिए अब कुछ भी जानना शेष नहीं रहा, अतः तुम घर जा सकते हो।'

सत्यकाम ने विनम्रता पूर्वक पुनः प्रार्थना की - 'गुरुदेव! मैंने तो निरन्तर सिर्फ आपका ही ध्यान और चिन्तन मात्र ही किया, इसके अतिरिक्त क्या हुआ वह तो आपको ज्ञात होगा; लेकिन मैंने आपको अपना गुरु माना है, अतः जब तक आप मुझे ब्रह्मात्म प्राप्ति दीक्षा नहीं प्रदान करेंगे, तब तक मेरा ज्ञान व्यर्थ है, जब तक आप पूर्ण तपस्या से युक्त दीक्षा प्रदान नहीं करेंगे, तब तक मेरा ज्ञान अधूरा ही रहेगा।'

उसकी श्रद्धा और गुरु के प्रति निष्ठा को देखकर महर्षि गौतम ने अत्यन्त प्रसन्नतापूर्वक उसे 'ब्रह्मात्म दीक्षा' प्रदान कर ब्रह्मर्थि की उपाधि प्रदान की।

यह लघु कथा शिष्य की गुरु के प्रति श्रद्धा, विश्वास व समर्पण की भावना को स्पष्ट करती है। ब्रह्म ज्ञान प्राप्त करने आये सत्यकाम को गुरु ने गौओं को चराने की आज्ञा प्रदान की, तो उसने बिना कुछ सोचे-विचारे गुरु आज्ञा का पालन किया, क्योंकि उसके हृदय में एक ही चिन्तन था, कि गुरु जो भी आज्ञा देंगे, मेरे हित-चिन्तन को ध्यान में रख कर ही देंगे और जब तक गुरु मुझे दीक्षा प्रदान नहीं करेंगे, तब तक मेरा जीवन अधूरा है।

तात्पर्य यह कि सत्यकाम के मन में मूल भाव यही था, कि दीक्षा ही जीवन का अमृत है, इसके बिना सारा ज्ञान अधूरा है, व्यर्थ है।

जब शिष्य सत्यकाम की भाँति अपने गुरु पर पूर्णतः समर्पित हो जाता है, कि गुरु ही एकमात्र मेरा कल्याण करने में सक्षम हैं, तो वह स्वयं अनुभव करता है, कि उसके जीवन में एक विशिष्टता आ गई है। वह अपने लक्ष्य की ओर शीघ्रता से बढ़ रहा है।

यहां पर गुरु के प्रति समर्पित होने के लिए कहा गया है, समर्पित होने का यह अर्थ कदापि नहीं है, कि व्यक्ति अपने कर्तव्यों से च्युत होकर बैठ जाये, कि सारे कार्य तो गुरु ही करेंगे, मुझे क्या करना है? ऐसा नहीं हो, कि वह यह सोच ले-

अजगर करे न चाकरी पंछी करे न काम,
दास मलूका कह गये सबके दाता राम।

राम तो हैं ही सबको प्रदान करने वाले, लेकिन यदि व्यक्ति कर्मशील नहीं हो, तो राम भी उसे कुछ प्रदान करने में समर्थ नहीं हो सकेंगे।

यहां समर्पित का अर्थ यह है, कि मानव अपने भावों से, अपने विचारों से गुरु के प्रति जो दृढ़ता का भाव उत्पन्न हो, वह उस पर स्थिर रहे। सत्यकाम ने भी निरन्तर अपने गुरु का ध्यान करते हुए कार्य सम्पादित किया, परिणामतः उसे दिव्य ज्ञान तथा अपने लक्ष्य की प्राप्ति हुई।

जीवन में गुरु का आगमन व्यक्ति के लिए अत्यन्त सौभाग्य का सूचक होता है और जब गुरु दीक्षा प्रदान करते हैं, तो वह क्षण उसके जीवन का श्रेष्ठतम् क्षण बन जाता है, उसके जीवन की निधि बन जाता है।

दीक्षा आत्म संस्कार की क्रिया है, जिसके माध्यम से 'गुरु' शिष्य के मानव जीवन से सम्बन्धित पाप, दोष, झूठ, प्रपंच, मानसिक दोष, पूर्वजन्मकृत दोष आदि को दूर करते हैं, क्योंकि इन दोषों के कारण ही व्यक्ति को पूर्णता प्राप्त नहीं हो पाती।

यह मात्र कहने की ही बात नहीं है अपितु यह अनुभव की बात है, कि साधक जब प्रारम्भ में दीक्षा लेता है तो उसके अन्दर गुरु के प्रति श्रद्धा, उनके प्रति विश्वास, उनके प्रति समर्पण का भाव उत्पन्न होता है; लेकिन धीरे-धीरे जब वह साधना पथ पर अग्रसर होता है, तो वह अपने ही दोषों के कारण सफलता नहीं प्राप्त कर पाता और गुरु के प्रति संशय

करने लगता हैं - 'मैंने तो दीक्षा ली है, फिर भी मेरा कार्य सम्पन्न नहीं हो रहा है'?

वह यह नहीं समझ पाता है, कि जंग लगी मशीन अचानक ही कार्य नहीं करने लग जाती है अपितु पहले उसकी जंग समाप्त करनी पड़ती है, फिर वह उपयोग के लिए तैयार होती है। इसी प्रकार से दीक्षा द्वारा प्राप्त ऊर्जा उसके अवरोधों को समाप्त करने में ही क्षय हो सकती है।

प्रारम्भ में जो उदाहरण प्रस्तुत किया गया है, उसके पीछे मन्तव्य यही है, कि यदि शिष्य अपने गुरु के प्रति श्रद्धा भाव रखे, उसके प्रति समर्पण का भाव रखे, तो स्वतः ही उसको, वह सब कुछ प्राप्त हो जाता है, जिसकी वह आकौक्षा रखता है।

आज व्यक्ति दीक्षा लेता है और सोचता है कि पन्द्रह दिन या एक माह हो गया, मेरा कार्य क्यों नहीं पूर्ण हुआ?

...अगर आपने पूर्ण मनोयोग से दीक्षा ली है, तो उसका परिणाम अवश्य ही प्राप्त होगा, ऐसा हो ही नहीं सकता, कि आप कार्य सम्पन्न करें और उसका फल प्राप्त न हो, आवश्यकता है धैर्य, श्रद्धा, विश्वास और समर्पण की।

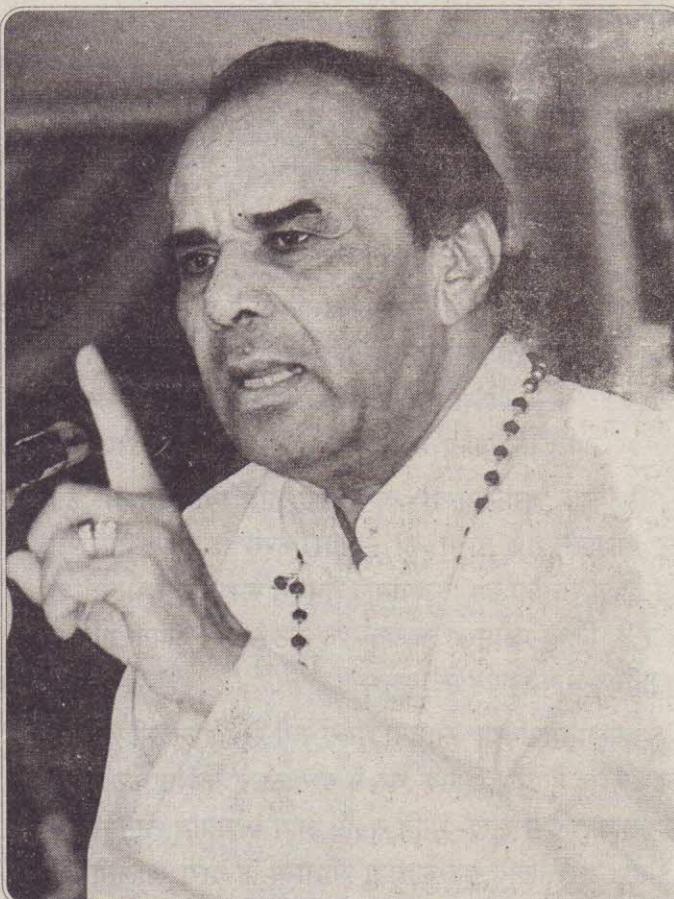
दस महाविद्याएं -

जीवन में महाविद्या साधना महत्वपूर्ण स्थान रखती है, किन्तु साधना के मूल मर्म एवं रहस्य को समझना साधक के लिए नितान्त आवश्यक है। इसमें मुख्य बात यह है, कि साधक अन्तर्मन से, करुण हृदय से और अत्यन्त विनीत भाव से महाविद्या का आह्वान करता है और साधक अपने प्रयास में सफलता प्राप्त कर युगपुरुष बनने का गौरव प्राप्त कर लेता है।

दस महाविद्याओं में - 1. महाकाली, 2. तारा, 3. षोडशी, 4. भुवनेश्वरी, 5. छिन्नमस्ता, 6. त्रिपुर भैरवी, 7. धूमावती, 8. बगलामुखी, 9. मातंगी, 10. कमला महाविद्या आती हैं।

इन दस महाविद्याओं में सर्वश्रेष्ठ महाकाली कलियुग में कल्पवृक्ष के समान शीघ्र फलदायी एवं साधक की समस्त कामनाओं की पूर्ति में सहायक हैं। जब जीवन में प्रबल पुण्योदय होता है तभी साधक ऐसी प्रबल शत्रुहन्ता, महिषासुर मर्दिनी, वाक्सिद्धि प्रदायक महाकाली साधना सम्पन्न करता है।

आर्थिक उन्नति एवं अन्य बाधाओं के निराकरण हेतु 'तारा महाविद्या' का स्थान महत्वपूर्ण है। इस साधना के सिद्ध होने पर साधक की आय के नित नये स्रोत खुलने लगते हैं और वह पूर्ण ऐश्वर्यशाली जीवन व्यतीत कर जीवन में पूर्णता प्राप्त कर लेता है।



'त्रिपुर सुन्दरी महाविद्या' का स्थान दस महाविद्याओं में सबसे मुख्य है, क्योंकि यह शांत स्वरूप और उग्र स्वरूप दोनों ही स्वरूपों की साधना है। जीवन में काम, सौभाग्य व शरीर सुख के साथ-साथ वशीकरण, सरस्वती सिद्धि, लक्ष्मी सिद्धि, आरोग्य सिद्धि की भी यही साधना है। वास्तव में त्रिपुर सुन्दरी को राजराजेश्वरी कहा गया है, क्योंकि वह अपनी कृपा से साधारण व्यक्ति को भी राजा बनाने में समर्थ है।

महाविद्याओं में 'भुवनेश्वरी महाविद्या' को आद्याशक्ति अर्थात् मूल प्रकृति कहा गया है और इसीलिए तांत्रिक ग्रंथों में स्पष्ट किया गया है, कि जिसने अपने जीवन में भगवती भुवनेश्वरी महाविद्या सिद्धि नहीं की, वह साधक नहीं हो सकता है।

'छिन्नमस्ता महाविद्या' साधना जहां जीवन में पूर्णता देने में समर्थ है, वहीं साधक के लिए वायुगमन प्रक्रिया की श्रेष्ठतम साधना है। इस प्रकार की साधना के लिए दृढ़ संकल्प शक्ति की आवश्यकता होती है और जो साधक जीवन में निश्चय कर लेते हैं कि उन्हें साधनाओं में सफलता प्राप्त करनी ही है, वे इस तरह की विशिष्ट साधनाएं गुरु-मार्ग निर्देशन में सम्पन्न करते ही हैं।

शत्रु संहार एवं तीव्र तंत्र बाधा निवारण के लिए 'भगवती त्रिपुर भैरवी महाविद्या' साधना अत्यन्त महत्वपूर्ण मानी गई है। इस साधना की मुख्य विशेषता यह भी है, कि व्यक्ति के सौन्दर्य में निखार आने लगता है और वह अत्यधिक सुन्दर दिखने लगता है।

जो साधक अपने जीवन में निश्चिन्त एवं निर्भीक रहना चाहते हैं और जीवन में निरन्तर उन्नति प्राप्त करना चाहते हैं, 'भगवती धूमावती' साधना प्रत्येक साधना को सम्पन्न करनी चाहिए। इस महाविद्या के सिद्ध होने पर साधक की ख्याति दूर-दूर तक फैल जाती है।

महाविद्या 'बगलामुखी' का दूसरा नाम 'वल्गामुखी' है। यह साधना शत्रु बाधा को समाप्त करने के लिए अत्यन्त महत्वपूर्ण साधना है। 'रुद्रयामल तंत्र' में स्पष्ट रूप से बताया गया है, कि बगलामुखी साधना की पीठ पद्धति अपने आप में सर्वाधिक महत्वपूर्ण और दुर्लभ है।

'कमला महाविद्या' साधना मुख्य रूप से महालक्ष्मी साधना का आधार है और जिनके घर में द्रिद्रिता ने कब्जा कर लिया हो अथवा घर में सुख-शांति न हो, आय के पर्याप्त स्रोत न बन रहे हों, उनके लिये यह साधना सौभाग्य के द्वारा खोलती है।

इसी प्रकार 'भगवती मातंगी' साधना सम्पन्न करने से साधक जीवन के सभी आयामों को स्पर्श करते हुए संसार में अद्वितीय महापुरुष बनने का गौरव प्राप्त करता है।

इस प्रकार साधनात्मक ऊचाई प्राप्त करने में अनेकों बाधाएं उत्पन्न होती हैं। कभी आर्थिक विषमता, तो कभी सांसारिक बंधन व पग-पग पर अन्य कठिनाइयां आती ही हैं। किन्तु मनुष्य तो वह होता है, जो छलांग लगाकर इनको पार करता हुआ, तीर की तरह अपने लक्ष्य की ओर निरन्तर बढ़ता रहता है। ये बाधाएं तो आएंगी और आती रहेंगी, आपके पूर्व जीवन में भी आती रही हैं, मगर एक सामान्य स्तर पर इन बाधाओं से जूझ करके जीवन बरबाद कर देना जीवन नहीं कहलाता है। जीवन तो वह कहलाता है, जहां लक्ष्य हो कि जीवन की उस ऊचाई पर पहुंचे, जहां हम अपने आप को गौरवान्वित अनुभव कर सकें।

गुरु प्रकाश बस नहाविद्या दीक्षा

जीवन में गुरु का आगमन व्यक्ति के लिए अत्यन्त सौभाग्य का सूचक होता है और जब गुरु दीक्षा प्रदान करते हैं, तो वह क्षण उसके जीवन में श्रेष्ठतम् क्षण बन जाता है, उसके जीवन की निधि बन जाता है।

तंत्र की आधारभूत दसों महाविद्याओं से सम्बन्धित दीक्षा यदि गुरु कृपा से किसी को प्राप्त हो जाए, तो व्यक्ति के कई-कई जन्म संवर जाते हैं। महाविद्या दीक्षाएं प्राप्त कर यदि साधक श्रद्धा से साधना सम्पन्न करता है, तो असफलता सम्भव ही नहीं होती।

दीक्षा आज के भौतिकता के युग में अमृत के समान है, जिसे व्यक्ति यदि पूर्ण श्रद्धा, विश्वास और समर्पण के साथ ग्रहण करता है, तो यह सम्भव ही नहीं है, कि लक्ष्य की प्राप्ति न हो।

दीक्षा जीवन का सबसे बड़ा वरदान है। सम्पूर्ण जीवन में समस्त प्रकार से पूर्णत्व के सम्पूर्ण विधान से युक्त है, गुरु द्वारा शिष्य को दिया गया उपहार है, जीवन को गतिशील करने के लिए ठोस नींव का निर्माण है।

सदगुरुदेव निखिल की कृपा से यह महान् दीक्षा आपको अवश्य प्राप्त होगी। आपको वर्ष के प्रारम्भ में 5-6 जनवरी 2008 को गुरु शक्तिपीठ आरोग्य धाम में उपस्थित होना है और सिद्धाश्रम साधक परिवार के कर्मठ सदस्य के रूप में अपने कर्तव्य का निर्वाह करते हुए सेवा भावना से यह दीक्षा प्राप्त करनी है।

इस नववर्ष के प्रारम्भ में ऐसी ही महान् क्रिया आपके जीवन में सम्पन्न हो सकें इसके लिए आवश्यकता है गुरु के प्रति पूर्ण सत्य निष्ठा, श्रद्धा और विश्वास से दिनांक 5-6 जनवरी 2008 को आरोग्य धाम दिल्ली में आप आयें और आपको 'शक्तिपात युक्त दस महाविद्या दीक्षा एवं साधना शिविर' में सम्मिलित होना है। इस हेतु आपको संलग्न प्रपत्र भर कर भेजना है। आपका हृदय से स्वागत है।

॥ किञ्च्छाश्रम क्षाध्यक परिवाक ते वृद्धि हेतु
आपको ऐवल इतना अक्वना है फि आप
पांच नये क्षदक्ष्य अवश्य अनायें और
उनके नाम पते क्षहित पीछे छपा फॉर्म
भ्रक अक्र भ्रेंज दें। पत्रिका नियमानुक्षयाक
पांच क्षदक्ष्यों अंति क्षदक्ष्यता शुल्क एवं
उन्हें वर्षभ्रक पत्रिका भ्रेजने था
न्यौष्ठानिक १२०० क्रपये आता है। इतना
त्याग तो आपको अक्वना ही है। तभी
जीवन में एक नया अद्याय आपने हाथ
के लिख करेंगे।

शक्तिपात्र युक्त दस महाविद्या दीक्षा एवं साधना शिविर

पांच मित्रों के नाम :-

1. नाम
पूरापता
2. नाम
पूरापता
3. नाम
पूरापता
4. नाम
पूरापता
5. नाम
पूरापता

उस यशस्वी साधक का नाम जिसने पांच सदस्य बनाकर दीक्षा में भाग लेने की पात्रता प्राप्त की है।

- नाम
पूरापता

विशेष - जो साधक पत्रिका के पांच नए सदस्य (जो आपके परिवार जन न हों) बनाएगा, उसे ही यह शक्तिपात्र युक्त दस महाविद्या दीक्षा उपहार स्वरूप निःशुल्क प्रदान की जाएगी। पांच मित्रों के पूर्ण प्रामाणिक पते, जिन्हें आप पत्रिका सदस्य बनाना चाहते हैं, इस प्रपत्र में लिखकर जोधपुर के पते पर भेज दें।

प्रपत्र के साथ रुपये 1200/- ($(195+45)=240*5=1200$) का बैंक ड्रापट या मनीऑर्डर की रसीद प्रपत्र के साथ भेज दें, जिससे कि आपका स्थान इस महत्वपूर्ण समारोह हेतु आरक्षित किया जा सके।

सम्पर्क: सिद्धाश्रम, 306, कोहाट एन्कलेव, पीतमपुरा, नई दिल्ली-14,

फोन: 011-27352248, टेली फैक्स: 27356700

जहां शिव हैं वहाँ अभय हैं, अमृत्यु हैं

शिव महिमा में योगीश्वर ऋष्टष्ठ ख्यात

अमोघ सदाशिव कवच

जो शिव भक्त को सुरक्षा चक्र प्रदान करता है

विश्व में कई ऐसे मंत्र, यंत्र स्तोत्र एवं कवच हैं, जो गोपनीय तथा दुर्लभ हैं। ‘अमोघ सदाशिव कवच’ भी ऐसा ही दुर्लभ कवच है, जो कलियुग में तुरन्त फलदायक है। वे साधक भाग्यशाली कहलाते हैं, जिनके पास ऐसा कवच है और वह तो निश्चय ही ‘शिववत्’ है जो नित्य इस कवच का पाठ करता है।

भगवान शंकर देवताओं में सर्वश्रेष्ठ; मृत्यु और परेशानियों, बाधाओं तथा कष्टों का निवारण करने वाले हैं। अमोघ कवच के बारे में यह प्रचलित है, कि गुरु अपनी मृत्यु के समय केवल मात्र अपने प्रिय उत्तराधिकारी को ही यह शिव कवच बताते थे, क्योंकि यह कवच समस्त प्रकार की बाधाओं को पूर्णतः दूर करने में सहायक है।

सबसे बड़ी बात यह है, कि यह कवच स्वयं ही मंत्र सिद्ध है और इस कवच को सिद्ध करने की जरूरत नहीं है। जिसके घर में इस कवच का पाठ होता है, उसके घर में भूत-प्रेत, बीमारी और मृत्यु भय आदि की संभावनाएं नहीं रहतीं।

कवच का तात्पर्य रक्षा है, इसे पढ़ने या इसके जप से मनुष्य विपत्ति से छूट जाता है और वह समस्त संकटों से मुक्त होकर अभय प्राप्त कर लेता है।

यद्यपि संस्कृत साहित्य में सैकड़ों कवच प्रचलित हैं परन्तु जैसे भयानक रोग से मुक्त हो गया है, यह इस कवच की कृपा अमोघ सदा शिव कवच कठिन ही नहीं अपितु दुर्लभ भी है। और प्रभाव नहीं तो और क्या है?

मुझे यह कवच ब्रह्मर्षि स्वरूप ‘स्वामी बोधन्नय जी’ से प्राप्त हुआ था। उनके अनुसार यह पवित्र कवच सभी प्रकार के पापों को दूर करने वाला और सभी विपत्तियों से पीछा छुड़ाने वाला है। यह पूर्व जीवन के तथा इस जीवन के पापों से मुक्त करता है, इसके प्रभाव से अकाल मृत्यु नहीं होती और घर में किसी प्रकार की बीमारी और कष्ट नहीं व्याप्त होता।

मैंने स्वयं इस कवच का कई जगह प्रयोग किया है, और देखा है, कि इसका प्रभाव तुरन्त और अचूक होता है। व्यापारी तथा नौकरीपेश गृहस्थ एवं योगी; सभी के लिए यह समान रूप से उपयोगी है। मेरे एक शिष्य प्रकाश भाई ने भी इस कवच के पन्ने छपवाकर साल भर तक वितरित किये थे,

क्योंकि उनके एक मात्र पुत्र को कैंसर हो गया था और सभी डॉक्टर्स ने पूरी तहर से हाथ झटक दिये थे, तब मैंने उसको निरन्तर इस कवच का पाठ करने को कहा था। जब डॉक्टर्स ने कहा था, कि यह बालक ज्यादा से ज्यादा 24 घंटे मुश्किल से निकाल सकता है, तब उन सज्जन ने बालक की खाट के

पास बैठकर निरन्तर इस कवच का पाठ प्रारम्भ कर दिया था और दूसरे दिन से ही बालक स्वस्थ होने लगा था।

आज वही बालक धनबाद में व्यापार करता है। वह कैंसर

अमोघ सदाशिव कवच के बारे में जानकारी -

यह सहस्राक्षर मंत्र है, जो संसार भर के मंत्र साहित्य में अपनी तुलना नहीं रखता, परस्पर शब्दों का संयोजन इस प्रकार से है, कि इससे एक विशेष प्रभाव बनता है, जिसे यह तुरन्त ही अचूक लाभ देने में समर्थ हो पाता है।

साधक को या गृहस्थ को नित्य पाठ करना चाहिये। यदि पूजा स्थान में शंकर का चित्र हो, तो ज्यादा उचित है। शुद्ध स्थान में नियम पूर्वक आसन लगाकर साधक को पूर्ण श्रद्धा के साथ इस कवच का पाठ करना चाहिए। इसकी भाषा ऐसी ओजस्वी, गौरवशाली, भावपूर्ण उत्कृष्ट एवं चमत्कारी है कि, आप पढ़ते-पढ़ते तल्लीन हो जायेंगे, इसके प्रवाह में आप बहते चले जायेंगे, इसका प्रभाव जादू के समान होता है।

ऋषि - इस मंत्र के ऋषि योगेश्वर ऋषभ हैं।

छन्द - इसका छन्द अनुष्ठुप है।

देवता - इस मंत्र के देवता स्वयं सदाशिव रुद्र हैं।

बीज - इस मंत्र का बीज 'हं' है, बीज उसे कहते हैं, जिससे स्तोत्र का उदय होता है।

शक्ति - इसकी शक्ति 'हीं' है, शक्ति वह कही जाती है जो साधक को निर्दिष्ट ध्येय तक पहुंचाने के लिए साधक के अन्दर बल का संचार करती है।

कीलक - इसका कीलक 'हुं' है, कीलक वह है जो इस शक्ति को निर्दिष्ट ध्येय तक पहुंचाने में सुदृढ़ रखता है।

प्रयोजन - इस मंत्र का प्रयोजन सदाशिव को प्रसन्न करना है।

दिग्बन्ध - इसका दिग्बन्ध 'उँ भूर्भुर् स्वः' है। दिग्बन्ध का तात्पर्य चारों दिशाओं को बांधना होता है, जिससे कि शरीर सुरक्षित रहे, और मंत्र जप में शरीर पर कोई विपरीत प्रभाव न पड़े।

★ ★ ★ ★ ★ ★ ★ ★ ★ ★

सहस्राक्षर अमोघ कवच

ॐ नमो भगवते सदाशिवाय सकलतत्त्वात्मकाय सर्वमन्त्रस्वरूपाय सर्वयन्त्राधिष्ठिताय सर्वतन्त्र स्वरूपाय सर्वतत्त्वविद्यरूपाय ब्रह्मास्त्रावतारिणे नीलकण्ठाय पार्वती मनोहर प्रियाय सोमसूर्यजिन्लोचनाय भस्माद्भूलितविग्रहाय महामणिमुकुटधारणाय माणिक्यभूषणाय सृष्टिस्थिति प्रलयकालरौद्रावताराय दक्षाध्वर ध्वंसकाय महाकाल भेदनाय मूलाधारैकतिलकाय तत्त्वातीताय गङ्गाधराय सर्वदेवाधिदेवाय षडाश्रयाय वेदान्तसाराय त्रिवर्गसारथनायानेक कोटि ब्रह्माण्डनायकायानन्तवासु कि तक्षक-कोटकशंखकुलिकपद्म महापदमेत्यष्टनागकुल भूषणाय प्रणवस्वरूपाय चिदाकाशायाका शदिस्वरूपाय ग्रहनक्षत्रमालिने सकलाय कलंकरहिताय सकलत्वोकैककर्त्रे सकलत्वोकैकसाक्षिणे सकलत्विमग्न्हाय सकलत्वेदान्तपारगाय सकलत्वोकैकवद्यदाय सकलत्वोकैकशंकराय शशांकशेखराय शाश्वतनिजाभासाय निराभासाय निरामयाय निर्मलाय निलोभाय निर्मोहाय निर्मदाय निश्चिन्ताय निरंकाराय निराकुलाय निष्कलंकाय निर्जुणाय निष्कामाय निस्पलायाय निरवद्याय निरन्तराय निष्कारणाय निरातंकाय निष्प्रपञ्चाय निः संगाय निर्द्रन्द्वाय निराधाराय निरोगाय निष्क्रोधाय निर्गमाय निष्पापाय निर्भयाय निर्विकल्पाय निर्भेदाय निष्क्रियाय निस्तुलाय निःसंशयाय निरंजनाय निस्तप्तमविभवाव नित्यशुद्धबुद्धपरिपूर्ण सच्चिदानन्दाद्वयाय परमशन्त प्रकाश तेजोरूपाय तेजोमयाय जय जय रुद्र महारौद्र भद्रावतार महाभैरव काल भैरव कल्पन्तभैरव कपालमालाधर खट्वांगखड्ग चर्मपाशंकुशडमस्तकर त्रिशूलचापबाण जदा शक्ति भिन्दपालतोमर मुसलमुद्गर पाशपरिघभुशुण्डीशतैर्नी चक्राद्यायुध भीषण कर सहस्रमुख दंष्ट्राकरालवदन विकटाङ्गहस्विस्फारित ब्रह्माण्ड मण्डल नागेन्द्र कुण्डल नागेन्द्रहार नागेन्द्रवलय नागेन्द्रचर्मधर मृत्युञ्जय त्र्यम्बक त्रिपुरान्तक विश्व रूप विरुपाक्ष विश्वेश्वर वृषभवाहन विश्वतोमुख सर्वतो रक्ष रक्ष मां ज्वल ज्वल महामृत्युभव्यं नाशय नाशय चोर भयमुत्सादयोत्पादय विश्व सर्प भयं शमय शमय चौरान्मासय मासय मम शत्रूनुच्चाटयोच्चाटय त्रिशूलेन विदारय विदारय कुठारेण भिन्निथि भिन्निथि खड़गेन छिन्निथि छिन्निथि खट्वांगेन विपोथय विपोथय मूसलेन निष्पेषय निष्पेषय बाणैः सन्ताडय सन्ताडय रक्षासि भीषय भीषयाशेषभूतानि विदावय विदावय कूम्भाण्ड वेताल मारी ब्रह्मारक्षस गणान् संत्रासय संत्रासय मामभयं कुरु कुरु वित्रस्तमामा श्वासयाश्वासय नरकभयान्मा मुद्धरोद्धर सञ्जीसय सञ्जीवय क्षुतृभ्यां मामप्याययाप्याय दुःखातुरं मामनन्दयानन्दय शिवकवचेन मामाच्छादय मृत्युञ्जय त्र्यम्बक सदाशिव नप्त्वे नप्त्वे।

संकल तत्वमय क्षदाशिव भगवान शंखक जो मंत्र क्षब्दकृप, यंत्र के अधिष्ठात्री देव ऋषितं म स्वरूप, ऋषितं युक्त छहा, कद्रमय नीलकंठ भैरव कृप, अपाल खण्डप्र माला धारण बाले, नेत्रों बाले, भक्ति के लिपि खिण्हन बाले महामणि मुकुट पहने हुए माणिक्य भूषण के सुशोभित कृष्टि, क्षिथिति, प्रलयाल ए के समय, कद्र अवतार क्षब्दकृप दक्ष ए यज्ञ ए विद्यं ए एकने बाले, महाआल ए के समाप्त एकने बाले मूलाधार क्षब्दकृप, पंचतत्वों के परे, गंगा ए के क्षिक पर धारण खिये हुए, ऋषिदेव क्षब्दकृप षट् ऐश्वर्य युक्त वेदांत, वेद, धर्म, अर्थ आम ए के साधना के प्रदान एकने बाले अनेक ओटि छहाण्ड नामण, अनन्त, पद्म, महापद्म इन अष्ट नाग फुल के भूषण क्षब्दकृप, अँखाक क्षब्दकृप चिद् आकाशमय ग्रह नक्षत्रों के सुशोभित समक्ष एलंकारों के कहित, समक्ष लोकों ए निर्माण एकने बाले, समक्ष लोकों के जाक्षीभूत, संकल शास्त्रों में गुह्य कृप, समक्ष वेदांत के छाका जानने योरय, समक्ष जीवों ए वक प्रदान एकने बाले समक्ष लोकों ए एल्याण एकने बाले, वनद्रमा ए के क्षिक में सुशोभित खिये हुए अपने नित्य क्षब्दकृप में विवाजमान प्रकाशमय माया कहित, निर्मल, लाभकहित, मोह कहित, मद्वकहित, निश्चित निर्वृण और किष्काम, उपद्रव कहित, कीमा कहित, शाश्वत क्षब्दकृप, आम कहित, आतंकहित, प्रपञ्च कहित, बंधन कहित, छन्द कहित, आधार कहित, वोग कहित, छोथ कहित, शांत क्षब्दकृप, पाप कहित, भ्रमक कहित, दोष कहित, भ्रेद कहित, छिया कहित, उपमा कहित, अंशय कहित, वाग कहित, अनन्त ऐश्वर्य युक्त, नित्य शुद्ध, ओथ क्षब्दकृप, क्षचिदानंदमय, छन्द कहित, परमशांत क्षब्दकृप, तेजोकृप तेज युक्त है।

हे भगवान शंखक, हे कद्र महाकद्र एल्याण मंत्र क्षब्दकृप, यंत्र के अवतार, महाभैरव, आल भैरव, एल्यांत क्षब्दकृप, पार्वती प्रिय, चंद्र, भूर्य, अरिन कृप खण्डग, तलवार, चर्मपाश, अंकुश और डमक हाथ में धारण खिये हुए तथा त्रिशूल, धनुष आण, गदा छुवी, भिंदंपाल, तोमर, मुद्गर, पाश, पविद्या, भुशुंडी, हुंकार, तोप, चक्र आदि शास्त्र धारण एकने के भंयणह बाले एहक्षत्र मुख, तीक्ष्ण कांतों के एकण भयानक मुख बाले अपने खिण्ट अद्दहास के समक्ष छहाण्ड में ठथल-पुथल एकने बाले, नागों के फुण्डल पहने हुए, नागों के हाक पहने हुए, नागों के एड़े पहने हुए, हक्षित चर्म के सुशोभित, मृत्यु ए जीतने बाले, तीन आंखों बाले, त्रिपुकासुक ए मावने बाले, विश्व क्षब्दकृप विश्व के क्षयामी, छैल ए की जयाकी युक्त समक्ष दिशाओं के मुख बाले, हे भगवान शंखक! आपकी जय हो, जय हो, समक्ष दिशाओं में मेरी कक्षा एकें।

हे शंखक मेरी जष आधाओं ए जला डालें, आल मृत्यु के भय ए नाश एकें, चोक भय ए दूक एकें, कर्ष-विष ए शांत एकें, मेरे शत्रुओं ए डचाटन एकें, ठन्हें शूल के खिदीर एकें, भ्राले के भ्रेद दें, खण्डग के छिङ्ग भिङ्ग एकें, आणों के ताड़न एकें, काक्षकां ए ठका दें, समक्ष भूतों ए दूक भगायें, फुर्मांड, वैताल, माकी तथा छहा काक्षकां ए दूक एकें, मुझे अभय प्रदान एकें, घणवाये हुए मुझ आधार ए आश्वासन दीजिये, नवण भय के मेरा ठखाक एकें, कंजीवनी प्रदान एकें, भ्रूख प्यास के मुझे दूक वर्खें, मुझ दुःख पीड़ित ए आनन्द प्रदान एकें, और शिव एवं ज्ञेय मेरी सुकक्षा एकें।

हे मृत्युंजय त्रयम्बक क्षदाशिव! मेरा पुनः पुनः नमन क्षीणाक एकें।

वस्तुतः इस कवच की जितनी प्रशंसा की जाय, योड़ी है। यदि आप पर किसी भी प्रकार का संकट आया हो या आप स्वयं अत्यधिक मानसिक परेशानी में हों, केवल एक बार इसका पाठ करके देखिये, आप अनुभव करने लगेंगे, कि वास्तव में यह कवच सर्वश्रेष्ठ और शिव के कवचों में अजेय है।

सौन्दर्योत्तमा दिव्य मुद्रिका

यदि जीवन में सौन्दर्य न हो, हास्य न हो, उमंग, आह्लाद, प्रसङ्गता न हो, तो जीवन बोझिल, नीरस और शुष्क हो जाएगा। ऐसे जीवन को दिन-प्रतिदिन गिन करके ही काटा जा सकता है, जिया नहीं जा सकता। यदि आपके जीवन में सौन्दर्य का समावेश हो जाए, जो सौभाग्यदायक हो, लक्ष्मी प्रदायक हो और जीवन में पूर्णता, यौवन, स्वास्थ्य एवं उच्छ्रित प्रदान करने में सहायक हो, तो क्या आप उसे स्वीकार नहीं करेंगे? और आप इसे प्राप्त कर सकते हैं इस दिव्य मुद्रिका के स्वप्न में, जिसे आपको पूजन-स्थान में स्वेच्छा है 'सवा महीने'; और फिर इसकी तेजस्विता को प्राप्त करने के पश्चात् दान में दे देना है।

साधना विधान: किसी श्री शुक्ल पक्ष के शुक्रवार अथवा चतुर्दशी के दिन साधक घुलाबी वस्त्र धारण कर, लाल रंग के वस्त्र पर कुंकुम से क्रीं लिख कर, उस पर सौन्दर्योत्तमा दिव्य मुद्रिका स्थापित करें। मुद्रिका का पूजन केसर, अक्षत एवं पुष्प से करें। इसके पश्चात् साधक किसी श्री माला से निम्न मंत्र की 11 माला मंत्र जप करें।

मंत्र : ॥ॐ क्रीं कृष्णाय सौन्दर्याय क्रीं उ॒ नमः ॥

मंत्र जप समाप्त होने पर यंत्र को पूरे शरीर से स्पर्श करा लें। पांच दिन तक नित्य मंत्र जप कर इस मुद्रिका की तेजस्विता प्राप्त करें। सवा माह पश्चात् इसे दान कर दें।

जीवन का सर्वश्रेष्ठदान - 'ज्ञानदान'

ज्ञान दान को जीवन का सर्वश्रेष्ठ दान बताया गया है। 20 पूर्व प्रकाशित पत्रिकाएं प्राप्त कर मंदिरों में, अस्पतालों में, समारोहों में, मंगल कार्यों में, अपने मित्रों को, धर्मिक परिवारों को दान कर सकते हैं और इस प्रकार उनके जीवन को भी इस श्रेष्ठ ज्ञान के प्रकाश से आलोकित कर सकते हैं, जो अभी तक इससे वंचित हैं। इस क्रिया के माध्यम से अनेक मनुष्यों को साधनात्मक ज्ञान की शीतलता प्राप्त होगी और उनका जीवन एक श्रेष्ठ पथ पर अग्रसर हो सकेगा।

क्या करें आप?

आप केवल एक पत्र (संलग्न पोस्टकार्ड क्रमांक 3) भेज दें, कि "मैं यह अद्वितीय उपहार प्राप्त करना चाहता हूं एवं 20 पूर्व पत्रिकाएं मंगाना चाहता हूं। आप निःशुल्क मंत्र सिद्ध प्राण प्रतिष्ठित 'सौन्दर्योत्तमा दिव्य मुद्रिका' 390/- (20 पूर्व प्रकाशित पत्रिकाओं का शुल्क 300/- + डाक व्यय 90/-) को वी. पी. पी. से भिजवा दें, वी. पी. पी. आने पर मैं पोस्टमैन को धन राशि देकर छुड़ा लूंगा। वी. पी. पी. छूटने के बाद मुझे 20 पत्रिकाएं रजिस्टर्ड डाक द्वारा भेज दें", आपका पत्र आने पर हम 300/- + डाक व्यय 90/- = 390/- की वी. पी. पी. से मंत्र सिद्ध प्राण प्रतिष्ठित 'सौन्दर्योत्तमा दिव्य मुद्रिका' भिजवा देंगे, जिससे कि आपको यह दुर्लभ उपहार सुरक्षित रूप से प्राप्त हो सके।

-: सम्पर्क :-

अपना पत्र जोधपुर के पते पर भेजें।

मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान, डॉ. श्रीमाली मार्ग, हाईकोर्ट कॉलोनी, जोधपुर - 342001, (राजस्थान)

फोन - 0291 - 2432209, 2433623 टेलीफैक्स - 0291 - 2432010

गुरुद्वारा जोधपुर

जिस भूमि पर सैकड़ों प्रयोग और असंख्य दीक्षाएं
सम्पन्न हो चुकी हैं, उस सिद्ध चैतन्य दिव्य भूमि

पर ये विव्य साधनात्मक प्रयोग

समस्त साधकों एवं शिष्यों के लिए यह योजना प्रारंभ हुई है। इसके अन्तर्गत विशेष दिवसों पर जोधपुर 'सिद्धाश्रम' में पूज्य गुरुदेव के निर्देशन में ये साधनाएं पूर्ण विधि-विधान के साथ सम्पन्न कराई जाती हैं जो कि उस दिन शाम 6 से 8 बजे के बीच सम्पन्न होती हैं। यदि श्रद्धा व विश्वास हो, तो उसी दिन से साधनाओं में सिद्धि का अनुभव भी होने लगता है।

शुक्रवार, 14-12-07

बगलामुखी महाविद्या प्रयोग बगलामुखी साधना का शास्त्रों में ही नहीं इतिहास के पृष्ठों में भी वर्णन मिलता है। चन्द्रगुप्त विक्रमादित्य, समुद्रगुप्त, राज राजेन्द्र चौल ने अनेकों बार शत्रुओं पर अद्वितीय सफलता इसी साधना के माध्यम से पाई थी। जीवन में शांति सहज नहीं है, अनायास ही कई शत्रु उत्पन्न हो जाते हैं, जो जीवन में असन्तुलन पैदा कर देते हैं। शत्रुओं के ऐसे सभी प्रयास असफल हो सकें, शत्रु निस्तेज हो सकें, इसके लिए बगलामुखी साधना का सदा से प्रचलन रहा है। शत्रु कोई व्यक्ति नहीं, जीवन की कोई विकट स्थिति भी हो सकती है, जो आपके लिये शत्रु से कम नहीं है, जैसे - मुकदमे में सन्दिग्धता, अधिकारियों से अनबन, लोगों के उलाहने, समाज के कटाक्ष और कई आत्मगत न्यूनताएं। इन सबके ऊपर विजय भी बगलामुखी साधना से सम्भव है, और इस महाविद्या साधना का प्राप्त होना ही अपने आप में सौभाग्य है।

शनिवार, 15-12-07

यौवन मंजरी अप्सरा प्राप्ति प्रयोग

किसी भी सौन्दर्य साधना को सम्पन्न करने का रहस्य छिपा होता है स्वयं सौन्दर्यवान बन जाने में; और स्वयं सौन्दर्यवान बनने का रहस्य छिपा होता है अप्सरा साधना में। मुख्य रूप से यह जीवन में यौवन के बसन्त को स्थापित करने की साधना है। अप्सरा वर्ग की यौवन मंजरी अप्सरा रूप, रंग, रस एवं सम्मोहन से परिपूर्ण होकर पूर्ण श्रृंगार से अपने साधक के जीवन में माधुर्य घोल देती है। सौन्दर्य के अर्थ को तब तक समझा ही नहीं जा सकता जब तक साधक यौवन मंजरी साधना सम्पन्न न कर ले। इस साधना से धन की कोई कमी नहीं रहती।

यौवन मंजरी साधना में सफलता प्राप्त करना केवल एक अप्रतिम सौन्दर्य का साक्षीभूत बनना ही नहीं वरन् प्रकारान्तरतः सौभाग्य का साक्षीभूत बनना, सौभाग्य का सहयोगी बनना भी होता है।

रविवार, 16-12-07

महाषोडशी प्रयोग

सौभाग्य के क्षण होते हैं उनके, जो अपने गुरु के समक्ष उपस्थित होने का अवसर प्राप्त कर लेते हैं, और बिल्ले होते हैं वे शिष्य, जो गुरुदेव से महाविद्या साधनाएं प्राप्त कर सकें। भगवती महालक्ष्मी के ही सर्वोत्कृष्ट रूप महाषोडशी की साधना प्राप्त होना जीवन की श्रेष्ठतम उपलब्धि है। निरन्तर धन प्राप्ति अथवा पूर्ण रूपेण कायाकल्प या फिर सम्मोहनकारी गुणों की प्राप्ति - ये तो कुछ एक पक्ष हैं इस साधना के, पूर्ण रूप में तो महाषोडशी का साधना क्रम करना, भगवान श्रीकृष्ण की भांति शोडशकला युक्त होना है और यही सम्पन्न होगा इस दिवस के प्रयोग में।

इन तीनों दिवसों पर साधना में भाग लेने वाले साधकों के लिए निम्न नियम मान्य होंगे

1. आप अपने किन्हीं दो मित्रों अथवा स्वजनों को (जो पत्रिका के सदस्य नहीं हैं) मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान पत्रिका का वार्षिक सदस्य बनाकर जोधपुर, गुरुधाम में सम्पन्न होने वाले किसी एक प्रयोग में भाग ले सकते हैं। पत्रिका की एक सदस्यता का वार्षिक शुल्क रुपये 240/- है, जबकि आपको दो सदस्यों का शुल्क मात्र रुपये 460/- ही जमा करवाना है। प्रयोग से सम्बन्धित विशेष मंत्रसिद्ध, प्राण-प्रतिष्ठित सामग्री (यंत्र गुटिका, आदि) आपको निःशुल्क प्रदान की जाएगी।

2. यदि आप पत्रिका-सदस्य नहीं हैं, तो आप स्वयं तथा अपने किसी एक मित्र के लिए पत्रिका की वार्षिक सदस्यता प्राप्त कर उपरोक्त किसी साधना में भाग ले सकते हैं।

3. पत्रिका-सदस्य बनाकर आप किसी एक परिवार को ऋषि-परम्परा की इस पावन साधनात्मक ज्ञान-धारा से जोड़कर एक पुनीत एवं पुण्यदायी कार्य करते हैं। यदि आपके प्रयास से एक परिवार में अथवा कुछ प्राणियों में ईश्वरीय चिन्तन, साधनात्मक चिन्तन आ पाता है तो यह आपके जीवन की सफलता का ही प्रतीक है। उपरोक्त प्रयोग तो निःशुल्क हैं और गुरु-कृपा द्वारा ही वरदान स्वरूप साधक को प्राप्त होते हैं। प्रयोगों की न्यौछावर-राशि को अर्थ के तराजू में नहीं तोल सकते।

गुरुधाम में दीक्षा व साधना का महत्व

शास्त्रों में वर्णन आता है कि मंदिर में मंत्र-जप किया जाए तो अति उत्तम होता है, उससे भी अधिक पुण्यदायी होता है; यदि नदी के किनारे करें, उससे भी अधिक समुद्र तट, और उससे भी अधिक पर्वत में करें तो; और पर्वत में भी यदि हिमालय में किया जाए तो और भी कई गुना श्रेष्ठ होता है। इन सबसे भी श्रेष्ठ होता है यदि साधक गुरु-चरणों में बैठकर साधना सम्पन्न करें और यदि गुरुदेव अपने आश्रम अर्थात् गुरुधाम में ही यह साधना प्रदान करें तो इससे बड़ा सौभाग्य और कुछ होता ही नहीं।

कुछ ऐसे स्थान होते हैं, जहां दिव्य शक्तियों का वास सदैव रहता ही है। जो सद्गुरु होते हैं, वे सूक्ष्म रूप से अथवा संशरीर प्रतिपल अपने धाम में अवस्थित रहते हुए प्रत्येक गतिविधि का सूक्ष्म रूप से संचालन करते ही रहते हैं। इसलिए यदि शिष्य गुरुधाम में पहुंच कर गुरु से साधना, मंत्र एवं दीक्षा प्राप्त करता है और गुरु-चरणों का स्पर्श कर उनकी आज्ञा से साधना प्रारम्भ करता है तो उसके सौभाग्य से देवगण भी ईर्ष्या करते हैं।

तीर्थ-स्थल पुण्यप्रद हैं पर शिष्य अथवा साधक के लिए सभी तीर्थों से भी पावन तीर्थ गुरुधाम होता है। जिस धाम में सद्गुरुदेव का निवास स्थान रहा हो, ऐसे दिव्य स्थान पर गुरु-चरणों में उपस्थित होकर गुरु-मुख से मंत्र प्राप्त करने की इच्छा ही साधक में तब उपत्ति होती है जब उसके सत्कर्म जाग्रत होते हैं। इसी तथ्य को ध्यान में रखते हुए साधकों के लाभार्थ गुरुदेव की व्यस्तता के बावजूद भी जोधपुर गुरुधाम में तीन दिवसों में तीन साधनात्मक प्रयोगों की श्रृंखला निर्धारित की गई है।

योजना के बाबत इन 3 दिनों के लिये 14-15-16 दिसंबर

किन्हीं पांच व्यक्तियों को वार्षिक सदस्य बनाकर उनका सदस्यता शुल्क 240x5=Rs.1200/- जमाकरा के या उपरोक्त राशि का बैंक डाप्ट मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान के नाम से बनाकर सदस्यों के डाक पते लिखवाकर उपहार स्वरूप ये दीक्षा आप निःशुल्क प्राप्त कर सकते हैं।

यदि दीक्षा फोटो द्वारा प्राप्त करना चाहें तो निर्धारित तिथियों के पूर्व ही अपना फोटो एवं पांच सदस्यों की सदस्यता शुल्क की राशि का डाप्ट मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान के नाम से बनाकर जोधपुर कार्यालय के पते पर भेजें। आपका फोटो, पांच सदस्यों के नाम, पते एवं डाप्ट हमें उपरोक्त तिथि से पूर्व ही प्राप्त हो जाने चाहिए। पत्र विलम्ब से मिलने पर दीक्षा संभव न हो सकेगी। यदि राशि मनीऑर्डर से भेजना चाहें तो फोटो एवं मनीऑर्डर जोधपुर कार्यालय भेजें।

शक्तिपात्र युक्त दीक्षा

छिन्नमस्ता महाविद्या दीक्षा

भगवती छिन्नमस्ता के कटे सिर को देखकर यद्यपि मन में भय का

संघार अवश्य होता है, परन्तु यह अत्यन्त उच्चकोटि की महाविद्या दीक्षा है। यदि शत्रु हावी हों, बने हुए कार्य बिंगड़ जाते हों, या किसी प्रकार का आपके ऊपर कोई तंत्र प्रयोग हो तो यह दीक्षा अत्यंत प्रभावी है। दीक्षा द्वारा कारोबार से सुदृढ़ता प्राप्त होती है, आर्थिक अभाव समाप्त हो जाते हैं, साथ ही त्यक्ति के शरीर का कायाकल्प भी होना प्रारम्भ हो जाता है, उसके शरीर में एक विशेष ऊर्जा एवं रूपूर्ति का संचार हो जाता है। इस साधना द्वारा उच्चकोटि की साधनाओं का मार्ग प्रशस्त हो जाता है। उसे जीवन में उच्चता प्राप्त होने लगती है। तन-मन-धन तीनों ही रूप में इसका प्रभाव होने लगता है।

* दीक्षा आज के युग में एक प्रामाणिक उपाय है सफलता की ऊंचाईयों को प्राप्त कर लेने का, जीवन के अभाव को, अधूरेपन को दूर कर देने का, जीवन में अतुलनीय बल, साहस, पौरुष एवं शौर्य प्राप्त कर लेने का, साधना में स्थिर प्राप्त कर लेने का ...।

* गुरु-प्रदत्त शक्तिपात्र द्वारा शिष्य जिस कार्य करनु वह दीक्षा प्राप्त करता है, उसमें निपुणता प्राप्त कर लेता है क्योंकि वह सफलता और श्रेष्ठता प्राप्त करने को एक लघु उपाय है ...।

* दीक्षा में भाग लेने वाले साधकों को जल से अमृत-अभिषेक करने के उपरान्त विशेष शक्तिपात्र प्रदान किया जाएगा। यह दीक्षा इन तीनों दिवसों में सायं-उबने प्रदान की जाएगी।

Boost your finances

Any Monday of the bright fortnight

Chakreshwari Sadhana

Among the Jains the most avidly worshipped deity is Chakreshwari and not without reason. The powerful divine Goddess protects her worshippers and Sadhaks from all dangers and also ensures that there remains no paucity in their lives. Her blessings mean wealth galore and success in business ventures. And what more besides providing financial security for her worshippers she even helps them attain to amazing levels of success in the spiritual field.

According to Jain scholars if a Sadhak tries the Sadhana of Goddess Chakreshwari with full faith, determination and devotion then without doubt the Goddess is pleased and she showers all worldly and spiritual boons on him.

Specially if one is facing with failure in business or one is jobless then this Sadhana comes as a great boon. After accomplishing it within no time one attains to success in the desired field and financially speaking there remains no paucity whatsoever. However the first and foremost requirement for success in the Sadhana is unmoving faith.

This Sadhana that is being presented here is a very ancient ritual that has stood the test of time over the ages. It has been tried by hundreds of Sadhaks and has never known to have failed as yet. Even if there is some lapse on the part of the Sadhak there sure accrues some result, for the kind Goddess never overlooks even the slightest spark of devotion.

The Sadhana is of three days. It should be done early in the morning before sunrise. The best day to start it is any **Monday of the bright fortnight of the lunar calendar.**

For the Sadhana have a bath and wear fresh white clothes. Sit on a white worship mat facing the East. Cover a wooden seat with yellow cloth. Then with ver-

million write *Hreem* on it. On this inscription place the *Chakreshwari Yantra*.

Then chant one round of the Guru Mantra and pray to the Guru for success in the Sadhana. Thereafter light a ghee lamp before the Yantra. Worship the Yantra by offering vermillion, rice grains and yellow flowers on it.

Then concentrating your gaze on the Yantra contemplate on the form of the Goddess Chakreshwari chanting the following Mantra.

Shree Chakre Bheeme Lalit Var Bhuje Leelayaa Laalayantee.

Chakram Vidyutprakaasham Jwalit Shat Shikhe Vei Khagrendraadhiroodde.

Tattvei Rud Bhootbhaasaa Sakal Gunn-nidhe Mantra Roop Swakaante.

Kotyaa Dityaa Prakaashe Tribhuvan Vidite Traahi Maam Devi Chakre.

Then with a *Hakeek rosary* chant 35 rounds of the following Mantra of Goddess Chakreshwari who in the Jain Tantra is believed to be the fulfiller of all wishes.

Om Ayeim Shreem Chakre Chakra Bheeme Jwal Jwal Garud Prishti Samaaroodde Hraam Hreem Hroom Hroum Hrah Swaahaa

Do this daily for three consecutive days. After each day's chanting place the rosary on the Yantra. On the fourth day drop the Yantra and rosary in a river or pond.

Soon you shall see wonderful opportunities coming your way that could help you make it big and earn more wealth than you could have ever imagined. Even if there are some delays do not lose heart and have patience. Keep your faith unmoved and without doubt soon you shall taste success.

Sadhana Articles - 240/-

Any Monday night

Victory ensured!

Kriyamaan Vijay Sadhana

It is a strange paradox that man who considers himself supreme among all beings is nothing but a slave to the circumstances. Instead of becoming capable of transforming things in his favour he easily gives in to the various pressures and adjusts himself to situations. And thus he becomes fated to lead an ordinary life that has nothing new in it. Most of his desires remain unfulfilled and he becomes nothing more than a straw that is carried away by the strong current against its will.

But if we go through human history we shall find that only those men and women have been honoured and remembered who dared to stand up against challenges and who came out victorious even while struggling against all odds. Life means struggle and problems but the real pleasure is in overcoming the same and emerging triumphant in every ordeal that life has to offer.

No matter which field in life you choose problems are bound to emerge. These could be in the form of enemies, ailments, tough situations or obstacles in your work. Any of these could make one fill up with despair and fear leaving one incapable of making the right decisions or facing the challenges of life.

However if a person is replete with divine energy then he would never accept defeat before any person or situation. He feels so filled with confidence and will power that he sees no obstacle as insurmountable. Instead of bowing to adversities he keeps endeavouring to attain to victory over even the most dangerous ordeals. It is only then that he is able to fulfil all his wishes and attain to true joy and a sense of fulfillment in life.

Presented here is a wondrous Sadhana that could help you achieve victory in every sphere in life. It is an ancient Sadhana once gifted to Lord Ram by his Guru Vishwamitra. When Ram was unable to defeat Ravan in spite of using the most powerful weapons he prayed

to his Guru and sought guidance. Vishwamitra appeared and suggested that Lord Ram should try *Kriyamaan Vijay Sadhana* after accomplishing which a person becomes definitely victorious. Any person facing dangers, enemies, problems in life that seem insurmountable could try this Sadhana.

In the **night of a Monday** after 10 pm have a bath and wear red clothes. Sit facing South on a red mat. Cover a wooden seat with red cloth. Write down your problems on a piece of paper with red ink. First of all pray to the Guru and chant one round of Guru Mantra. Then light eleven mustard oil lamps on the wooden seat in a straight row. Before each lamp make a mound of black sesame seeds. On each mound place a Kriyamaan. Thus one needs **eleven Kriyamaans**.

On a separate mound of sesame place the *Vijay Yantra*. Offer vermillion and rice grains on the Yantra. Then start chanting the main Mantra. One has to chant 11 rounds with *Treilokya Vijay rosary*. Before each round pick up a Kriyamaan and speak out one of your problems. Keep it clutched in the left fist. Thus you can seek solution to 11 problems. The Mantra to be chanted is.

Om Ayeing Hreeng Vijayaaye Hreeng Ayeing Phat

After completion of one round touch the Kriyamaan to the Yantra and then to the respective lamp and pray for the solution to that particular problem. Place the Kriyamaan on the respective mound. Do this each time you complete one round.

After Sadhana tie all the Kriyamaans, rosary and Yantra in a red cloth and drop the bundle in a river or pond the next day. Within a few days the results shall be obvious to you. In the future if you face any problem chant the Mantra 108 times before the picture of Sadgurudev.

Sadhana Articles - 300/-

Any moonless night

Secret of eternal youth!

Amritatva Sadhana

What actually is the definition of old age? Is it physical ageing or has it more to do with psychological effect that the passing years have on the human psyche?

No doubt after forty the body starts to grow slow but how about the mind? In many cases it is the remarks of others that make one aware of the increasing age, the wrinkles and the graying hair. But this is a natural process that everyone has to go through and it is quite inevitable. But why does it have to mar one's working capacity, one's thoughts and one's power to plan and implement?

May be it is rare but one can come across people of 70 to 80 who are more active than those in the twenties. Many of our famous international politicians and business persons are good examples. Churchill it is said led Britain out of the brink of defeat to victory when at the age of 80 he took over as the Prime Minister of UK. There are hundreds of such examples.

If we observe carefully we shall find that ageing is more of a psychological process. No sooner do the hair turn gray than people start nurturing the fear of ageing. Such fear, such thoughts only tend to make one grow listless. Slowly there creeps in a lack of enthusiasm in one's actions and style of working and then true enough ageing has a toll on one's body and mind.

Overeating and too much worrying also makes one prone to early signs of ageing and if one resorts to wine and drugs then the dusk of one's life manifests rather quickly.

Today plastic surgery it is said can take care of your wrinkles. But what about the wrinkles in your mind that make your thinking befuddled and compel you to lead a mirthless, joyless existence?

And if we study our ancient texts we find that Rishis

in the ancient times used to live to thousands of years. Are these claims false? How could they remain active and youthful for so long? What was the secret of their longevity and youthfulness?

The secret was Tantra. Through Sadhanas they could keep old age at bay for years and years. Even hundred years old Yogis could remain young and active. One of such Sadhanas is Amritatva Sadhana.

This Sadhana will not make your hair black or make your wrinkles vanish. But it sure shall fill you up with an enthusiasm for life and make a unique radiance glow on your face. It shall fill you with enough energy to work twenty hours a day without tiring or feeling bored.

Try this wonderful Sadhana on a moonless night. Have a bath and wear white clothes. Cover yourself with *Guru Chaddar* (special protective shawl). Cover a wooden seat with white cloth and in a copper plate place a *Amritaashan Yantra* on it. Chant one round of Guru Mantra. Then offer vermillion, fresh white flowers and rice grains on the Yantra. Then light a ghee lamp and chant 75 rounds of the following Mantra with a *Kayakalp rosary*.

Om Shreem Amritatvam Saadhyam Shreem Om Phat

After the Sadhana for ten minutes pour water on the Yantra in the form of a thin stream all the while chanting the above Mantra. For this place the Yantra in a shallow vessel. Then chanting the Mantra further 21 times offer 21 roses on the Yantra.

After this drink some of the water and with the rest have a bath. For five days let the Sadhana articles remain in your worship place at home. After five days drop the Yantra and the rosary in a river or pond. You shall soon find a subtle transformation in yourself.

Sadhana articles - 330/-

02 दिसम्बर 2007

अष्ट महालक्ष्मी साधना शिविर, मुरादाबाद

शिविर स्थल : भारत फाउण्डेशन स्कूल, सेल्स टैक्स ऑफिस
के पास, राम गंगा विहार कॉलोनी, काठ रोड, मुरादाबाद
डा.आर.के.गुप्ता एवं श्रीमति नीरु गुप्ता - 0591-2410240
○श्रीमति कुसुमलता यादव - 094123-91288 ○योगेश पाण्डे
एवं डा. किरन पाण्डे - 094122-48254 ○मनोज विश्नोई
(एडवोकेट) - 092590-21177/092592-54856 ○अंशुल अजय
पोरवाल - 094122-35566 ○राम अवतार प्रसाद निखिल -
094123-22005/0591-2486236 ○निरंकार गुप्ता निखिल -
097197-06011 ○सिद्धाश्रम साधक परिवार, सम्भल -
099171-03055/093585-35056 ○सिद्धाश्रम साधक परिवार,
धामपुर - 094124-65454 ○सिद्धाश्रम साधक परिवार,
शाहजंहापुर - 099568-43555 ○लखीमपुर: अनिल गुप्ता,
राम जी - 093053-02530 ○प्रेम शंकर कश्यप ○राजकुमार
रस्तोगी ○विकास श्रीवास्तव ○जसपुर: विनय कुमार वर्मा
- 093583-59799 ○हरिद्वार: महिपाल सिंह - 091191-13133
○पन्तनगर: शिव सागर सिंह चौहान - 05944-233228
○सुनील रूहेला - 097589-87045 ○रुद्रपुर: शिव दयाल
- 099270-48504 ○रामपुर: बाबूलाल मीणा - 094112-65570
○बरेली: गोकर्ण सिंह - 094127-05837 ○राजेश प्रताप -
094114-23671 ○

◆ ◆ ◆ ◆ ◆ ◆ ◆ ◆ ◆ ◆ ◆ ◆ ◆ ◆
09 दिसम्बर 2007
गणपति साधना शिविर, पणे

शिविर स्थल : बाल कृष्ण मंगल कार्यालय,
डांगे चौक, थेरगात, विंचवड, पुणे
अनिल सुपेकर - 098224-12665 ○ हरिचंद्र कदम - 099226-
40064 ○ सुरचंद्र कुदळे - 098201-57161 ○ वात्सल्य सक्सेना
○ डॉ. शिल्पा भोकरे - 020-27460116/098819-68896
○ अशोक भागवत - 093734-35775 ○ रविन्द्र लुगडे -
098607-05606/093710-20581 ○ दुष्यंत नेसर्गि - 093731-
40116 ○ बालासाहेब बालवडकर - 093724-75449
○ बालासाहेब पाटिल - 098810-68206 ○ विजय सुवर्णा -
092261-65939 ○ दत्तात्रय कविस्कर - 099602-58116 ○ सुनील
गायकवाड - 098233-25950 ○ आशुतोष मालवीय - 098810-
90230 ○ रवि पाटिल - 098902-24567 ○ विनोद पंवार -
098814-70271 ○ दिपक उम्बरकर - 098814-90385 ○ संतोष
सुपेकर - 098909-82411 ○ लक्ष्मण डोंगरे - 098904-36907
○ शिवाजी देवकर - 098229-78382 ○ सरेश चव्हाण

○ बसवराज कोली - 099709-08634 ○ दिपक पंचबुद्धे -
 099603-54484 ○ कनुभाई वाला ○ बगाराम राठोड ○ सतारा:
 विलास पंवार - 02378-285476 ○ एकनाथ कदम - 02168-
 241617 ○ शिवाजी शिंगटे ○ अनिल खटवकर - 098818-
 64909 ○ नगर: प्रविण भांडे कर - 095241-2428572
 ○ औरंगाबाद: व्हि.एस.जंगले - 098900-14101 ○ सेलु:
 सुनिल राउत - 099234-50493 ○ सोलापुर: वैभव कराले -
 099230-57229 ○ जालना: मनोज गिलडा - 098230-34414 ○

23 दिसम्बर 2007

आष्ट महालक्ष्मी राधना शिविर, शिमला

शिविर स्थल : श्रीराम मन्दिर हॉल,

नजदीक बंस स्टैण्ड, शिमला (हि.प्र.)

तुलसी राम कौण्डल - 0177-2623318 ○पं. किशोरी लाल
- 094180-81520 ○भोम राज गुसा - 098163-45687 ○नरेश
कुमार - 092186-25557 ○सी.एल.कौण्डल - 094180-40507
○दुनी चन्द भारद्वाज - 094184-00059 ○गोपी राम शर्मा -
094180-30917 ○एच.आर.जसपाल - 094181-41941 ○
सरदार सुबेंग सिंह - 0177-2831025 ○कुलदीप गुलेरीया -
0177-2835735 ○अशोक शर्मा - 094181-20691 ○केवल राम
चौहान - 094180-41431 ○कुलदीप भारद्वाज - 0177-2622574
○टी.एस.चौहान - 094180-96013 ○ठयोगः श्रीमति वेदप्रभा
मेहता - 01783-237021 ○घणाहटीः सुरेन्द्र केवर -
094180-25976 ○घुमारवीः एडवोकेट ज्ञान चन्द रतन -
094180-90783 ○सोहनलाल - 094186-36951 ○मण्डीः
शैलेन्द्र शैली - 098166-11050 ○के.डी.शर्मा - 094180-
65655 ○बंशी राम ठाकुर - 01907-242544 ○कॉगड़ाः ओम
प्रकाश - 094182-50674 ○आर.ए.मिन्हास - 094181-61585
○सोलनः दिवान चन्द - 01792-240061 ○

नववर्ष ५-६ जनवरी २००८

शत्रुघ्निपात यत्क दस महाविद्या दीक्षा

५८ साधना शिविर, बिल्ली

शिविर स्थल : आरोन्यदाम, गुजरात अपार्टमेंट के पीछे,

जोन 4/5, पीतमपुरा, नई दिल्ली - 34.

फोन: 011-27352248, 27029044-45

12-13 जनवरी 2008

मकर संक्रान्ति साधना शिविर, चंद्रपूर

शिविर स्थल : कर्मवीर दादासाहेब कळमवार जिला क्रीड़ा संकुल चन्दपूर, दुरदर्शन केन्द्राजावल, सिवहील लाईन, चंदपूर आयोजक: **चंद्रपूर:** वतन कोकास - 094221-14621 ○ कांचन राठोड - 098223-18821 ○ राजेन्द्र वैद्य - 098502-70295 ○ सुभाष सिंह गौर - 094221-36388 ○ नंदु नागरकर - 094228-36067 ○ प्रविन नागरकर - 098238-63408 ○ पंकज नागरकर - 0999603-11344 ○ प्रा. वाय. बी. स्वान - 098223-09813 ○ विजय वैद्य - 093260-41487 ○ नारायण उप्पलवार - 098507-50774 ○ संजय सिंह गवालपंची - 099231-11301 ○ सुरेन्द्र तिवारी - 094221-37664 ○ आशिष दिक्षीत - 094228-91268 ○ पवन कांडलकर - 098603-31210 ○ घुघुस: वासुदेव ठाकरे - 098817-31149 ○ दिपक येन्डे - 098500-15587 ○ नरेश गिरी - 098905-46083 ○ सागर गौतम - 098815-18784 ○ दुलसिंह राठोड - 094201-18197 ○ नरसिंह अंकमवार - 094218-46549 ○ किन्हाके साहब - 098606-76217 ○ चिमुर: डॉ. सुरेश मेश्राम - 094217-20597 ○ विजय सोनेने - 099210-64220 ○ रामकृष्ण रणदिवे - 097640-28056 ○ विलास पोहीनकर - 094217-82793 ○ अनिल वाघे - 094217-20581 ○ शामराव जी कुंभारे ○ नामदेव कांमडी ○ देवराव चांदिकर ○ भास्करराव भारसाकळे ○ विकास फटींग ○ नरेन्द्र पिसे ○ राष्ट्रपाल डांगे ○ ब्रह्मपूरी: मनिष श्रीवास्तव - 098234-37768 ○ सुरेश सुर्यवंशी - 094217-25902 ○ प्रा. शंकरराव केळझारकर - 094228-39040 ○ सुरेश मिसार - 07177-272343 ○ अशोक तुडलवार - 094217-22019 ○ गुर्जीधर दुपारे सर ○ गजानन मातेरे ○ बंदुभाऊ बांगडे - 094228-39306 ○ रामकृष्ण इठावले ○ दादाजी नवलाखे ○ बल्लारपुर: प्रकाश डांगे - 094225-49476 ○ चंद्रच्या चितपटला ○ दुर्गाप्रसाद शुक्ला ○ प्रशांतराव जी विजेश्वर ○ माधवराज सोनुले ○ वरोरा: सचिन जाधव सर - 092262-41490 ○ राजुरा: डॉ. महेन्द्र अवचार - 098235-58389 ○ रामेश्वर महाजन - 07173-222235 ○ शेषराव खेखारे - 07173-223926 ○ भद्रावती: गणेश पेंदरे - 093701-84676 ○ वणी: महेश - 092261-76509 ○ योगेश झिलपे - 07239-228455 ○ प्रशांत मानगावकर - 092700-66321 ○ शितलाप्रसाद यादव ○ नर्मदा प्रसाद विश्वकर्मा ○ सुखदेव चव्हाण - 098229-47946 ○ जिवनसिंग चव्हाण - 07239-284318 ○ गडचिरोली: प्रदीप चुधरी - 094234-23849 ○ हसमुख लटके - 094221-50848

○ नरेश - 094236-68899 ○ अरविंद कोडापे ○ हर्षवर्धन - 094218-17280 ○ संजय बिडवाईक ○ संतोष भांडेकर - 093700-42859 ○ दिपक रामने सर - 094218-54572 ○ सुरेश येरोजवार - 094236-46828 ○ यवतमाळः श्रीकांत चौधरी - 099219-94731 ○ सेनापती मोने - 098508-73099 ○ अँड. रविन्द्र जाधव ○ हरिष राठोड ○ गजुभाउ सोनकुसरे - 07239-248634 ○ अरुण हांडे - 094200-42553 ○ राजेन्द्र कोंबे - 0723-2249514 ○ वरदी - 07184-285026 ○ विकास ○ नागपूरः किशोर सिंह बैस - 094233-59000 ○ मधुकर उरकुडे - 094228-08433 ○ राहुल वाघमरे - 093711-838991 ○ राजेन्द्र सेंगर - 098230-19750 ○ देवचंद पटले - 098900-76356 ○ कन्हानः भाउरावजी ठाकरे - 093728-40421 ○ सुरेश गुरुव ○ रामरावजी गुरारी ○ वर्धा: जीतेश देवतारे - 093700-76528 ○ गजुभाउ ठाकरे - 094231-19721 ○ प्रदिप पाठक - 099236-58999 ○ अविनाश बुरांडे - 094226-37059 ○ भंडारा: प्रशांत परसोडकर - 093727-62957 ○ कमलाकर साठवणे - 094236-05631 ○ देवेन्द्र कांटखाये - 098810-10402 ○ नरेन्द्र कांटेखाये - 092700-30170 ○ मनोज वालोकर - 099601-44833 ○ मुकेश मेश्राम - 07184-282645 ○ गोंदिया: चंदनलाल ठाकुर - 093255-65715 ○ डी.के.भगत ○ रविन्द्र भोंगाडे - 098229-49458 ○ के.एन. मोहाडीकर - 094228-34716 ○ आर.टी.पटले ○ कमलाकर चौरागडे - 098232-94900 ○ प्रशांत ढोये ○ संतोष गौर ○ डी.के.डोये ○ तुमसरः नविन बेलफुलवार - 094228-30697 ○ विनय तिवारी - 093259-76919 ○ तिरोडा: शुक्राचार्य ठाकरे - 094236-06893 ○ बबलु बैस - 094234-24285 ○ बैतुल: आय.डी. कुमरे - 094253-04226 ○ एस.एल.धुवे ○ बोरगांव रेमंडः दशरथ वानखडे - 093298-28169 ○ अमरावती: सतिश भिवागडे - 093701-56631 ○ अरुण भातकुलकर - 093254-14682 ○ सुबोध जयस्वाल - 098903-34451 ○ साहेबरांव बांते ○ परतवाडा: गणेश मवासे - 098225-74290 ○ राजेन्द्र राठोड ○ अकोला: ज्ञानेश्वर टापरे - 093269-10838 ○ भास्कर कापडे - 098234-30108 ○ दिनेश कोरे - 098225-60901 ○ रविन्द्र अवचार - 099211-38349 ○ गोबरवाई: बंदभाउ खोब्रागडे ○

A decorative horizontal separator located at the bottom of the page. It features two rows of diamond-shaped patterns, each row containing ten diamonds. The top row has diamonds of varying sizes, while the bottom row consists of smaller, uniform diamonds.

09-10 फरवरी 2008

शिवत्व वंसतोत्सव साधना शिविर, रायबरेली

शिविर स्थल : महात्मा गांधी इंटर कॉलेज मैदान, बस स्टैण्ड
के निकट, रायबरेली (उ.प्र.)

- ♦ गुरु गीता
- ♦ संगीत सरिता
- ♦ गुरु गंगा
- ♦ प्रातः कालीन वेद ध्वनि
- ♦ संध्या आरती
- ♦ प्रीत पायल
- ♦ बाजे कण-कण में
- ♦ गुरुनाम रस पीजे
- ♦ जब याद तुम्हारी आई
- ♦ ध्यान धारणा और समाधि
- ♦ दैनिक साधना विधि
- ♦ गुरु गति पार लगावै
- ♦ गुरु बिन ज्ञान कहां से पाऊ
- ♦ गुरु बिन गतिनास्ति
- ♦ गुरु हमारी आत्मा
- ♦ गुरु पादुका पूजन
- ♦ विशेष गुरु पूजन
- ♦ निरिवलेश्वरानन्द सत्वन
- ♦ दुर्लभोपनिषद्
- ♦ मैं गमस्थ बालक को
चेतना देता हूँ भाग 1-2
- ♦ शक्तिपात (पूर्वजन्म दर्शन)
- ♦ अमृत महोत्सव 1997 भाग 1-5
- ♦ गुरुपूर्णिमा हैदराबाद भाग 1-5
- ♦ गुरु हृदय स्थापन प्रयोग
- ♦ अक्षय पात्र साधना
- ♦ हनुमान साधना
- ♦ अमोघ साबर साधनाएं
- ♦ पुष्पदेहा अप्सरा साधना
- ♦ महाकाल प्रयोग
- ♦ महाकाली स्वरूप साधना
- ♦ कृष्णाण्डा प्रयोग

तु कहुँ पौथिन बाची, मैं कहुँ आखिनं देखी



ज्ञान रूपी गंगा, क्रिया रूपी यमुना,
वाणी रूपी सरस्वती का मेल है -
सद्गुरुकर्देव के अमृत वर्चनों में,
जो सिंचन कर देते हैं साधकों के
हृदय और मन को।

जिस वाणी में है -
ब्रह्म का ज्ञान, शिव का ओज और
विष्णु का तेज समाहित है

ऐसे अमृत प्रबन्धन सुनिये बार-बार -



नौछावर प्रति ऑडियो - सीडी 40/-

डाक खर्च अतिरिक्त



मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान, डॉ. श्रीमाली मार्ग, हाईकोर्ट,
कॉलोनी, जोधपुर (राज.)
फोन : 0291-2432209, फैक्स : 0291-2432010



COLLECTION OF VARIOUS

- > HINDUISM SCRIPTURES
- > HINDU COMICS
- > AYURVEDA
- > MAGZINES

FIND ALL AT [HTTPS://DSC.GG/DHARMA](https://dsc.gg/dharma)

Made with



By

Avinash/Shashi

[creator of
hinduism
server]

रजिस्ट्रेशन नं- 35305/81

With Registrar Newspapers of India
Posting Date 06-07 every Month

A.H.W

Postal No. RJ/WR/19/65/2006-08
Licence to post Without pre payment
Licence No. RJ/WR/PP04/2006-08

माह : दिसम्बर में दीक्षा के लिए निर्धारित विशेष दिवस

पूज्य गुरुदेव निम्न दिवसों पर साधकों से मिलेंगे
व दीक्षा प्रदान करेंगे। इच्छुक साधक निर्धारित दिवसों
पर पहुंच कर दीक्षा प्राप्त कर सकते हैं।
निर्धारित दिवसों पर यह दीक्षाएं प्रातः 11 से 1 बजे के
मध्य तथा सायं 5 बजे से 7.30 बजे के मध्य प्रदान की जाएंगी।

स्थान
गुरुधाम (जोधपुर)

दिनांक
14-15-16 दिसम्बर

वर्ष - 27

स्थान
गुरुधाम (जोधपुर)

दिनांक
28-29-30 दिसम्बर

अंक - 11

.. संपर्क ..

मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान डॉ. श्रीमालीमार्ग हाईकोर्ट कॉलोनी, जोधपुर-342001 राज. फोन : 0291-2432209, 2433623, टेलीफैक्स-0291-2432010
सिव्हाश्रम 306, कोहाट एन्कलेव पीतमपुरा, नई दिल्ली-34, फोन : 011-27352248, टेली फैक्स 11-27356700